गैर मुक़ल्लिदीन का असली चहरा

Compiler
मुफ्ती मुहम्मद फारूक़ साहब
जामिया महमूदिया, अलीपुर, हापुड़ रोड, मेरठ

Publisher:
मकतबा महमूदिया
जामिया महमूदिया, अलीपुर, हापुड़ रोड, मेरठ

किसी भी तरह की छपाई, डिज़ाईनिंग और प्रिन्टिंग के लिए संपर्क करें।
जैसे: किताबें, कैलेन्डर, पोस्टर, रसीद बुक, रजिस्टर, सनद, मोहर आदि
मुजीबुर्रहमान क़ासमी (मुस्कान प्रेस सुभाष नगर, मेरठ) 7895786325

गैर मुक़ल्लिदीन का अस्ली चेहरा

अज़
मो0 फ़ारूक़ गुफ़िरा लहू
खादिम जामिया महमूदिया अलीपुर, मेरठ

प्रकाशकः
मकतबा महमूदिया
जामिया महमूदिया, अलीपुर, हापुड़ रोड, मेरठ। 245206

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

तफ़्सीलात

नाम किताबः		**गैर मुक़ल्लिदीन का अस्ली चेहरा**
लेखक	:	**मो० फ़ारूक़** गुफिरा लहू
तादाद	:	5000
कम्पोज़िग	:	मुजीबुर्रहमान क़ासमी शोबा कम्प्यूटर जामिया हाज़ा
सन् प्रकाशन	:	1436 हि०, 2015 ई०
पेज	:	48
क़ीमत	:	

मिलने का पताः

मकतबा महमूदिया

जामिया महमूदिया, अलीपुर, हापुड़ रोड, मेरठ। 245206

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

फ़हरिस्त मज़ामीन
गैर मुक़ल्लिदीन का अस्ली चेहरा

☆ अर्ज़े मुरत्तिब.....10

मज़हबे हन्फी की मक़बूलियत और आलमगीरियत

☆ अर्ज़े मुरत्तिब.....22
☆ दौरे नुबूव्वत.....24
☆ दौरे सहाबा रजि०.....25
☆ सहाबा-ए-किराम रजि० में तक़लीदे शख्सी.....26
☆ इस्लामी ममालिक और बाक़ी मुलकों में गैर मुक़ल्लिदीन.....27
☆ फिक़हे हन्फी अक़रब इलन्नुसूस है.....29
☆ फिक़हे हन्फी की आलमगीरियत.....30
☆ तमाम शाहान-ए-हिन्द हन्फी थे।.....31
☆ हिन्दी मुसलमान हमेशा हन्फी रहे हैं।.....32
☆ इमाम अबू हनीफा रह० की मक़बूलियत व एक ख्वाब....32
☆ सुल्तान गौरी से लेकर सैय्यद अहमद शहीद तक.....33
☆ अहले कशमीर का मज़हब.....34
☆ दीगर इस्लामी ममालिक का मज़हब.....34
☆ घर की वज़नी शहादत.....35
☆ हिन्द व पाक में इस्लाम अहनाफ ही ने फैलाया.....36

☆ फित्ना-ए-अकबर और फित्ना-ए-अंग्रेज़ का मुक़ाबला अहनाफ ही ने किया.....36
☆ हन्फी सलातीन-ए-इस्लाम.....37

बाज़ जलीलुल क़द्र हन्फी अइम्मा और मुहद्दिसीन इज़ाम

☆ लतीफा-ए-इल्मिया.....43
☆ सहीह बुखारी शरीफ.....44
☆ सहीह मुस्लिम शरीफ.....45
☆ खिदमात-ए-जलीला.....46

सहीह बुख़ारी शरीफ और गैर मुक़ल्लिदीन

☆ अर्ज़े मुरत्तिब.....50
☆ गैर मुक़ल्लिदन के नज़दीक बुखारी शरीफ का मर्तबा.....53
☆ बुखारी शरीफ आग में.....53
☆ नवाब वहीदुज़्ज़माँ की इमाम बुखारी पर तन्क़ीद.....54
☆ नवाब वहीदुज़्ज़माँ की बुखारी शरीफ के एक रावी पर सख्त तन्क़ीद.....54
☆ बुखारी शरीफ हकीम फैज़ आलम की नज़र में.....55
☆ हकीम फैज़ आलम के नज़दीक इमाम बुखारी वाक़िआ इफ्क की रिवायत में मरफूउल क़लम हैं.....55
☆ बुखारी शरीफ में मौजू रिवायत.....56
☆ बुखारी शरीफ के एक मर्कज़ी रावी पर हकीम फैज़ आलम की जिरह व तन्क़ीद.....56

गैर मुक़ल्लिदीन का अहादीस-ए-सहीहा से बुग्ज़ व इनाद

☆ नमाज़ में नाफ के नीचे हाथ बांधना.....60

☆ ज़रूरी वज़ाहत.....62
☆ तर्के रफअ यदैन.....62
☆ नमाज़-ए-फजर इसफार में.....63
☆ नामज़-ए-जुहर ठण्ढे वक़्त में पढ़ना.....63
☆ कुरआने पाक बेवज़ू छूना.....64
☆ क़िब्ला रू क़ज़ाए हाजत.....64
☆ जमा बैनस सलातैन.....65
☆ कलिमात-ए-अज़ान व इक़ामत.....66
☆ जलसा-ए-इस्तिराहत.....66
☆ क़िरात फातिहा खल्फल इमाम.....68
☆ आमीन बिस्सिर.....70
☆ जुमा की अज़ान-ए-अव्वल.....71
☆ बीस रकआत तरावीह.....72
☆ एक मजलिस की तीन तलाक़.....76
☆ इजमाअ.....78
☆ सऊदी अरब के अकाबिर उलामा का फैसला.....80
☆ बेजा जसारत.....81
☆ दो हाथ से मुसाफहा.....82

इमाम-ए-आज़म अबू हनीफा की शान में गुस्ताखी का वबाल

☆ अर्ज़े मुरत्तिब.....86
☆ अहले हदीस मुतशद्दिद होते हैं.....89
☆ अइम्मा-ए-दीन की शान में गुस्ताखी से सूए खात्मा का खौफ.....89

☆ अहले हदीस को इमाम अबू हनीफा रह० की बददुआ लेकर बैठ गई.....90
☆ इमाम अबू हनीफा रह० की शान में गुस्ताखी करने वाला मुरतद हो गया.....91
☆ अहले हदीस गुलाम अहमद क़ादियानी के हामी बन गये.....92
☆ गैर मुक़ल्लिद मुरतद ईसाई.....92
☆ इमाम अबू हनीफा रह० की तरफ से दिल में गुबार आने का वबाल.....92
☆ अइम्मा-ए-दीन के हक़ में बेअदबी करने वाला राफज़ी....94
☆ हज़रात अइम्मा से अक़ीदत नुजूले बरकात का ज़रीया है.....95
☆ इमाम अबू हनीफा रह० की बे अदबी करने वाले का खात्मा अच्छा नहीं होता.....95
☆ नईम बिन हम्माद का अन्जाम.....96
☆ इमाम अबू हनीफा से बदज़नी की मुआफी.....97
☆ इमाम मुहम्मद रह० की शान में गुस्ताखी.....98
☆ इब्ने हुमाम की तन्क़ीस.....98
☆ इमाम अबू हनीफा रह० की शान में गुस्ताखी करने वाले....98

क़ाज़ियुल कुज़ात इमाम अबू यूसुफ

☆ क़ाज़ी इमाम अबू यूसुफ रहमतुल्लाहि अलैह.....100

सहाबा-ए-किराम की शान में गुस्ताखियाँ

☆ अर्ज़े मुरत्तिब.....104

हज़रात सहाबा-ए-किराम का मक़ाम व मन्ज़िलत

☆ हज़रते आयशा र० की शान में गुस्ताखी.....114

☆ कुछ सहाबा र० फासिक़ थे.....115
☆ हज़रत मुआविया की शान में गुस्ताखी.....116
☆ खुतबा-ए-जुमा में खुलफा-ए-राशिदीन का नाम लेना बिदअत है.....116
☆ सहाबी का कौल हुज्जत नहीं.....117
☆ सहाबी का फेअल भी हुज्जत नहीं.....117
☆ सहाबी की राय भी हुज्जत नहीं.....118
☆ सहाबा-ए-किराम का फहम भी हुज्जत नहीं.....118
☆ हज़रत आयशा की शान में गुस्ताखी.....119
☆ सहाबा-ए-किराम खिलाफे नुसूस अमल पर अमल पैरा थे..120
☆ हज़रत अली रजि० बेफिक्र शहज़ादे की तरह.....121
☆ हज़रत अली की नाम निहाद खिलाफत और खुद साख्ता हुक्मरानी.....122
☆ हज़रत अली ने खिलाफत के ज़रीए अपनी शख्सीयत को कद्दावर बनाना चाहा था।.....123
☆ हज़रत अली रजि० की खिलाफत अज़ाबे खुदावन्दी थी..123
☆ हज़रात हसनैन को जुमरा-ए-सहबा में रखना सबाइयत की तरजुमानी है.....124
☆ हज़रत उमर मोटे-मोटे मसाईल में गलती करते और उनका शरई हुक्म उन्हें मालूम नहीं था.....125
☆ हज़रत उमर और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद को कुरआन की आयत व अहादीस समझ में नहीं आयीं.....125
☆ हज़रत उमर हज़रत इब्ने मसऊद का नसूस शरई के खिलाफ मौक़िफ.....126

☆ गैर मुक़ल्लिदीन का खयाल है कि हज़रत इब्ने मसऊद नमाज़ और दीन की बहुत बातैं भूल गए थे.....127
☆ हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद के खिलाफ.....130
☆ हज़रत इब्ने मसऊद की मन्क़सत जिन्से रवाफिज़ से है..131
☆ हज़रत अबूज़र ग़िफारी कम्यूनिस्ट नज़रिया वाले थे.....132

फिरक़ा-ए-गैर मुक़ल्लिदीयत की इब्तिदा और अंग्रेज़ से तअल्लुक़ात

☆ अर्ज़े मुरत्तिब.....136
☆ मदीना में गैर मुक़ल्लिदीन का नाम व निशान नहीं था...137
☆ मोलवी अब्दुल हक़ इक़रारी शीआ.....138
☆ इस फिरक़े का बानी.....139
☆ मुहम्मदी से अहले हदीस.....139
☆ नौ मौलूद होने पर घर की शहादत.....140
☆ अंग्रेज़ से क़ब्ल हिन्दुस्तान में कोई गैर मुक़ल्लिद न था..141
☆ आज़ादी-ए-मज़बह.....142
☆ अंग्रेज़ के खिलाफ जिहाद के हराम होने का फतवा.....143
☆ अंग्रेज़ के साथ खैरख्वाही का इज़हार.....148
☆ अंग्रेज़ी हुकूमत खुदा की रहमत है.....148
☆ अंग्रेज़ी हुकूमत इस्लामी सल्तनत से बहतर है.....149
☆ आदिल व महरबान गवरमेंट.....149
☆ अहले हदीस नाम अंग्रेज़ हुकूमत से अलाट कराया.....150
☆ नवाब साहब की शादी.....151
☆ मेम की खिदमत का सिला.....152
☆ मोलवी नज़ीर हुसैन के लिए अंग्रेज़ कमिश्नर की चिट्ठी..153

गैर मुक़ल्लिदीन अपने और अहले हक़ उलामा की नज़र में

☆ अर्ज़े मुरत्तिब.....156
☆ नवाब सिद्दीक़ हसन का इरशाद.....157
☆ अल्लामा इब्ने तयमिया का इरशाद.....158
☆ मौलाना अब्दुल जब्बार गज़नवी की शहादत.....158
☆ नवाब वहीदुज़्ज़माँ साहब की शहादत.....159
☆ हन्फी गुमराह और फिरक़ा-ए-नाजिया से खारिज हैं उनसे निकाह जायज़ नहीं.....160
☆ हज़रत मौलाना अब्दुल हय लखनवी का इरशाद.....161
☆ तर्के तक़लीद शिर्क व इरतिदाद का सर चश्मा.....167
☆ बानी फिरक़ा-ए-चकड़ालविया गैर मुक़ल्लिद था.....169
☆ मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी गैर मुक़ल्लिद था.....169
☆ हकीम नूरूद्दीन भी गैर मुक़ल्लिद था.....172
☆ **ज़रूरी वज़ाहत**.....173
☆ फिक़ह.....175

तम्मत व बिल फ़ज़्लि अम्मत

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

अर्ज़े मुरत्तिब

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّی عَلٰی رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ. اَمَّا بَعْدُ!

खलीफा-ए-सोम हज़रत उस्मान-ए-ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु की दौरे खिलाफत के आखिरी अय्याम में अफरा तफरी के जो हालात रूनुमा हुए उनसे हुजूर अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में शहर बदर किए हुए यहूदियों ने बड़ा फायदा उठाया, खुद आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी में इस्लाम के खिलाफ मुतअद्दद शाज़िशें कीं।

यहूदियों ने देखा कि इस्लाम को कमज़ोर करने और उस की सफों में इन्तिशार पैदा करने का सिर्फ एक ही तरीक़ा है वह ये है कि इस्लाम का चोला पहन कर मुसलमानों की सफों में शामिल हुआ जाये, इसी तरीक़े से उनके अक़ायद को मशकूक व मुशतबा बनाया जाये, ताकि उनके अन्दर से दीन की स्प्रीट खत्म हो जाये। इस खतरनाक मन्सूबे को अमली जामा पहनाने के लिए बहुत से यहूदियों ने अपने मुसलमान होने का ऐलान कर दिया, अब्दुल्लाह बिन सबा इन यहूदियों में सरे फहरिस्त था, और इस तमामतर तवज्जोह का मक़सद इस्लामी अक़ायद पर व शुबह का इज़हार करना और हुजूर अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मन्सूब करके झूठी अहादीस तैयार करना था।

मिस्र के एक मशहूर आलिमे दीन शेख मुहम्मद अबू ज़हरा

लिखते हैंः कि

''हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु इब्ने सबा के बारे में फरमाया करते थे कि ये शख्स हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ झूठी बातें मन्सूब करता है।''

(तारीखुल मज़हबुल इस्लामिया-जि०:1, मुहम्मद अबू ज़हरा)

मोतबर तारीखी हवालों के मुताबिक़ अहदे उस्मानी के अवाखिर में इब्ने सबा का जुहूर हुआ, और उसका नस्बुल ऐन तहरीके इस्लामी को हर तरह शल और मुअत्तल करना था। इस सिलसिले में उसका पहला वार अक़ीदा-ए-तौहीद पर था, जो इस अज़ीम तहरीक की रूह थी, इसके बाद उसका निशाना दाई तौहीद की शख्सियत थी।

यमन के इस यहूदी ने नबी-ए-उम्मी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क़द्र व मन्ज़िलत कम करने के लिए ''इमामत और इस्मते अइम्मा'' का नज़रया पेश किया, और कहाः कि इमामत अमीरूल मोमिनीन अली रजियल्लाहु अन्हु का मौरूसी हक़ है, क्योंकि जिस तरह हर नबी का एक वसी होता चला आया है, इसी तरह अमीरूल मोमिनीन भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वसी हैं।

(कशी मारिफत अखरूर रिजालः71, नेमतुल्लाह जज़ाइरी, अनवारून्नोमानियाः207)

इब्तिदा में लफ्ज़े शीआ हिमायती और तरफदार के माने में इस्तेमाल हुआ, हज़रत उस्माने ग़नी र० के तरफदार और मद्दाहों को शीआने उस्मान, और हज़रत अली र० के हिमायतियों और बिही ख्वाहों को शीआने अली कहा जाता था, और नज़रयाती नहीं बल्कि सियासी तक़सीम थी, सन् 397 हि० में कुछ लोग हज़रत उस्माने ग़नी र० पर हज़रते अली र० को फज़ीलत देने लगे, और हज़रत अली र० के बारे में दीगर खुराफात

मसलन वसी और खलीफतुर रसूल और इमाम की मासूमियत का अक़ीदा उनमें शामिल होगया, बस यही था शीईयत का नुक़्ता-ए-आग़ाज़। शीआने उस्मान ने जब देखा कि शीआने अली कहलाने वाले अपने अक़ीदा में गुलू करने लगे और इस्लाम की रूह के मुनाफी अक़ीदे इख्तियार करते हैं, तो हज़रत उस्मान र० के हिमायतियों ने खुद को शीआने उस्मान कहना बन्द कर दिया, अब मैदान में सिर्फ शीआने अली रह गये, रफ्ता रफ्ता उन्हों ने भी इज़ाफत को खत्म करके अपने आपको मुतलक़न शीआ कहना शुरू कर दिया, और इस उम्मत को जिस क़दर फिरक़ा-ए-शीआ से नुक़सान पहुंचा है और पहुंच रहा है किसी बदतरीन से बदतरीन दुश्मन से नहीं पहुंचा, आज तक उम्मत इस नुक़सान का खुमयाज़ा भुगत रही है, अब आखिर में एक नौ मौलूद फिरक़ा जो अपने आप को बज़अमे खवेश क़दीम तरीन फिरक़ा कहता है, गैर मुक़ल्लिदीन का है, जिसका मक़सद भी शीओं की तरह इस्लामी वहदत को पारा पारा करना है, और ये उनका महबूब और पसन्दीदा तरीन मशगला है।

इस फिरक़े को हिन्दुस्तान में ज़्यादा तक़वीयत और शोहरत अंग्रेज़ के ज़माने में हासिल हुई, चूंकि उलमा-ए-अहनाफ, उलमा-ए-देवबन्द वगैरह ने अंग्रेज़ से लड़ाइयाँ लड़ीं, इस लिए अंग्रेज़ के असल दुश्मन उलमा-ए-अहनाफ (उलमा-ए-देवबन्द) थे, इस वजह से उलमा-ए-देवबन्द पर अंग्रेज़ ने वह मज़ालिम ढाए हैं कि उनके सुनने से भी रोंगटे खड़े हो जाते हैं, इस लिए अंग्रेज़ ने उलमा-ए-देवबन्द के मुक़ाबले के लिए और मुसलमानों में इख्तिलाफ और इन्तिशार पैदा करने के लिए इन्तिहाई होशियारी व चालाकी से मन्सूबा बन्द तरीक़े पर कुछ उलमा को खड़ा किया।

(1)..... आलाहज़रत मौलाना अहमद रज़ा खाँ साहब को खड़ा

किया, मौलाना अहमद रज़ा खाँ साहब ने अंग्रेज़ के खिलाफ जिहाद करने को नाजायज़ व हराम कहा, और इस मौज़ू पर मुस्तक़िल रिसाला लिखा, दूसरी तरफ मुसलमानों में इख्तिलाफ व इन्तिशार पैदा करने के लिए उलमा-ए-देवबन्द और हम मस्लक लोगों के मासिवा सब को काफिर व मुश्रिक क़रार दिया।

(2)..... मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी को खड़ा किया, मिर्ज़ा साहब ने भी अंग्रेज़ हुकूमत को दारूल इस्लाम क़रार दिया, और अंग्रेज़ी हुकूमत को खुदाई रहमत बताया और कहाः कि ऐसा अमन व सुकून जैसा अंग्रेज़ के ज़ेरे साया है ऐसा सुकून न मक्का में है न मदीना में। और अंग्रेज़ के खिलाफ जिहाद करने को नाजाईज़ और हराम कहा, और इस मज़मून के पचासों रिसाले लिखे, और मुसलमानों में इख्तिलाफ व इन्तिशार पैदा करने के लिए अपनी नुबुव्वत का दावा किया और अपने मानने वालों के मासिवा पूरी उम्मत को काफिर कहना शुरू किया।

(3)..... इसी तरह उलमा-ए-गैर मुक़ल्लिदीन मौलाना मुहम्मद हुसैन बटालवी, मौलाना मियाँ नज़ीर अहमद साहब को खड़ा किया, हर दो हज़रात ने अंग्रेज़ की पूरी पूरी हिमायत की, उसकी मुवाफिक़त में रिसाले लिखे, मौलाना मुहम्मद हुसैन बटालवी ने ''अल-इक़्तिसाद फी मसाइलिल जिहाद'' रिसाला लिखा, जिस में अंग्रेज़ के खिलाफ जिहाद को नाजाईज़ व हराम क़रार दिया, और अंग्रेज़ हुकूमत को रहमते खुदावन्दी कहा और हिन्दुस्तान को दारूल इस्लाम बताया, जिस के सिले में हर दो हज़रात और दीगर उलमा-ए-गैर मुक़ल्लिदीन को अंग्रेज हुकूमत की तरफ से

बड़ी बड़ी जायदादें और जागीरें इनाम में मिलीं, और उनको बड़े बड़े खिताबात से नवाज़ा गया।

उलमा-ए-गैर मुक़ल्लिदीन ने अपने आक़ा और वली नेमत अंग्रेज़ के इशारों पर मुसलमानों में इन्तिशार पैदा करने के लिए अपने हम मसलक के मासिवा हम तमाम उम्मत उलमा-ए-मुक़ल्लिदीन अहनाफ, शवाफे, मवालिक, हनाबिला, तमाम मुहद्दिसीन, मुफस्सिरीन, सूफिया व मशाइख सब को काफिर व मुश्रिक क़रार दिया। और अपने मासिवा पूरी उम्मत को काफिर व मुश्रिक क़रार देने का सिलसिला बराबर चला हुआ है, और इसी को इस वक़्त वह सबसे बड़ा जिहाद तसव्वुर किये हुए हैं। सऊदी अरब से शाय होने वाली ''अल-देवबन्दिया अल-तबलीगिया'' व ''जुहूद उलमाउल अहनाफ'' किताबों को देखा जा सकता है, उस वक़्त जबकि उम्मत को इत्तिफाक़ व इत्तिहाद की सबसे ज़्यादा ज़रूरत थी और ज़रूरी था कि अपने मसलकी इख्तिलाफात के बावजूद इस्लाम के बुनयादी उसूल तौहीद व रिसालत की बुन्यिाद पर आपस में तअल्लुक़ात व इत्तिहाद से रहें, एक दूसरे के साथ तआवुन करें, और इस्लाम के खिलाफ होने वाली साज़िशों का मुक़ाबला करें, और मुसलमानों में फैली हुई बेशुमार बिदआत व खुराफात और बुराईयों को दूर करने की कोशिश करें, मगर अफसोस ऐसा करने के बजाए मुसलमानों में इख्तिलाफ व इन्तिशार को मुज़ीद बढ़ाने और फैलाने के लिए अपने मासिवा तमाम उम्मत को काफिर व मुश्रिक क़रार देने को ही असल जिहाद समझ लिया, और इसी पर अपना तमामतर ज़र व ज़ोर सर्फ किया जा रहा है, बर सरे आम अईम्मा किराम की तजहील और फुक़हा व सूफिया-ए-किराम की तज़लील की जारही है, तक़लीदे शख्सी को शिर्क क़रार देकर हर ऐरे गैरे के लिए

इज्तिहाद को जाईज़ क़रार दिया जा रहा है।

अवाम के साथ फिक़्ह व हदीस में तज़ाद ज़ाहिर करके उन्हें फिक़्ह से मतनफ्फिर किया जा रहा है, इससे भी बढ़ कर फ़िक़्ह को जो (जो कुरआन व हदीस की रूह है) नापाक न व नजिस क़रार दिया जा रहा है, बल्कि कहा जा रहा है कि फ़िक़्ह ऐसी नापाक चीज़ है कि उस पर पेशाब करने से पेशाब मुज़ीद नापाक हो जाएगा। अल अयाज़ु बिल्लाह

मन्सूख व मतरूक अहादीस को आड़ बनाकर उन मसाईल को हवा दी जा रही है जो शुरू दौर से अइम्मा-ए-मुजतहिदीन के दरमियान मुख्तलिफ फीह चले आरहे हैं। कहीं अहनाफ की नमाज़ो को बातिल और उनके दीगर आमाल को बेकार साबित किया जा रहा है, इसी पर बस नहीं बल्कि उन्हें काफिर व मुशरिक क़रार देकर उनसे निकाह मुनाकिहत को नाजाईज़ और उनकी बीवियों को बगैर निकाह के हलाल क़रार दिया जा रहा है, और उन्हें गैर नाजी फिरक़ा क़रार देकर दोज़खी साबित किया जा रहा है। जिस की वजह से घर घर मार धाड़ होने लगी। भाई भीई के खून का प्यासा बन गया, फौजदारी के मुक़द्दमात हो रहे हैं, जिस से अग़यार को भी हंसने का मौक़ा मिल रहा है।

(तफसील के लिए देखिए देबाचा रिसाला अहले हदीस जिल्द अव्वल)

मस्लकी इख्तिलाफ इस उम्मत में हमेशा से रहा है, लेकिन इसके बावजूद इस्लाम की तारीख इत्तिहद व इत्तिफाक़ बाहमी इकराम व मवद्दत और सालिमीयत के हैरत अंगेज़ वाक़िआत से लब्रेज़ है, हमारे अस्लाफे किराम ने सेहत मन्द इख्तिलाफ से कभी गुरेज़ नहीं किया, लेकिन दिली रिश्तों को मज़बूत से मज़बूत तर बनाने की कोशिशें भी बराबर जारी रखीं।

अल्लामा इब्ने क़य्यिम फरमाते हैं कि:

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा के दरमियान सौ मसाईल में इख्तिलाफ था, मगर इसके बावजूद दोनों में बे इन्तिहा मुहब्बत थी।

खुद हज़रत अबूबकर और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा में **37** मसाईल में इख्तिलाफ था, मगर एक दूसरे के लिए इख्लास व मुहब्बत का जो ज़ज़्बा था वह सब पर अयाँ है।

इसी तरह तमाम फुक़हा के दरमियान मुतअद्दद मसाईल में इख्तिलाफ था, मगर इत्तिहाद व उखूव्वते इस्लामी का पहलू हमेशा गालिब रहा।

लेकिन फिरक़ा नाम निहाद अहले हदीस (गैर मुक़ल्लिदीन) ने अपने मासिवा तमाम की तकफीर व तफसीक़ और तज़लील व तजहील का जो तरीक़ा इख्तियार किया है वह हद दरजा अफसोसनाक है, और चन्द सालों से हैरत अंगेज़ शिद्दत आई है।

सऊदिया से ''अल-देवबन्दिया अल-तब्लीगिया'' नामी किताबें शाय की जा रही हैं। जिसमें तमाम अकाबिर उलमा-ए-देवबन्द को नाम बनाम काफिर व मुश्रिक बताया गया है।

शेखुल हिन्द हज़रत मौलाना महमूद हसन देवबन्दी रह०
बानी-ए-दारूल उलूम हज़रत मौलाना मु० क़ासिम नानौतवी रह०
हकीमुल उम्मत हज़रत मौलाना अशरफ अली साहब थानवी रह०
हज़रत अल्लामा अनवर शाह कशमीरी रह०
हाजी इमदादुल्लाह साहब मुहाजिर मक्की रहमतुल्लाहि अलैहि
मुहद्दिसे जलील हज़रत मौलाना रशीद अहमद गंगोही रह०
हज़रत मौलाना खलील अहमद साहब सहारनपुरी रह०
शेखुल हदीस हज़रत मौलाना मु० ज़करिया साहब मुहाजिर मदनी
अमीरे तबलीग़ हज़रत मौलाना इनामुल हसन साहब कांधलवी
अमीरे तबलीग़ हज़रत मौलाना मु० यूसुफ साहब कांधलवी रह०

बानी-ए-तबलीग़ हज़रत मौलाना मु० इलयास साहब रह०
साहिबे "तारीख दावत व अज़ीमत" और क़ाईदे तहरीके पयामे इन्सानियत हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली नदवी

सबको नाम बनाम काफिर व मुश्रिक, बिदअती, कुबूरी वगैरह क्या क्या कहा है? और इन हज़रात की किताबों से मज़ामीन नक़ल करके, खुद साख्ता गलत मतलब अपनी तरफ से चस्पाँ करके तकफीर व तज़लील का हुक्म लगा दिया, और इन हज़रात की तरफ उन अक़ाईद की निस्बत की जिनसे वह खुद अपनी तरफ से बेज़ारी फरमा चुके हैं, और जिन अक़ाईद को वह हज़रात खुद खिलाफे हक़ समझते हैं, ये वह हज़रात हैं कि इन हज़रात की ज़िन्दगी अशाअते दीन व सुन्नत, रद्दे बिदआत और इस्लाहे उम्मत की फिक्र व दिलसोज़ी में गुज़री, और आज हिन्दुस्तान भर में जो दीन की शक्ल व सूरत नज़र आरही है, उन में इन हज़रात की मसाई का बड़ा हिस्सा है, और गैर मुल्कों में भी जो मदारिस व मकातिब और दावत व तबलीग़ की मेहनतें हो रही हैं, वह भी उमूमन इन हज़रात के तलामिज़ह और फैज़याफ्तगान हज़रात ही उमूमन अन्जाम दे रहे हैं, अगर ये तमाम हज़रात और उनके मुतअल्लिक़ीन व मोतक़िदीन सब के सब गुमराह हैं, काफिर व मुश्रिक हैं तो फिर दुनिया में मोमित व मुस्लिम किस को कहेंगे? क्या इस तब्क़ा के अलावह पूरी उम्मते मुस्लिमा काफिर व मुशरिक हो गई, हज़रत नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का तो इरशाद है:

"لا تجتمع امتی علی ضلالة" (الحدیث)

कि मेरी पूरी उम्मत गुमराही पर जमा नहीं होगी।

पूरी उम्मत मुस्लिमा को काफिर व मुश्रिक बताना क्या यही दीन की खिदमत है और क्या कोई ज़ीहोश ग़ैरतमन्द इन्सान

इसको बरदाश्त कर सकता है कि पूरी उम्मत को गुमराह क़रार दिया जाए? काफिर व मुश्रिक बताया जाए? और एक साहिबे ईमान ग़ैरतमन्द इन्सान खामोश तमाशाई बना हुआ उसे देखता रहे? और बर्दाश्त करता रहे? आखिर कब तक?

इस पर भी बस नहीं सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन (जिनके फज़ाईल व मनाक़िब से कुरआन व हदीस पुर हैं) की शान में गुस्ताखियाँ की जा रही हैं, उनको बिदअती, बिदअत को ईजाद करने वाला, बिदअत को कुबूल करने वाला बताया जा रहा है, सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन से अगर ऐतमाद उठ जाए, तो फिर दीन की हिफाज़त की क्या शक्ल है? उन्हीं हज़रात के ज़रीये दीन हम तक पहुँचा, वही हज़रात अगर बद दीन, गुमराह, बिदअती हों, तो उनके ज़रीये पहुँचे हुए दीन पर क्या ऐतमाद किया जा सकता है? जबकि दीन की हिफाज़त का वादा अल्लाह तआला की तरफ से किया गया है:

"اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَاِنَّا لَهٗ لَحَافِظُوْنَ"

सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन को गुमराह, बद दीन और बिदअती कहना हुजूर अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सख्त तरीन तौहीन व तन्क़ीस है, कि वह सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन जिनकी तरबियत बराहे रास्त हज़रत नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाई। जिन पर हज़रत नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमायाः

"اَصْحَابِیْ كَالنُّجُوْمِ فَبِاَيِّهِمْ اِقْتَدَيْتُمْ اِهْتَدَيْتُمْ" (الحديث)

अश्रा-ए-मुबश्शरहः- जिनके जन्नती होने की बशारत हज़रत नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दी। सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन में खुलफा-ए-राशिदीन जिनकी

इत्तिबा का हुक्म आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दिया।

इरशाद फरमाया :

"عَلَيْكُمْ بِسُنَّتِيْ وَ سَنَّةِ الْخُلَفَاءِ الرَّاشِدِيْنَ الْمَهْدِيِّيْنَ"

मेरी सुन्नत को लाज़िम पकड़ लो और खुलफा-ए-राशिदीन महदीयीन की सुन्नत को लाज़िम पकड़लो। उनको गुमराह, बद दीन बताना, उनको बिदअती बताना, क्या आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तौहीन नहीं? क्या दीन से ऐतमाद उठाना नहीं? क्या ये दोस्ती के नाम पर दुश्मनी नहीं? क्या दानिस्ता या नादानिस्ता यहूदियत के मन्सूबे व मिशन की तकमील नहीं? क्या अदना दरजा मोमिन इसको बर्दाश्त कर सकता है?

हरगिज़ हरगिज़ बर्दाश्त नहीं कर सकता। इसलिए मजबूर होकर उलमा-ए-अहनाफ ने इस फिरक़े के रद्द और दिफा की तरफ तवज्जोह फरमाई, और इसके रद्द में मुतअद्दद किताबें लिखी गईं, पेशे नज़र रिसाला भी इसी मजबूरी के तहत लिखने की नौबत आई, जिसमें मुन्दरजा ज़ेल उनवानात पर रोशनी डाली गई है :

☆.....फिक़्हे हन्फी की मक़बूलियत व आलमगीरियत

☆.....सहीह बुखारी शरीफ और गैर मुक़ल्लिदीन

☆.....गैर मुक़ल्लिदीन का अहादीसे सहीहा से बुग्ज़ व इनाद

☆.....इमाम अबू हनीफा की शान में गुस्ताखी और उसका वबाल (इमाम अबू यूसुफ की शान में गुस्ताखियाँ)

☆.....सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम की शान में गैर मुक़ल्लिदनी की गुस्ताखियाँ

☆.....फिरक़ा-ए-गैर मुक़ल्लिदीयत की इब्तिदा और अंग्रेज़ से तअल्लुक़ात

☆.....गैर मुक़ल्लिदीन अपने और अहले हक़ उलमा की नज़र में

उम्मीद है कि इस रिसाला से इन्साफ पसन्द और

तालिबीने हक़ लोगों के लिए इस फिरक़े का ज़ेग़ व ज़लाल और इस्लाम दुश्मनी और अंग्रेज़ व यहूद, इस्लाम दुश्मन तनज़ीमों का आला-ए-कार होना बखूबी वाज़ेह हो जाएगा।

اَللّٰھُمَّ اَرِنَا الْحَقَّ حَقًّا وَارْزُقْنَا اتِّبَاعَهُ وَاَرِنَا الْبَاطِلَ بَاطِلاً وَارْزُقْنَا اجْتِنَابَهُ

رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا اِنَّکَ اَنْتَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ وَتُبْ عَلَیْنَا اِنَّکَ اَنْتَ

التَّوَّابُ الرَّحِیْمُ. بِحُرْمَةِ حَبِیْبِکَ سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ

وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی خَیْرِ خَلْقِهٖ سَیِّدِنَا

وَمَوْلَانَا وَحَبِیْبِنَا مَحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِهٖ

وَاَصْحَابِهٖ اَجْمَعِیْنَ اِلٰی

یَوْمِ الدِّیْنِ

آمیْن

मुहम्मद फारूक़ गुफिरा लहू

28 रमज़ानुल मुबारक बरोज़ दो शन्बा सन् 1424 हि०

फिक़्हे हन्फी

की

मक़्बूलियत और आलमगीरियत

अर्ज़े मुरत्तिब

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّی عَلٰی رَسُوْلِهِ الْکَرِیْمِ. اَمَّا بَعْدُ!

फिक़्हे हन्फी को हक़ तआला शानहू ने अजीब मक़बूलियत अता फरमाई है कि इस्लामी दुनिया को स्वादे आज़म इसका मुत्तबा है, जलीलुल कद्र अइम्मा, फुक़हा, मुहद्दिसीन, मुफस्सिरीन, मुसन्निफीन अहनाफ में गुज़रे हैं।

सलातीन-ए-इस्लाम अक्सर व बेश्तर अहनाफ ही होते रहे हैं, जिनके ज़रीए इस्लाम की अशाअत हुई, और इस्लाम को रफअत व सरबुलन्दी हासिल हुई, दीन के इन खुद्दाम (अहनाफ) से खुश होना, उनको अपना मोहसिन जानना और उनके लिए दुआ गो होना तक़ाज़ाए ईमान है, मगर फिरक़ा-ए-गैर मुक़ल्लिदीन (नाम निहाद अहले हदीस) खुश होने के बजाये अपने तमाम मुक़ल्लिदीन मुसलमान, बिल्खुसूस अहनाफ से सख्त बुग्ज़ व इनाद रखता है, अहनाफ को बुरा कहना बल्कि उनको काफिर व मुश्रिक, बद दीन बताना उनका महबूब मश्गला और सबसे बड़ा जिहाद है।

हर अदना बसीरत वाला शख्स जानता है कि दीन के ऐसे खुद्दाम से नाराज़ व नाखुश होना, दीन व इस्लाम की तरक़्क़ी व इशाअत से नाखुश होना है, सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन की मिसाल कुरआने पाक में बयान की गई है।

وَ مَثَلُهُمْ فِی الْاِنْجِیْلِ کَزَرْعٍ اَخْرَجَ شَطْاَهٗ فَاٰزَرَهٗ فَاسْتَغْلَظَ فَاسْتَوٰی عَلٰی سُوْقِهٖ یُعْجِبُ الزُّرَّاعَ.

फिर फरमाया इन्जील में उनकी एक और मिसाल दी गई कि वह ऐसे हैं जैसे कोई काश्तकार ज़मीन में बीज उगाए तो अव्वल वह एक ज़ईफ सी सुई की शक़्ल में नमूदार होता है, फिर उसमें शाखें निकलती हैं, फिर वह और क़वी होता है, फिर वह अपने तने पर सीधी खड़ी हो गई कि किसानों को भली मालूम होने लगी।

बयान करने के बाद फरमाया गया है।

لِيَغِيْظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ.....

ताकि उनसे काफिरों को जलाया जाए।

इससे मालूम हुआ कि इस्लाम की शान व शौकत, रफअत व सर बुलन्दी से नाखुश होना अहले ईमान की शान नहीं, बल्कि कुफ्फार का तरीक़ा व शेवा है, मुक़ल्लिदीन बिल्खुसूस अहनाफ से बुग्ज़ रखने वाले ठण्डे दिल से ज़रा गौर करें कि अहनाफ से बुग्ज़ व इनाद उनको कहाँ से कहाँ ले जा रहा है।

इस मुख्तसर रिसाला में फिक़्हे हन्फी की मक़बूलियत व आलमगीरियत और अहनाफ की खिदमात का मुख्तसर तज़किरा किया गया है।

अल्लाह पाक अक़्ले सलीम, फह्मे मुस्तक़ीम अता फरमाये, सिराते मुस्तक़ीम पर चलाए, कज रवी व कज राही से पूरी-पूरी हिफाज़त फरमाए। आमीन!

اَللّٰهُمَّ اَرِنَا الْحَقَّ حَقًّا وَارْزُقْنَا اتِّبَاعَهُ وَاَرِنَا الْبَاطِلَ بَاطِلاً وَارْزُقْنَا اجْتِنَابَهُ. وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى خَيْرِ خَلْقِهٖ سَيِّدِنَا مَحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ اَجْمَعِيْنَ.

मुहम्मद फारूक़ गुफिरा लहू

23 जुमादल उखरा सन् 1422 हि०

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّی عَلٰی رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ. اَمَّا بَعْدُ!

ये तबक़ा आज पूरे ज़ोर व शोर के साथ तक़लीद को कुफ़्र व शिर्क और कारे शैतान कहने पर तुला हुआ है, और मुक़ल्लिदीन को काफिर व मुश्रिक बनाना सबसे बड़ा जिहाद समझे हुए है, ये मालूम नहीं कि इसकी ज़द कहाँ-कहाँ पड़ेगी, और मुक़ल्लिदीन काफिर व मुश्रिक हुए तो दीन व ईमान कहँ बाक़ी रहेगा।

दौरे नुबूव्वत

दौरे नुबूव्वत में फुरूई मसाईल दरयाफ्त करने के तीन तरीक़े थे।

(1) जो लोग खिदमते अक़्दस में हाज़िर होते वह बराहे रास्त आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मस्अला दरयाफ्त फरमाकर उस पर अमल करते थे।

(2) जो लोग आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दूर होते उन में कोई मुजतहिद होता तो नए पेशआम्दह मस्अला में इज्तिहाद कर लेता और अगर खुद मुजतहिद न होता, तो अपने इलाक़ा के मुज्तहिद की तक़लीद करलेता, जैसे यमन में हज़रत मुआज़ रजियल्लाहु अन्हु इज्तिहाद करते और बाक़ी तमाम अहले यमन उनकी तक़लीद शख्सी करते, हालांकि वह अहले यमन खुद अरबी दाँ थे, और दौरे नुबूव्वत में एक मुसलमान का नाम भी पेश नहीं किया जा सकता जिसके बारे में ये साबित किया जा सके कि كَانَ يَجْتَهِدُ وَلَا يُقَلِّدُ اَحَدًا कि न वह इज्तिहाद की अहलीयत रखता था, और न किसी की तक़लीद करता था, इस दौर में एक भी गैर मुक़ल्लिद नहीं था।

दौरे सहाबा-ए-किराम

रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का विसाल सन् ११ हि० में हुआ, तो अब लोग पहले तरीक़े से महरूम होगये, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बराहे रास्त अब मस्अला नहीं पूछा जा सकता था, इस लिए अब फुरूई मसाईल के हल के लिए दो ही तरीक़े रह गये कि मुज्तहिद इज्तिहाद करे, और आमी तक़लीद, चुनान्चे दौरे सहाबा में मक्का मुकर्रमा में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु, मदीना मुनव्वरह में हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु, और कूफा में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की तक़लीद शख्सी होती थी, इन सहाबा के हज़ारहा फतावा बिला ज़िक्र दलील कुतुबे हदीस में मौजूद हैं, और सब लोग बिला मुतालबा उन फतावा पर अमल करते थे, इसी को तक़लीद कहते हैं। दौरे सहाबा, ताबईन और तबअ ताबईन में एक शख्स भी ऐसा न था जो अहले सुन्नत हो, या गैर मुक़ल्लिद हो, उसके बारे में ये शहादत हो कि न मुज्तहिद न मुक़ल्लिद था, बल्कि गैर मुक़ल्लिद था, जिस तरह उस खैरूल कुरून में कोई शख्स अहले कुरआन बमाना मुन्कर हदीस नहीं था, इसी तरह एक भी शख्स अहले हदीस बमाना मुन्कर फिक़ह व तक़लीद न था।

हज़रत शाह वलीयुल्लाह साहब रह० फरमाते हैं:

لِاَنَّ النَّاسَ لَمْ يَزَالُوْا مِنْ زَمَنِ الصَّحَابَةِ اِلٰى اَنْ ظَهَرَتِ الْمَذَاهِبُ الْاَرْبَعَةُ يُقَلِّدُوْنَ مَنْ اِتَّفَقَ مِنَ الْعُلَمَاءِ مِنْ غَيْرِ نَكِيْرٍ يُعْتَبَرُ اِنْكَارُهٗ وَلَوْ كَانَ ذٰلِكَ بَاطِلًا لَا نَكَرُوْهُ الخ. (عقد الجيد: ۲۹)

हज़रात सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के ज़माने से

लेकर मज़ाहिबे अरबा के ज़ुहूर तक लोग उलमा-ए-किराम में से जिसका भी इत्तिफाक़ होता बराबर तक़लीद करते रहते, और बगैर किसी क़ाबिले ऐतबार इन्कार के ये कार्रवाई होती रही, अगर तक़लीद बातिल होती तो वह हज़रात ज़रूर इसका इन्कार करते।

सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम में तक़लीद शख्सी

ऊपर ज़िक्र कर्दा हवालों से मालूम होगया कि हज़रात सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम में बराबर तक़लीद पाई जाती थी, बल्कि तक़लीद शख्सी की जाती थी, जैसा कि ऊपर गुज़र गया कि यमन में हज़रत मुआज़ रजियल्लाहु अन्हु, मक्का मुकर्रमा में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु, मदीना तय्यबा में हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु, कूफा में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की तक़लीदे शख्सी की जाती थी, और खुद हज़रात सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन इसकी ताकीद फरमाते थे, बुखारी शरीफ जिल्द दोम किताबुल फराईज़ पेजः997 पर है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से मीरास के एक मस्अले में फतवा लिया गया, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के जवाब और फतवा मशहूर का सहाबी-ए-रसूल हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु से ज़िक्र किया गया, उसके जवाब में हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु ने फरमायाः

"لَا تَسْئَلُوْنِیْ مَا دَامَ هٰذَا لحِبْرُ فِیْکُمْ"

तुम्हारे अन्दर जब तक ये आलिम कामिल (हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु) मौजूद हैं, मुझसे

मस्अला दरयाफ्त न किया करो, बल्कि उनसे ही मसाईल दरयाफ्त करके बिला तरद्दुद अमल किया करो, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के होते हुए और किसी सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु से दरयाफ्त करने की ज़रूरत नहीं।

क़ारिईने किराम गौर फरमा सकते हैं कि तक़लीदे शख्सी और किसको कहते हैं?

और यही हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु हैं कि सहाबा-ए-किराअ रज़ियल्लाहु अन्हुम में उनका ये मक़ाम व मन्ज़िलत है कि उनके होते हुए किसी और से मस्अला दरयाफ्त करने की ज़रूरत व गुन्जाईश नहीं, लेकिन फिरक़ा गैर मुक़ल्लिदीन उनको ये मक़ाम देने के लिए तय्यार नहीं, बल्कि इस से बढ़ कर उनकी शान में गुस्ताखी बे अदबी उनकी तन्क़ीस व तहक़ीर को अपना वतीरह बनाए हुए है, एक निरा जाहिल शख खड़ा होता है, और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की शान में गुस्ताखी करना शुरू कर देता है। अल-अमान वल हफीज़!

यूँ तो ये फिरक़ा बात बात में बुखारी-बुखारी की रट लगाता है, मगर इन लोगों को बुखारी शरीफ में ये हदीसैं नज़र नहीं आतीं।

क़ारिईने किराम गौर कर सकते हैं कि ये इत्तिबा-ए-हदीस व सुन्नत है या इत्तिबा-ए-नफ्स व हवा।

इस्लामी ममालिक और बाक़ी मुल्कों में गैर मुक़ल्लिदीन

इस दुनिया में तक़रीबन एक अरब से ज्यादा मुसलमान

बयान किये जाते हैं, और उन में अक्सरीयत मुक़ल्लिदीन की है, और उन में भी अलल खुसूस हन्फियों की अक्सरीयत है और पहले भी थी, चुनान्चे अल्लामा इब्ने खल्दून फरमाते हैं कि हज़रत इमाम अबू हनीफा रह० के मुक़ल्लिद इस वक़्त इराक़, हिन्दुस्तान, चीन, मा वराउन्नहर व बिलादुल अजम (अजम के सब शहरों) में फैले हुए हैं। (मुक़द्दमा:448)

और मुवर्रिखे दौराँ अमीरूल बयान अल्लामा शकीब अरसलान रह० (मुतवफ्फी:1366) फरमाते हैं कि मसलमानों की अक्सरीयत हज़रत इमाम अबू हनीफा रहमतुल्लाहि अलैहि की पैरू और मुक़ल्लिद है, यानी सारे तुरक और बिल्क़ान के मुसलमान, रूस और अफगानिस्तान के मुसलमान, और अरब के अक्सर मुसलमान, शाम व इराक़ के अक्सर मुसलमान फिक़ह में हन्फी मस्लक रखते हैं, सूर्य (शाम) के बाज़ और हिजाज़, यमन, हबशा, जावा, इन्डोनेशिया और कर्दुस्तान के मुसलमान हज़रत इमाम शाफई रह० के मुक़ल्लिद हैं और मग़रिब के मुसलमान मग़रिबी और वस्त अफरीक़ा के मुसलमान और मिस्र के कुछ लोग हज़रत इमाम मालिक रह० के मुक़ल्लिद हैं, और अरब के बाज़ मुसलमान और शाम के बाज़ बाशिन्दे जैसे नाबल्स और दूमा के रहने वाले हज़रत इमाम अहमद बिन हन्बल रह० के मुकल्लिद हैं। (हाशिया हुस्नुल मसाई:69)

ऊपर बिफज़्लिही तआला तफसील से ये बात बयान हो चुकी है कि चौथी सदी के बाद हज़रात अइम्मा के मज़ाहिब और उनकी किताबों की ही तालीम व तदरीस और नश्र व इशाअत होती रही, और लोगों की नज़रें सिर्फ उन्हीं की तरफ उठने लगीं, और पेशआम्दह मसाईल में ज़रूरतें भी उन्हीं से और उन में से भी अलल खुसूस फिक़्हे हन्फी से पूरी होने लगीं, बक़िया मज़ाहिब

या तो सिरे से मिट गये, या कमयाब और मरजूह होकर रह गये, अब बक़ौल इमामुल हिन्द हज़रत शाह वलीयुल्लाह साहब रह०:

فِی الْاَخْذِ بِهٰذِهِ الْمَذَاهِبِ الْاَرْبَعَةِ مَصْلَحَةٌ عَظِيْمَةٌ وَفِیْ الْاِعْرَاضِ عَنْهَا مُفْسَدَةٌ كَبِيْرَةٌ الخ. (عقيدة الجيد: ٣٦)

इन चारों मज़ाहिब के लेने में बड़ी मस्लिहत और उनसे ऐराज़ करने में बड़ा फसाद और खराबी है।

और हिन्दुस्तान वगैरह उन इलाक़ों में जहाँ दीगर हज़रात अइम्मा-ए-किराम की फिक़ह और किताबें राइज नहीं हैं, और उनकी तालीम व तदरीस नहीं होती तो बक़ौल हज़रत शाह वलीयुल्लाह साहब रह० उन इलाक़ों में जाहिल इन्सान के लिए हज़रत इमाम अबू हनीफा की तक़लीद वाजिब और इससे निकलना हराम है।

فَاِنْ كَانَ اِنْسَانٌ جَاهِلًا فِیْ بِلَادِ الْهِنْدِ اِلٰی قَوْلِهٖ وَجَبَ عَلَيْهِ اَنْ يُقَلِّدَ بِمَذْهَبِ اَبِیْ حَنِيْفَةَ وَيَحْرُمُ عَلَيْهِ الْخُرُوْجُ مِنْ مَذْهَبِهٖ الخ. (انصاف:٧٠)

फिक़्हे हन्फी अक़रब इलन्नुसूस है

क़िहे हन्फी जिस क़द्र अक़रब इलन्नुसूस है, दूसरी कोई फिक़ह नहीं मुदक्कक़ व मुहक्कक़, इमाम रब्बानी हज़रत मुजद्दिद अल्फे सानी रहमतुल्लाहि अलैहि (मबदा व मआद:39) में तहरीर फरमाते हैं:

"बरीं फक़ीर ज़ाहिर साख्ता अन्द कि दर खिलाफियात कलामे हक़ बजानिब हन्फी अस्त व दर खिलाफियात फिक़्ही दर अक्सर मसाईल हक़ बजानिब हन्फी, व दर अक़ल्ल मतरद्दिद"

तरजुमाः– इस फक़ीर पर अल्लाह तआला ने ये हक़ीक़त मुन्कशिफ की है हि इल्मे कलाम के (तमाम) इख्तिलाफी मसाईल में

हक़ मस्लके अहनाफ (यानी मातुरीदीया) की तरफ है और फिक़्ह के अक्सर मसाईल में हक़ बजानिब अहनाफ है और बहुत कम मसाईल में तरद्दुद है (कि किस जानिब है?)

और इमामुल मुस्लिमीन मुस्नदुल हिन्द हज़रत अक़्दस शाह वलीयुल्लाह साहब मुहद्दिस दहलवी रह० फ़ुयूजुल हरमैन में तहरीर फरमाते हैं:

عَرَّفَنِیْ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ اَنَّ فِی الْمَذْھَبِ الْحَنَفِیِّ طَرِیْقَۃً اَنِیْقَۃً ھِیَ اَوْفَقُ الطُّرُقِ بِالسُّنَّۃِ الْمَعْرُوْفَۃِ الَّتِیْ جُمِعَتْ وَنُقِّحَتْ فِیْ زَمَانِ الْبُخَارِیِّ رَحِمَہُ اللّٰہُ تَعَالٰی.

तरजुमा:- मुझे (कश्फ में) आँहुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ये हक़ीक़त समझाई है कि फिक़्हे हन्फी की शक्ल में एक उम्दा तरीक़ा है, जो दीगर तुरुक़ से ज़्यादा हम आहंग उन अहादीसे मशहूरा से जो इमाम बुखारी रह० के ज़माने में जमा की गईं और उनकी तन्क़ीह की गई। (यानी तदवीने हदीस के तीसरे दौर में जो अहादीसे सहीहा मुनक़्क़ह होकर किताबों में मुदव्विन की गईं उनसे फिक़्हे हन्फी बनिस्बत दूसरे फिक़्हों के ज़्यादा हम आहंग है।

हन्फी मज़्हब की आलगीरियत

चूंकि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दीन आलमगीर था, इस लिए आप ने कैसर व किसरा को खुतूत लिखे। रूम, शाम और यमन की फतह की पेशीन गोइयाँ फरमाईं और वह पूरी हुईं, इसी तरह आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पेशगोई भी फरमाई:

یَکُوْنُ ھٰذِہِ الْاُمَّۃِ بعث اِلَی السِّنْدِ وَالْھِنْدِ (مسند احمد: ۲/۳۶۹)

ये उम्मत सिन्ध और हिन्द पर हमला करेगी, चुनान्चे सन्

92 हि० में मुहम्मद बिन क़ासिम सक़फी रह० की सरकरदगी में इस्लामी फौज सिन्ध पर हमलावर हुई और सन् 95 हि० तक सिन्ध मफतूह हो गया, ये बसरा से आये उस वक़्त वहाँ इमाम हसन बसरी रह० (110हि०) की तक़लीद होती थी, बाद में जब इमामे जुफर रह० बसरा पहुँचे तो ये सब लोग हन्फी हो गये, बहर हाल इन फातिहीन सिन्ध में एक भी गैर मुक़ल्लिद न था।

तमाम शाहाने हिन्द हन्फी थे

इसी तरह आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हिन्द के गज़वे का भी ज़िक्र फरमाया था, आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया थाः

عَصَابَتَانِ مِنْ اُمَّتِیْ اَحْرَزَهُمَا اللّٰهُ مِنَ النَّارِ عَصَابَةٌ تَغْزُو الْهِنْدَ وَعَصَابَةٌ تَكُوْنُ مَعَ عِيْسَى بْنَ مَرْيَمَ.

(مسند احمد: ۲/۲۲۹، نسائی: ۲/۶۳)

मेरी उम्मत के दो गिरोहों को अल्लाह तआला ने आग से महफूज़ फरमाया, एक गिरोह जो हिन्द पर जिहाद करेगा, दूसरा हज़रत ईसा इब्ने मरयम अलैहिस्सलाम के साथ होगा।

चुनान्चे इस पेशगोई के मुताबिक़ सन् 392 हि० में सुल्तान महमूद गज़नवी रह० ने हिन्दुस्तान को फतह किया और यहाँ इस्लामी सल्तनत क़ाईम फरमाई।

यहाँ जितने भी मुसलमान खानदान हाकिम रहे, खानदाने गुलामान हों या खानदाने ग़ौरी, खानदाने खिलजी हों या खानदाने सादात, खानदाने तुग़लक़ हों या खानदाने मुग़लिया, सबके सब सुन्नी हन्फी थे। इस मुल्क में इस्लाम, कुरआन और सुन्नत लाने का सहरा सिर्फ और सिर्फ अहनाफ के सर है।

हिन्दी मुसलमान हमेशा हन्फी रहे हैं

चुनान्चे नवाब सिद्दीक़ हसन खाँ ने भी ये ऐतराफ किया है, लिखते हैं:

"खुलासा-ए-हाल हिन्दुस्तान के मुसलमानों का ये है कि जब से यहाँ इस्लाम आया है चूंकि अक्सर लोग बादशाहों के तरीक़ा और मज़हब को पसन्द करते हैं, उस वक़्त से लेकर आज तक ये लोग हन्फी मज़हब पर क़ाईम रहे हैं और इसी मज़हब के आलिम और फाज़िल, क़ाज़ी और मुफ्ती और हाकिम होते रहे हैं।" (तर्जुमाने वहाबिया:10)

चुनान्चे ये बात एक क़तई तारीखी हैसियत है कि इस मुल्क में अंग्रेज़ की हुकूमत से पहले एक भी ग़ैर मुक़ल्लिद का नाम पेश नहीं किया जा सकता, जो इज्तिहाद को कारे इब्लीस तक़लीद को शिर्क कहते हो।

इमाम अबू हनीफा रह० की मक़बूलियत और एक ख्वाब

सैय्यद अली हिजवेरी अल-मारूफ दाता गंज बख्श रह० (465 हि०) उस दिन लाहौर पहुँचे जिस वक़्त हज़रत सैय्यद हुसैन ज़न्जाफी रह० का जनाज़ा तैयार था, वह अपने लाहौर तशरीफ लाने की वजह खुद तहरीर फरमाते हैं:

"कि मैं अली बिन उस्मान जलाली हूँ, अल्लाह तआला मुझे तौफीक़े खैर दे, शाम के शहर दमिश्क में हुजूर अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुअज़्ज़िद हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु की क़ब्र के सरहाने सो रहा था, ख्वाब में देखता हूँ, कि मैं मक्का मुअज़्ज़मा में हूँ, और पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बाबे बनी शैबा से एक पीर मर्द को अपनी गोद में लिए इस हाल

में अन्दर तशरीफ ला रहे हैं कि जिस तरह बच्चों को प्यार से गोद में उठाते हैं, मैं दौड़कर हाज़िरे खिदमत हुआ, और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाँथ पाँव को बोसा देने लगा, और तअज्जुब में था कि ये कौन साहब हैं और ये क्या हालत है? आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर मेरा अन्दरूनी अन्देशा मुन्कशिफ हो गया, और फरमाया अबू हनीफा रह० हैं, जो तुम्हारे भी इमाम हैं, और तुम्हारे अहले मुल्क के भी इमाम हैं, मुझे इस ख्वाब से अपने बारे में भी बड़ी उम्मीद है और अपने अहले मुल्क के बारे में भी (चुनान्चे ये उम्मीद पूरी हुई और ये मुल्क हन्फीयत का गहवारह बन गया) और मुझे इस ख्वाब से ये बात भी साबित हुई कि इमाम आज़म रह० उन हज़रात में से हैं जो अपने अवसाफ तबअ के लिहाज़ से फानी और अहकामे शरा के लिहाज़ से बाक़ी हैं, और इन्ही के ज़रीये क़ायम हैं।"

चुनान्चे उनको लेकर चलने वाले हज़रत पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं, अगर वह अपने आप चलते तो वह बाक़ियुस सिफत होते और बाक़ियुस्सिफत गलत फैसला भी कर सकता है, और सही भी। और जब उनको उठा कर चलने वाले हज़रत पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हुए तो वह पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बक़ाए सिफत की वजह से फानीउस सिफत ठहरे और चूंकि पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर खता की कोई सूरत नहीं बन सकती, याद रहे कि ये एक लतीफ रम्ज़ है।

(कश्फुल महजूब:86)

सुल्तान गौरी से लेकर सैय्यद अहमद शहीद तक

अल-ग़रज़ सन् 589 हि० में सुल्तान माजुद्दीन साम ग़ौरी

आए और दिल्ली तक सल्तनत पर क़बिज़ हो गए, उस वक़्त से लेकर सन् 1273 हि० तक आप इस मुल्क के हालात पढ़ जाईये, महमूद गज़नवी से लेकर औरंगज़ेब आलमगीर बल्कि सैय्यद अहमद शहीद बरेलवी रह० तक आप को कोई ग़ैर हन्फी ग़ाज़ी, फातेह, या मुजाहिद नहीं मिलेगा।

अहले कशमीर का मज़्हब

कशमीर के बारे में मुवर्रिख फरिशता के अलफाज़ ये हैं:

"रिआया आन मुल्क कुल्लुहुम अजमईन हन्फी मज़हब अन्द" (तारीखे फरिशता:337)

और इस से क़ब्ल तारीखे रशीदी के हवाले से लिखते हैं:

"मिर्ज़ा हैदर दर तारीख रशीदी नविश्ता कि मर्दुमे कशमीर तमाम हन्फी मज़बह बूदह अन्द" (तारीखे फरिशता:336)

दीगर इस्लामी ममालिक का मज़्हब

हज़रत शेख अब्दुल हक़ साहब मुहद्दिस देहलवी रह० फरमाते हैं:

"اهل الروم وماوراء النهر والهند كلهم حنفيون"

(تحصيل التعرف:٤٦)

और हज़रत मुजद्दिद अल्फे सानी रह० फरमाते हैं।

"स्वादे आज़म अज़ अहले इस्लाम मुताबिआने अबी हनीफा अलैहिमुर्रिज़वान" (मकतूब:55 दफ्तरे दोम)

इस्लाम का स्वादे आज़म (सबसे बड़ी जमाअत) इमाम अबू हनीफा रह० के मुत्तबा रहे हैं।

शाव वलीयुल्लाह मुहद्दिस देहसली रह० फरमाते हैं:

"दर जमीअ बुल्दान व जमीअ अक़ालीम बादशाहाँ हन्फी

अन्द व कुज़ात अक्सर मुदर्रिसाँ व अक्सर अवाम हन्फी"

(कलिमाते तय्यिबात:77)

तमाम शहरों में तमाम मुल्कों में हन्फी बादशाह होते हैं, अक्सर क़ाज़ी और अक्सर मुदर्रिसीन और अवाम भी हन्फी रहे हैं।

नीज़ फरमाते हैं:

"जम्हूरूल मुलूक व आम्मतुल बुलदान मुतमज़हबीन ब मज़हबे अबी हनीफा" (तफहीमाते लहू:212/1)

यानी अक्सर सलातीन इस्लाम और दुनिया भर में अक्सर अहले इस्लाम हन्फी हैं, इस्लामी दुनिया के गालिब हिस्सा में अलमे जिहाद इन्हीं के हाथों में रहा, इसी मज़हब की बदौलत कम व बेश हज़ार साल तमाम इस्लाम दुनिया में इस्लामी निज़ाम नाफिज़ रहा।

घर की वज़नी शहादत

सन् 228 हि० में जब खलीफा वासिक़ बिल्लाह अल-अब्बासी ने सद्दे सिकन्दरी का हाल दरयाफ्त करने के लिए कुछ लोग भेजे तो उन्हों ने वहाँ के लोगों को हन्फीयुल मज़हब पाया, चुनान्चे नवाब सिद्दीक़ हसन खाँ साहब बहवाला मसालिकुल ममालिक लिखते हैं कि:

محافظان سد کہ دراں جا بودند ہمہ دین اسلام داشتند و مذہب حنفی و زبان عربی و فارسی می گفتنگ اما از سلطنت عباسیہ بے خبر بودند"

(رياض المرتاض:٢١٦، بحواله خير التنقيد:٢٣)

सिकन्दरी के मुहाफिज़ (बाशिन्दे) भी मुसलमान और हन्फीयुल मज़हब थे और अरबी व फारसी ज़बान बोलते थे, मगर सल्तनते अब्बासिया से बे खबर थे।

हिन्द व पाक में इस्लाम अहनाफ ही ने फैलाया

शाह वलीयुल्लाह रह० ने मज़हबे हक़ की पहचान ये बताई है कि दीने इस्लाम इशाअत के साथ दीने इस्लाम पर हमलावर फितनों का मुक़ाबला करे, तो ज़ाहिर है कि पाक व हिन्द में अशाअते इस्लाम में अहनाफ का कोई शरीक नहीं रहा, सारे मुल्क में इस्लाम अहनाफ ने ही फैलाया और काफिर इस्लाम में दाखिल होकर हन्फी ही बने।

फित्ना-ए-अकबरी और फित्ना-ए-अंग्रेज़ का मुक़ाबला अहनाफ ही ने किया

इस मुल्क में इस्लाम पर दो ही सख्त वक़्त आए हैं, एक अकबर का इलहादी फित्ना, दूसरे अंग्रेज़ का तसल्लुत।

अकबर ने जब इमाम साहब रह० की तक़लीद से बरगश्ता करके लोगों को इलहाद की दावत दी तो हज़रत मुजद्दिद अल्फे सानी और शेख अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि अलैहिमा की काविशों (कोशिशों) से वह इलहाद मिट गया, और अंग्रेज़ के खिलाफ भी हन्फी ही उठे। नवाब सिद्दीक़ हसन गैर मुक़ल्लिद लिखते हैः

"किसी ने न सुना होगा कि आज तक कोई मुवह्हिद मुत्तबा-ए-सुन्नत हदीस व कुरआन पर चलने वाले ने (अंग्रेज़ से) बेवफाई और क़रार तोड़ने का मुरतकिब हुआ, या फित्ना-ए-इब्लीसी और बग़ावत पर आमादा हुआ, जितने लोगों ने उज़्र शर्रो फसाद किया और हुक्काम इंगलिशीया से बर सरे इनाद हुए, वह सब के

सब मुक़ल्लिदीन मज़हब हन्फी थे।" (तर्जुमाने वहाबिया:25)

हन्फी सलातीन और इस्लाम

अल्लामा अलाउद्दीन रह० ने मदीना मुनव्वरह में रौज़ाए पाक पर बैठ कर एक जामे और मुकम्मल किताब "दुर्रे मुख्तार" तहरीर फरमाई, इसमें लिखते हैं:

अल-हासिल कुरआने पाक के बाद इमाम अबू हनीफा रह० रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का बहुत बड़ा मोजिज़ा है और उसकी यही दलील काफी है कि दुनिया में सबसे ज़्यादा आप का ही मज़हब फैला, और दूसरी दलील ये है, इमाम साहब ने कोई कौल ऐसा न फरमाया जो किसी न किसी इमाम का मज़हब न हो (यानी सब अइम्मा आप ही के खोशाचीं हैं) और तीसरी दलील ये है कि इमाम साहब रह० के ज़माने से आज तक सल्तनत और क़ज़ा के उहदे उनके मुक़ल्लिदीन के पास रहे हैं, अल्लामा शामी रह० इस की शरह में फरमाते हैं कि खिलाफते अब्बासिया जिन की मुद्दते हुकूमत तक़रीबन पाँच सौ साल है उसमें अक्सर क़ाजी और मशाइख (यानी शेखुल इस्लाम) हन्फी थे, जैसा कि कुतुबे तवारीख इसकी शाहिद हैं, उन्के बाद सलातीन सलजूक़ी और ख्वारज़मी सब के सब हन्फी थे, और खिलाफत उस्मानिया में भी हन्फी थे, और उनके क़ाज़ी भी हन्फी थे, यानी शामी के ज़माने तक नौ सौ साल के सलातीन इस्लाम हन्फी गुज़रे हैं, हज़रत शाह वलीयुल्लाह रह० भी फरमाते हैं:

"दर जमीअ बुलदान व जमीअ अक़ालीम बादशाहाँ हन्फी अन्द व कुज़ात अक्सर मदरसाँ व अक्सर अवाम हन्फी"

(कमालाते तय्यिबात:177)

यानी तमाम मुल्कों और शहरों में बादशाह हन्फी हैं और

अक्सर क़ाज़ी अक्सर मुदर्रिसीन और अक्सर अवाम हन्फी हैं।

अल-गरज़ दूसरी सदी से चौदहवीं सदी के वस्त तक तक़रीबन बारह सौ साल हरमैन शरीफैन के खादिम हन्फी रहे, उसके बाद से आज तक हन्बली हैं।

अहले कुरआन और अहले हदीस को कभी अल्लाह तआला ने हुकूमत अता करके खिदमते हरमैन शरीफैन का मौक़ा नहीं दिया, उनकी हुकूमत तो कुजा उनका वुजूद ही इन मुक़द्दस शहरों में नहीं था।

अल-गरज़ आप तारीखे इस्लाम का मुताला करेंगे तो इस्लामी इक़्तिदार का निशान आप को हन्फी ही मिलेंगे।

दश्त दो दश्त हैं दरया भी न छोड़े हम ने
बहरे जुल्मात में दौड़ा दिए घोड़े हम ने।

किसी मुन्किरे हदीस या मुन्किरे फिक़्ह (गैर मुक़ल्लिद) ने एक इंच ज़मीन भी काफिर से छीन कर कभी इस्लामी सल्तनत में शामिल नहीं की, उनका जिहाद सिर्फ यही है कि अहनाफ का न इस्लाम सही है और न नमाज़, मज़हबे हन्फी इतना गन्दा मज़हब है कि हिन्दू, सिख, ईसाई, मजूसी, यहूदी सब काफिर भी इससे पनाह माँगते हैं, देखो मोलवी मो० यूसुफ जयपुरी की किताब "हक़ीक़तुल फिक़्ह" और मोलवी मो० रफीक़ पसरौरी का रिसाला "शमशीर मुहम्मदीया बर अक़ाइद हन्फीया" और "शमअे मुहम्मदी" अगर ये तमाम अहनाफ नऊज़ु बिल्लाह काफिर व मुश्रिक है, जैसा कि गैर मुक़ल्लिदीन शोर मचा रहे हैं, तो फिर मुसलमान कौन है, दीन व ईमान कहाँ बाक़ी रहा। अल-अयाज़ु बिल्लाह

बाज़ जलीलुल क़द्र
हन्फी अइम्मा
और
मुहद्दिसीने इज़ाम

अहनाफ में बड़े बड़े अइम्मा, मुहद्दसीन, फुक़हा गुज़रे हैं, और कुरआन व हदीस की बड़ी खिदमत उन्हों ने अन्जाम दी है, और दे रहे हैं। सिहाह सित्ता के मुसन्निफीन अक्सर इमाम अबू हनीफा रह० के शागिरदों के शागिरद हैं, यहाँ इख्तिसार की वजह से बाज़ अइम्मा हदीस का ज़िक्र किया जाता है:

(1)·····क़ाज़ी इस्माईल बिन अल-नस्फी अल-कन्दी रह० (मतवफ्फा बाद 164 हि०) फिक़्ह में हज़रत इमाम अबू हनीफा रह० के मुत्तबा थे। अहले मिस्र उनसे पहले इमाम अबू हनीफा के मज़हब से शनासा न थे, सन् 164 हि० में उन्हें मिस्र का क़ाज़ी मुक़र्रर किया गया था।

(अल-जवाहिरूल मुज़ीया:16/1)

(2)·····इमाम लैस बिन सअद रह० (मतवफ्फा 175 हि०) जो अक्सरूल इल्म वल-हदीस और सिक़ा व सबत थे। (अल-तहज़ीब:61/8) और अपने ज़माने में मिस्र के सबसे बड़े मुफ्ती यही थे। (अल-अस्मा वल्लुग़ात लिन्नववी:74/1) नवाब सिद्दीक़ खाँ साहब लिखते है: कि "वे हनफी मज़हब बूव्वद व क़ज़ा-ए-मिस्र दाश्त। (इत्तिहाफ:237)

(3)·····इमाम अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० (मतवफ्फा 181 हि०) जो अल-इमाम, अल-अल्लामा, अल-हाफिज़ और शेखुल इस्लाम थे। (तज़किरातुल हुफ्फाज़:353/1) अल्लामा अबुल वलीद अल-बाजी अल-मालिकी रह० (मतवफ्फा 494 हि०) फरमाते हैं: कि इमाम अबू हनीफा र० के असहाब व मुक़ल्लिदीन में इमाम इब्नुल मुबारक रह० भी हैं। (शरहुल मुअत्ता:300/7 तबा मिस्र) और इमाम

सदरूल अइम्मा अल-मक्की (मतवफ्फा 568 हि०) और मौला अहमद बिन मुस्तफा अल-मारूफ बताशे कुबरा ज़ादा रह० (मतवफ्फा 962 हि०) लिखते हैः कि “अइम्मा हन्फीया में से एक इमाम अब्दुल्लाह इब्नुल मुबारक रह० हैं। (मनाक़िबे मुवफ्फिक़ः133/2, व मिफ्ताहुस सादतिः112/2)

(4)……इमाम वकीअ इब्नुल जर्राह रह० (मतवफ्फा 197 हि०) जो अल-इमाम, अल-हाफिज़ और अल-सबत थे। (तज़किरहः282/1)

كان يفتى برائى ابىِ حنيفة (جامع بيان العلم:۲/۱۴۹)

كان يفتى بقول ابى حنيفة (تذکرہ:۲۸۲/۱، وتهذیب التهذیب:۱/۱۲۷)

कि वह हज़रत इमाम अबू हनीफा रह० की राय ओर उनके क़ौल पर फत्वा दिया करते थे, मौलाना मुबारकपुरी साहब रह० ने अज़ राहे तअस्सुब इमाम वकीअ इब्नुल हर्राह के हन्फी होने का इन्कार किया है, और ठोस तारीखी हवालों को मस्ख करते हुए उसकी ये तावील की है कि उनका इज्तिहाद हज़रत इमाम अबू हनीफा रह० के इज्तिहाद के मुताबिक़ हो जाया करता था, न ये कि वह इमाम अबू हनीफा रह० के क़ौल और राय पर फत्वा देते थे। (मुहस्सला तोहफतुल अहवज़ीः7/1) लेकिन ये तावील सरासर बातिल है, इस लिए कि अगर उनका इज्तिहाद, हज़रत इमाम अबू हनीफा रह० के इज्तिहाद के मुताबिक़ होता तो इबारत यूँ होतीः

”يفتى كرائى ابى حنيفته وكقول ابى حنيفة“

लेकिन अ़लफाज़

”برائى ابى حنيفة وبقول ابى حنيفة“

हैं, जिसके माने ये हैं कि वह इमाम साहब रह० की राय

और उनके क़ौल पर फत्वा दिया करते थे, इमाम इब्ने अब्दुल बर्र अल-मालिकी के अल्फ़ाज़ ये हैं: कि

كَانَ يُفْتِيْ بِرَايِ اَبِيْ حَنِيْفَةَ وَكَانَ يَحْفَظُ حَدِيْثَهٗ كُلَّهٗ وَكَانَ قَدْ سَمِعَ مِنْ اَبِيْ حَنِيْفَةَ حَدِيْثًا كَثِيْرًا" (جامع بيان العلم وفضله: ۲/۱۴۹، طبع مصر)

तर्जुमाः- हज़रत इमाम वकीअ इब्नुल जर्राह हज़रत इमाम अबू हनीफा रह० की राय पर फतवा दिया करते थे और उनकी सब हदीसें उनको याद थीं। और इमाम अबू हनीफा रह० से बहुत सी हदीसें इमाम वकीअ रह० ने सुनी थीं।

अल-गरज़ इमाम वकीअ इब्नुल जर्राह हज़रत इमाम अबू हनीफा के शागिर्द भी थे, और उन्हीं की राय और क़ौल पर फत्वा भी देते थे।

(5)......इमाम यहया बिन सईद अल-क़त्तान रह० (मतवफ्फा 198 हि०) जो इमामुल क़लम, और सय्यिदुल हुफ्फ़ाज़ थे। (तज़किरहः274/1) वह भी **يفتى بقول ابى حنيفة** (तज़किरहः282/1, तहज़ीबुत तहज़ीबः450/2, अल-जौहरूल मुज़ीय्याः209/2) हज़रत इमाम अबू हनीफा के क़ौल पर फतवा दिया करते थे, और खुद इमाम यहया बिन सईद अल-क़ितान का बयान है कि हम अल्लाह तआला की (नेमतों की) तकज़ीब नहीं करते, हमने हज़रत इमाम अबू हनीफा रह० की राय से बहतर राय किसी की नहीं देखी और बेशक हमने उनके अक्सर अक़वाल लिए हैं। (तारीखे बगदादः345/13)

(6)......इमाम यहया बिन ज़करया बिन अबी ज़ायदा रह० (मुतवफ्फा 182 हि०) जो अल-हाफिज़ अल-मुतकिन अल-सबत और फक़ीह थे। (तज़किरहः246/1) वह भी हज़रत इमाम अबू हनीफा के मुक़ल्लिद और पैरू थे।

("صاحب ابی حنیفة ایضاً" اور "من الائمة الحنیفة، ومن اصحاب ابی حنیفة" थे)(مفتاح السعادة:۲/۱۱۹، ومناقب کردری:۲/۴۰۶)

(7).....इमाम यहया बिन मुईन रह० (मुतवफ्फा 233 हि०) इमामुल जिरह वत्तादील जो الثقة المامون और احد الائمة الثقات थे। (तारीखे बग़दाद:182/14)

और हाफिज़ इब्ने हजर रह० लिखते हैं कि वह इमामुल जिरह वत्तादील और ऐसे आलिम थे जिन की राय अहादीस में इक़्तिदा की जाती थी, और वह ऐसे इमाम थे जो इल्मे हदीस में मरजा-ए-खलाइक़ थे।

(तहज़ीबुत तहज़ीब:288/1)

अल्लामा ज़हबी रह० फरमाते हैं कि इमाम इब्ने मुईन ग़ाली हन्फियों में शुमार किये जाते हैं, मगर बईं हमा वह मुहद्दिस भी थे। (अल-रूवातुस सिक़ातुल मुतकल्लिमु फीहिम बिमा ला यूजबु रद्दुहुम:7, तबाअ मिस्र सन् 1324 हि०)

और खुद इमाम इब्ने मुईन का बयान है कि क़िरात मेरे नज़दीक हज़रत इमाम हम्ज़ा की और फिक़्ह इमाम अबू हनीफा ही की मोतबर है, इसी पर बस मैंने लोगों को पाया है।

(तारीखे बग़दाद:347/12)

उनका हन्फी होना एक वाज़ेह हक़ीक़त है।

(फैज़ुल बारी:169/1, मुक़द्दमा नसबुर्राया:42)

लतीफा-ए-इल्मीया

नाक़िद फन्ने रिजाल जिन के बाद आज तक अस्माउर्रिजाल पर ऐसा उबूर रखने वाला कोई और शख्स पैदा नहीं हुआ, अल्लामा ज़हबी रह० फरमाते हैं कि अपने दौर में इल्मे (हदीस) का मदार तीन बुज़ुर्गों पर थाः हज़रत इमाम यहया बिन सईद

अल-क़त्तान रह०, हज़रत इमाम यहया बिन ज़करया बिन अबी ज़ायदा रह०, हज़रत इमाम वकीअ इब्नुल जर्राह रह०।

(तज़किरहः328/1)

और इमाम अली इब्नुल मदीनी फरमाते हैं कि अपने दौर में इल्म यहया बिन ज़करया बिन अबी ज़ायदा रह० पर खत्म था।

(अखबारे अबू हनीफा व अस्हाबुहूः150)

बिहम्दिल्लाहि तआला ये तीनों बजुर्ग मुकल्लिद थे, और मुक़ल्लिद भी इमाम अबू हनीफा के, अगर हज़रत इमाम अबू हनीफा रह० इल्मे हदीस व फिक़्ह से बेबहरा होते तो ये हज़रात कभी उनकी तक़लीद न करते और न उनकी राय और क़ौल पर फत्वा देते। अल्लामा ज़हबी और अल्लामा जज़ाइरी रह० फरमाते हैं कि रिवायत पर जिरह व तादील सबसे पहले हज़रत यहया बिन सईद अल-क़त्तान रह० ने की, फिर उनके बाद उनके तलामिज़ह ने। (मीज़ानुल ऐतदालः2/1, तौजीहुन्नज़रः113)

गोया फन्ने हदीस की सेहत व सुकुम का आलमे असबाब में मदार हज़रत यहया बिन सईद अल-क़त्तान रह० पर है जो मुक़ल्लिद और हन्फी थे। गैर मुक़ल्लिदीन हज़रात का ये शोशा (कि अहनाफ को हदीस से कोई लगाव और तअल्लुक़ न था, बल्कि वह सिर्फ फिक़्ह के दिलदादह थे) सरासर बातिल है।

इस लिए अपने दौर में इल्मे हदीस का मरकज़ भी उलमा -ए-अहनाफ ही थे, और हदीस की तसहीह व तज़ईफ के क़ाइम करदा उसूल भी उन्हीं हज़रात के मुसल्लम चले आ रहे हैं।

सहीह बुखारी शरीफ

सहीह बुखारी शरीफ को इमाम बुखारी से गो हज़ारों आदमियों ने सुना लेकिन इमाम मौसूफ के जिन तलामिज़ह से

सहीह बुखारी शरीफकी रिवायत का सिलसिला चला वह चार बुज़ुर्ग हैं।

(1)·····इब्राहीम बिन माक़िल बिन हज्जाज अल-नस्फी रह० (मुतवफ्फा 294 हि०) जामेअ अयनल हदीस वल फिक़्ह हन्फी बुज़ुर्ग थे, हाफिज़ अब्दुल क़ादिर क़रशी ने "अल-जवाहिरूल मज़ीया फी तराजिमिल हन्फीया" में उन का ज़िक्र फरामाया है।

(2)·····हम्माद बिन शाकिर अल-नस्फी अल-हन्फी 311 हि० (ताजुल उरूश)

(3)·····मुहम्मद बिन यूसुफ अल-फरबरी 320 हि०

(4)·····अबू तल्हा मन्सूर बिन मुहम्मद बिन अली अ-बज़दवी 329 हि०

इन चारों में से कोई भी गैर मुक़ल्लिद नहीं था कि किसी तारीख में लिखा हो कि वह न इज्तिहाद की अहलियत रखता था और न तक़लीद करता था।

सहीह मुस्लिम

इमाम मुस्लिम रह० ने अपनी जामे सहीह का इन्तिखाब तीन लाख अहादीस से फरमाया, अगर्चे इस किताब को बहुत से हज़रात ने पढ़ा मगर उस की रिवायत का सिलसिला जिस बुज़ुर्ग के दम क़दम से क़ायम हुआ, वह मशहूर हन्फी फक़ीह शेख अबू इस्हाक़ इब्राहीम बिन मुहम्मद बिन सुफयान नीशापुरी रह० (308 हि०) हैं, ये मशहूर हन्फी फक़ीह व ज़ाहिद अय्यूब इब्नुल हसन नीशापुरी रह० हन्फी के ख्वास असहाब में से हैं, जिन्हों ने फिक़्ह की तालीम बराहे रास्त इमाम मुहम्मद रह० से हासिल की थी, बड़े आबिद, ज़ाहिद और मुस्तजाबुद्दावात थे, जो लोग तक़लीदे

शख्सी को शिर्क कहते हैं उनको मुस्लिम का कोई गैर मुक़ल्लिद रावी तलाश करना चाहिए, हमें फख्र है कि हदीस की इस मुक़द्दस किताब की रिवायत भी ऐसे हन्फी बुजुर्ग से हुई जो जामे हदीस व फिक़्ह के साथ जामे बयनश शरीअत वत्तरीक़त भी थे।

मालूम हुआ कि सहीहैन बुखारी शरीफ व मुस्लिम शरीफ की रिवायत व इशाअत का सहरा भी अहनाफ ही के सर है। فالحمد لله على ذلک

खिदमाते जलीला

आज भी तमाम आलम में इशाअते दीन का सहरा मुक़ल्लिदीन बिल खुसूस उलमा-ए-अहनाफ ही के सर है, तमाम आलम में मदारिसे इस्लामिया और मकातिबे कुरआनिया के बानियान को देखा जाए कौन हैं? अक्सर अहनाफ ही मिलेंगे।

तमाम आलम में दावत व तबलीग़ के नाम पर जो मेहनत हो रही है जिसका नफा सूरज से ज़्यादा रोशन है वह भी अहनाफ ही कर रहे हैं।

कुतुबे हदीस व तफसीर की इशाअत करने वाले भी हिन्द व पाक में बिल खुसूस अहनाफ ही हैं।

कुरआने पाक के तराजिम व तफासीर में भी अहनाफ का बड़ा हिस्सा है।

कुतुबे हदीस के हवाशी और उनकी शुरूहात अक्सर व बेशतर मुक़ल्लिदीन बिल खुसूस अहनाफ ही की हैं।

दर्स व तदरीस के ज़रीए उलमाए अहनाफ जो कुरआने पाक और हदीस पाक की खिदमात अन्जाम दे रहे हैं, उसमें उनकी कोई नज़ीर नहीं, देखिए अहनाफ के मदारिसे इस्लामिया जिन में कितनी बड़ी तादाद में दौरह-ए-हदीस शरीफ होता है।

और सिहाह सित्ता को पढ़ कर कितनी बड़ी तादाद तलबा की हर साल फराग़त हासिल करती है।

दीन व इस्लाम, कुरआन व हदीस की जलीलुल क़द्र खिदमात अन्जाम देने वालों को बद दीन, बद मज़हब, गुमराह, फासिक़ व फाजिर बल्कि काफिर व मुश्रिक बताना क्या ये भी कोई दीन की खिदमत हो सकती है।

ये दीन की दोस्ती है या दुशमनी?

हर ज़ी अक़्ल फैसला कर सकता है, दीन के ये खुद्दाम अगर अल्लाह के औलिया नहीं तो फिर कौन औलिया अल्लाह हैं, औलिया अल्लाह से दुशमनी कितनी खतरनाक है, हदीस पाक में इरशाद है।

"مَنْ عَادٰی لِیْ وَلِیًّا فَقَدْ اٰذَنْتُهٗ بِالْحَرْبِ"

तर्जुमाः- जो शख्स मेरे किसी वली से दुशमनी करे, मेरी तरफ से उसके लिए ऐलाने जंग है।

और अल्लाह की तरफ से जिस के लिए ऐलाने जंग हो वह कैसे नजात पा सकता है।

सहीह बुखारी शरीफ

और

ग़ैर मुक़ल्लिदीन

अर्जे मुरत्तिब

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّی عَلٰی رَسُوْلِهِ الْکَرِیْمِ. اَمَّا بَعْدُ!

गैर मुक़ल्लिदीन जो अपने आपको अहले हदीस कहते हैं और अपने मासिवा तमाम मुसलमानों को तारिके हदीस, बद मज़हब कहते हैं। बद दीन, काफिर, मुशरिक, ग़ैर नाजी क़रार देते हैं।, हक़ीक़त में ये लोग खुद अहले हवा हैं, हदीसे पाक के बजाय अपनी हवाए नफसानी के मुत्तबा हैं, जो चीज़ें अपने हवाए नफसानी के खिलाफ हों, ख्वाह कैसी ही सही हदीस से साबित हों, उनका साफ इन्कार कर देंगे, यूँ तो बात बात में बुखारी शरीफ का नाम लेते हैं, मगर जो चीज़ें उनकी हवाए नफसानी के खिलाफ हों ख्वाह वह बुखरी शरीफ में हों या मुस्लिम शरीफ में हों, उनका साफ इन्कार कर देंगे, बल्कि उन पर अमल करने वालों का मज़ाक़ बनाएंगे।

उम्मत का इस पर इज्मा है कि "सहीह बुखारी" किताबुल्लाह के बाद असह्हुल कुतुब है और ये मुतक़द्दिमीन और मुतअख्खिरीन सब में यकसाँ मक़बूल चली आ रही है, उलमा इस के दर्स व तदरीस और उस की शरह व तहक़ीक़ को हर दौर में अपनी ज़िन्दगी का मश्ग़ला बनाते रहे हैं, और ज़िन्दगी का एक बड़ा हिस्सा इस में सर्फ करते रहते हैं, यक़ीनन ये किताब बहुत

बड़ा अमली कारनामा है, जिस पर मुसलमान बजा तौर पर फख़ कर सकते हैं। शीआ, मुन्किरीने हदीस और बर्रे सग़ीर के ग़ैर मुक़ल्लिदीन के अलावा किसी ने भी इस के मुन्दरजात से इन्कार नहीं किया है।

अरब ममालिक के उलमा के सामने गैर मुक़ल्लिदीन इमाम बुखारी और उनकी किताब के साथ अपनी मुहब्बत व अक़ीदत का बड़ा शद्दो मद के साथ इज़हार करते हैं, बज़ाहिर हर ग़ैर मुक़ल्लिद बुखारी का मतवाला नज़र आता है, जब कोई बात हो तो बुखारी, जब किसी हदीस का ज़िक्र हो तो बुखारी, हर एक के मुंह पर बुखारी की रट है, हर एक सबसे पहले बुखारी का हवाला मांगता है, गोया उनके नज़दीक बुखारी के अलावा हदीस की कोई और किताब ही नहीं, लेकिन हक़ीक़त ये है कि ग़ैर मुक़ल्लिदीन की बुखारी से अक़ीदत सिर्फ ज़बानी जमा खर्च तक महदूद है, क्योंकि जब उन्हें बुखारी शरीफ से उनके मौक़िफ के खिलाफ हदीसें दिखलाई जाती हैं, और उन के मौक़िफ के बरअक्स इमाम बुखारी रह० का इज्तिहाद दिखलाया जाता है, तो उन की सारी अक़ीदत काफूर हो जाती है, बुखारी शरीफ में सैकड़ों अहादीस ऐसी हैं जिन पर ग़ैर मुक़ल्लिदीन अमल नहीं करते, और इमाम बुखारी रह० के बीसयों इज्तिहादात ऐसे हैं जिन्हें ग़ैर मुक़ल्लिदीन मानने के लिए राज़ी नहीं, इस मुख्तसर रिसाला में दो बाब रखे गए हैं, बाबे अव्वल में ग़ैर मुक़ल्लिदीन के नज़दीक बुखारी शरीफ का मर्तबा बयान किया गया है, ग़ैर मुक़ल्लिदीन उलमा के हवालजात पेश किये गए हैं, जिन से बखूबी वाज़ेह हो जाता है कि ग़ैर मुक़ल्लिदीन के नज़दीक बुखारी शरीफ का मर्तबा क्या है?

बाबे दोम में **25** अहादीस बतौर नमूना बयान की गई हैं,

ग़ैर मुक़ल्लिदीन जिन की खुल्लम खुल्ला मुखालिफत करते है, और कभी भी उन पर अमल नहीं करते, जिस से अहादीसे सहीहा से बुग्ज़ व इनाद ज़ाहिर हो जाता है, और अहले हदीस नाम की क़लई खुल जाती है कि हाथी के दिखाने के दाँत और हैं और खाने के और।

उम्मीद कि अहले इन्साफ हज़रात के लिए ये रिसाला बहुत काफी होगा, अल्लाह पाक कुबूल फरमाये और हम सब को सिराते मुस्तक़ीम पर चला जाए और नफ्स से और उस के ज़ैग़ व ज़लाल से हिफाज़त फरमाए। आमीन!

मुहम्मद फारूक़ गुफिरा लहू

22/6/1422 हि०

बाबे अव्वल

ग़ैर मुक़ल्लिदीन के नज़दीक बुखरी शरीफ का मर्तबा

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّی عَلٰی رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ. اَمَّا بَعْدُ!

बखारी शरीफ आग में

(अल-अयाज़ु बिल्लाह)

मशहूर सहाफी अख्तर कशमीरी अपने सफर नामा ईरान में लिखते हैं:

इस सेशन के आखिरी मुक़र्रिर गूँजरावाला के अहले हदीस आलिम मौलाना बशीरूर्रहमान मुस्तहसिन थे, मौलाना मुस्तहसिन बड़ी क़िस्म की चीज़ें हैं, इल्मे मुहीत (अपने मौजू पर नाक़िल) जिस्मे बसीत के मालिक उनका अन्दाज़े तकल्लुम जिद्दत आलूद और गुफतुगू रफ होती है, फरमाने लगे:

अब तक जो कुछ कहा गया है वह क़बिले क़द्र ज़रूर है, क़ाबिले अमल नहीं, इख्तिलाफ खत्म करना ज़रूरी है, मगर इख्तिलाफ खत्म करने के लिए असबाबे इख्तिलाफ को मिटाना होगा, फरीक़ैन की जो कुतुब क़ाबिले ऐतराज़ हैं उनकी मौजूदगी इख्तिलाफ की भट्टी को तेज़ कर रही है, क्यों न हम उन असबाब ही को खत्म करदें? अगर आप सिद्क़ दिल से इत्तिहाद चाहते हैं तो इन तमाम रिवायात को जलाना होगा, जो एक दूसरे की दिल

आज़ारी का सबब हैं, हम बुखारी को आग में डालते हैं, आप "उसूले काफी" को नज़रे आतिश करें, आप अपनी फिक़ह साफ करें, हम अपनी फिक़ह (मुहम्मदी नाक़िल) साफ कर देंगे।

(अखतर कशमीरी, आतिश कदह ईरानः109)

नवाब वहीदुज़्ज़माँ साहब की इमाम बुखारी रह० पर तन्क़ीद

नवाब वहीदुज़्ज़माँ साहब इमाम बुखारी रह० पर तन्क़ीद करते हुए लिखते हैंः

इमाम जाफर सादिक़ मशहूर इमाम हैं बारह इमामों में से, और बड़े सिक़ह और फक़ीह इमाम मालिक रह० और इमाम अबू हनीफा रह० के शेख हैं, और इमाम बुखारी रह० को मालूम नहीं क्या शुबह हो गया कि वह अपनी सहीह में उन से निवायत नहीं करते, अल्लाह तआला इमाम बुखारी पर रहम करे, मरवान और इमरान बिन हत्तान और कई ख्वारिज से तो उन्हों ने रिवायत की और इमाम जाफर सादिक़ रह० से जो इब्ने रसूलुल्लाह हैं उन की रिवायत में शुबह करते हैं। (लुग़ातुल हदीसः61/1)

एक दूसरे मक़ाम पर रक़म्तराज़ हैंः

और बुखारी रह० पर तअज्जुब है कि उन्होंने इमाम जाफर सादिक़ रह० से रिवायत नहीं की और मरवान वगैरह से रिवायत की जो आदा-ए-अहले बैत अलैहिमुस्सलाम थे।

(लुग़ातुल हदीसः39/2)

नवाब वहीदुज़्ज़माँ साहब की बुखारी शरीफ के एक रावी पर सख्त तन्क़ीद

नवाब वहीदुज़्ज़माँ साहब बुखारी शरीफ के एक रावी

मरवान इब्नुल हकम पर तन्क़ीद करते हुए लिखते हैं:

"हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु को जो कुछ भी नुक़सान पहुँचा वह इसी कम्बख्त शरीरून्नफ्स मरवान की बदौलत पहुँचा, खुदा उसे समझे।" (लुग़ातुल हदीसः213/2)

बुखारी शरीफ हकीम फैज़ आलम की नज़र में

इमाम बुखारी रह० ने वाक़िआ-ए-इफ्क से मुतअल्लिक़ जो अहादीस बुखारी शरीफ में ज़िक्र की हैं उनकी तरदीद करते हुए हकीम फैज़ आलम लिखते हैं:

"उन मुहद्दिसीन, उन शारिहीने हदीस, उन सीरत नवेस और उन मुफस्सिरीन की तक़लीदी ज़हनीयत पर मातम करने को जी चाहता है जो इतनी बात का तजज़िया या तहक़ीक़ करने से भी आरी थे कि ये वाक़िआ सिरे से ही ग़लत है, लेकिन इस दीनी व तहक़ीक़ी जुरअत के फुक़दान ने हज़ारों अल्मिये पैदा किये और पैदा होते रहें गे।

हमारे इमाम बुखारी रह० ने अपनी सहीह बुखारी में जो कुछ दर्ज फरमाया है वह सही और लारैब है, ख्वाह इस से अल्लाह तआला की उलूहियत, अन्बिया-ए-किराम की इस्मत, अज़वाजे मुतह्हरात की तहारत की फिज़ा-ए-बसीत में धज्जियाँ बिखरती चली जाएं, क्या ये इमाम बुखारी की उसी तरह तक़लीदे जामिद नहीं जिस तरह मुक़ल्लिदीन अइम्मा-ए-अरबा की तक़लीद करते हैं।" (सिद्दीक़ा-ए-कायनातः106)

हकीम फैज़ आलम के नज़्दीक इमाम बुखारी वक़िआ-ए-इफ्क की रिवायत में मरफूउल क़लम हैं।

हकीम फैज़ आलम लिखते हैं:

"दर अस्ल इमाम बुखारी मेरे नज़दीक इस रिवायत के मुआमले में मरफ़ूउल क़लम हैं, दासतान गो की चाबुक दस्ती के सामने इमाम बुखारी रह० की अहादीस के मुतअल्लिक़ तमाम छान बीन धरी की धरी रह गई।" (सिद्दीक़ा-ए-कायनातः106)

ग़ैर मुक़ल्लिदीन ज़रा सोच कर जवाब दें कि जब इमाम बुखारी रह० की इस अज़ीम वाक़िआ के मुतअल्लिक़ अहादीस की छान-बीन धरी की धरी रह गई तो दीगर अहादीस के मुतअल्लिक़ उनकी छान-बीन का ऐतबार क्योंकर होगा।

बुखारी शरीफ में मौज़ू रिवायात

हकीम फैज़ आलम तहरीर करते हैं किः

"अब एक तरफ बुखारी की 9 साल वाली रिवायत है और दूसरी तरफ इतने क़वी शवाहिद हैं, इस से साफ नज़र आता है कि 9 साल वाली रिवायत एक मौज़ू क़ौल है, जिसे हम मन्सूब इलस सहाबा के सिवा कुछ नहीं कह सकते।" (सिद्दीक़ा-ए-कायनातः80)

बुखारी शरीफ के एक मरकज़ी रावी पर हकीम फैज़ आलम की जिरह व तन्क़ीद

हकीम फैज़ आलम बुखारी शरीफ के एक मरकज़ी रावी जलीलुल क़द्र ताबई और हदीस के मुदव्विने अव्वल इमाम इब्नू शिहाब ज़ोहरी रह० पर तन्क़ीद करते हुए लिखते हैंः

"इब्ने शिहाब मुनाफिक़ीन व व कज़्ज़ाबीन के दानिस्ता न सही नादानिस्ता ही सही मुस्तक़िल एजेन्ट थे। अक्सर गुमराह कुन, खबीस और मकजूबा रिवायतें उन्हीं की तरफ मन्सूब हैं।"

मज़ीद लिखते हैंः

इब्ने शिहाब के मुतअल्लिक़ ये भी मन्कूल है कि वह ऐसे

लोगों से भी बिला वास्ता रिवायत करता था जो उस की विलादत से पहले मर चुके थे, मशहूर शीआ मुअल्लिफ शेख अब्बास क़मी कहता है कि इब्ने शिहाब पहले सुन्नी था फिर शीआ हो गया।" (ततिम्मा अल-मुन्तहीः128)

ऐनुल गज़्ज़ाल फी अस्माइर्रिजाल में भी इब्ने शिहाब को शीआ ही कहा गया है। (सिद्दीक़ा-ए-कायनातः108)

क़ारिईने किराम! हकीम फ़ैज़ आलम की इमाम बुखारी और इब्ने शिहाब पर इस शदीद जिरह के बाद ग़ैर मुक़ल्लिदीन को बुखारी शरीफ पर से ऐतमाद उठा लेना चाहिए, और बुखारी शरीफ की उन सैकड़ों अहादीस से हाथ धो लेना चाहिए जिन की सनद में इब्ने शिहाब मौजूद हैं, बिलखुसूस हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की रफअ यदैन वाली हदीस और हज़रत उबादह र० की क़िराते फातिहा वाली हदीस से तो बिल्कुल कस्त बरदार हो जाना चाहिए, क्योंकि इन अहादीस की सनद में यही इब्ने शिहब मौजूद हैं, देखिए ग़ैर मुक़ल्लिदीन क्या फैसला फरमाते हैं?

मुन्दरजा बाला हवालों से बखूबी अन्दाज़ा होगया होगा कि ग़ैर मुक़ल्लिदीन के यहाँ बुखारी शरीफ की क्या हैसियत है। अब हम बतौर नमूना कुछ हदीसें पेश करते हैं कि ग़ैर मुक़ल्लिदीन हमेशा उन अहादीस सहीहा के खिलाफ अमल करते है, और कभी भी उन पर अमल नहीं करते, बल्कि सहीह अहादीस पर अमल करने वालों को तारिके हदीस, बिदअती, गुमराह, फासिक़, काफिर, मुश्रिक कहने से भी नहीं चूकते। فالی اللہ المشتکی. जिस से ग़ैर मुक़ल्लिदीन का अहादीस सहीहा से इन्कार व इनाद बखूबी वाज़ेह हो जाता है।

ग़ैर मुक़ल्लिदीन का
अहादीसे सहीहा
से बुग्ज़ व इनाद

नमाज़ में नाफ के नीचे हाथ बांधना

(१)..... عَنْ عَلْقَمَةَ بْنِ وَائِلِ بْنِ حُجْرٍ عَنْ اَبِيْهِ قَالَ رَأَيْتُ النَّبِيّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَضَع يَمِيْنَهُ عَلٰى شِمَالِهٖ تَحْتَ السُّرَّةِ (مصنف ابن ابی شیبه: ۳۹/۱، طبع کراچی)

قَالَ الْحَافِظُ قَاسِمُ بْنُ قطلو بغافِیُ تَخْرِيْجِ اَحَادِيْثِ الْاِخْتِيَارِ شرح المختار هذا سند جيد، وقال المكتار هذا سند جيد، وقال العلامة محمد ابو الطيب المدنی فی شرح الترمذی هذا حديث قوی من حيث السند وقال المحقق عابد السندی فی طوالع الانوار رجاله ثقاة.

तर्जुमाः- हज़रत अल्क़मा बिन वाईल अपने वालिद यानी वाईल बिन हुज्र से नक़ल करते हैं कि उन के वालिद ने कहा कि मैं हज़रत नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा कि नमाज़ में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने दाएं हाथ को बाएं हाथ पर नाफ के नीचे रखे हुए हैं।

(२)..... عَنْ اَنَسٍ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ ثَلَاثٌ مِّنْ اَخْلَاقِ النُّبُوَّةِ تَعْجِيْلُ الْاِفْطَارِ وَتَاخِيْرُ السُّهُوْرِ وَوَضْعُ الْيَدِ الْيُمْنٰى عَلَى الْيُسْرٰى فِی الصَّلٰوةِ تَحْتَ السُّرَّةِ. (الجوهر النقی: ۳۲/۲، والمحلی ابن حزم: ۳۵/۳)

तर्जुमाः- हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि तीन बातें नबूव्वत के अखलाक़ व आदात में से हैं: (1) इफतार में जल्दी करना, (2) सहरी देर से खाना, (3) और नमाज़ में दाएं हाथ को बाएं हाथ पर नाफ के नीचे रखा।

(۳)..... عَنْ عُـقْبَةَ بْـنِ صَهْبَانَ اَنَّهٗ سَمِعَ عَلِيًّا يَقُوْلُ فِىْ قَوْلِ اللّٰـهِ عَـزَّ وَجَـلَّ "فَـصَـلِّ لِـرَبِّکَ وَانْـحَرْ" قَالَ وَضَعُ الْيُمْنٰى عَلَى الْيُسْرٰى تَحْتَ السُّرَّةِ. (التمهيد عبدالبر: ۲/۷۸)

तर्जुमाः- हज़रत उक़बा बिन सोहबान कहते हैं कि अल्लाह तआला के इरशाद "فَصَلِّ لِرَبِّکَ وَانْحَرْ" की तफसीर में उन्हों ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से फरमाते सुना कि इस से मुराद ये है कि नमाज़ में दाएं बाएं हाथ पर नाफ के नीचे रखे।

(۴)..... عَنْ اَبِىْ وَائِلٍ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ اَخْذُ الْكَفِّ عَلَى الْكَفِّ فِى الصَّلٰوةِ تَحْتَ السُّرَّةِ. (سنن ابوداؤد الاعرابى: ۱/۲۸۰، والمحلى ابن حزم: ۳/۳۰)

तर्जुमाः- हज़रत अबू वाईल हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से नक़ल फरमाते हैं कि नमाज़ में हथेली को हथेली पर नाफ के नीचे रखना है।

(۵)..... عَنِ الْحَجَّاجِ بْنِ حَسَّانَ قَالَ سَمِعْتُ اَبَا مِجْلَزٍ اَوْ سَأَلْتُهٗ قَالَ قُلْتُ كَيْفَ اَضَعُ؟ قَالَ يَضَعُ بِاطِنَ كَفِّ يَمِيْنِهٖ عَلٰى ظَاهِرِ كَفِّ شِمَالِهٖ وَيَجْعَلُهَا اَسْفَلَ مِنَ السُّرَّةِ. (مصنف ابن ابى شيبة: ۱/۳۹۱، واسناده صحيح)

तर्जुमाः- हज़रत हज्जाज बिन हस्सान कहते हैं कि मैं ने अबू मिजलज़ से सुना, या उन से पूछा कि नमाज़ में हाथ किस तरह रखूँ? तो उन्होंने बताया कि दाईं हथेली के अन्दरूनी हिस्से को बाईं हथेली के ऊपर के हिस्से पर नाफ के नीचे रक्खे।

(۶)..... عَنْ اِبْرَاهِيْمَ قَالَ يَضَعُ يَمِيْنَهٗ عَلٰى شِمَالِهٖ فِى الصَّلٰوةِ

تَحۡتَ السُّرَّةِ. (مصنف ابن ابی شیبه: ۳۹۰/۱، واسناده حسن)

तर्जुमाः- मशहूर फक़ीह व मुहद्दिस हज़रत इब्राहीम नखई ने कहा कि नमाज़ी अपना दायाँ हाथ बाएं हाथ पर नाफ के नीचे रखे।

ज़रूरी वज़ाहत

नाफ से नीचे या नाफ से ऊपर सीने पर हाथ बांधने के बारे में मरफू रिवायतें दरजा-ए-सोम व दोम की हैं, और उन में अक्सर ज़ईफ हैं, अल्बत्ता नीचे नीचे बाँधने की रिवायतें सीने वग़ैरह पर बाँधने की रिवायतों से उसूले मुहद्दिसीन व फुक़हा के लिहाज़ से क़वी और राजेह हैं।

तर्के रफअ यदैन

इमाम अबू दाऊद रह० ने अपनी सुनन में तर्क रफअ यदैन के बयान में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद र० की एक हदीस रिवायत की है।

(۷)...... عَنۡ عَلۡقَمَةَ قَالَ قَالَ عَبۡدُاللهِ بۡنِ مَسۡعُوۡدٍ رَضِیَ اللّٰهُ عَنۡهُ اَلَا اُصَلِّیۡ بِکُمۡ صَلٰوةَ رَسُوۡلِ اللهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیۡهِ وَسَلَّمَ قَالَ فَصَلّٰی فَلَمۡ یَرۡفَعۡ یَدَیۡهِ اِلَّا مَرَّةً. (ابوداؤد شریف: ۱۰۹/۱)

तर्जुमाः- हज़रत अल्क़मा रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फरमाया क्या मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जैसी नमाज़ पढ़कर न दिखाऊ? हज़रत अल्क़मा रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि आप ने नमाज़ पढ़ी और एक मर्तबा के अलावा रफअ यदैन नहीं किया।

ये नमाज़ आप ने कूफा में पढ़ कर दिखाई और कूफा में

एक हज़ार पचास सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम और हज़ारों ताबईन मौजूद थे, किसी ने इस हदीस शरीफ का इन्कार न फरमया, बल्कि उन सब का मुतवातिर अमल इसी हदीस शरीफ के मुताबिक़ रहा।

नमाज़े फजर इस्फार में

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशादे आली है:

(٨)..... اَسْفِرُوْا بِالْفَجْرِ فَاِنَّهٗ اَعْظَمُ لِلْاَجْرِ. (ترمذی)

तर्जुमाः- फजर की नमाज़ उजाला हो जाए तो पढ़ो इस में ज़्यादा सवाब है।

एक रिवायत में है:

(٩)..... مَا اَسْفَرْتُمْ بِالصُّبْحِ فَاِنَّهٗ اَعْظَمُ لِلْاَجْرِ. (نسائی)

तर्जुमाः- हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि फजर की नमाज़ जितना ज़्यादा उजाले में पढ़ोगे उतना ही ज़्यादा सवाब होगा।

नमाज़े ज़ोहर ठण्डे वक़्त में पढ़ना

बुखारी शरीफ की रिवायत है, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमायाः

(١٠)..... اَبْرِدُوْا بِالظُّهْرِ فَاِنَّ شِدَّةَ الْحَرِّ مِنْ فَيْحِ جَهَنَّمَ.

तर्जुमाः- यानी ज़ोहर की नमाज़ ठण्डे वक़्त में पढ़ो क्योंकि गर्मी की शिद्दत जहन्नम के जोश की वजह से होती है।

अब आप ग़ैर मुक़ल्लिदीन का अमल देखें वह सख्त से सख्त गर्मी में भी ज़वाले आफताब के फौरन बाद ही नमाज़ पढ़ेंगे, और हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इरशाद की सरीह नाफरमानी करेंगे।

कुरआने पाक बे वजू छूना

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद नक़ल करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमायाः

(११)..... لَا يَمَسُّ الْقُرْآنَ اِلَّا طَاهِرٌ. (مجمع الزوائد)

तर्जुमाः- यानी कुरआन वही छुए जो बावजू हो।

और मुअत्ता इमाम मालिक में है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन बकर बिन हज़्म को से मरवी है कि हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो खत हज़रत उमर बिन हज़्म रज़ियल्लाहु अन्हु को लिखा था उस में ये बात भी थी कि कुरआन को बावजू ही छुएं।

ग़ैर मुक़ल्लिदीन के बड़े बड़े अकाबिर नवाब भोपाली शैकानी, नवाब वहीदुज़्ज़माँ वगैरह आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस फैसले व हुक्म के खिलाफ ये मज़हब रखते हैं कि जिस का वजू न हो वह भी कुरआन करीम छू सकता है।

क़िब्ला रू क़ज़ा-ए-हाजत

(12).....हज़रत अबूहुरैरह र० की रिवायत इमाम मुस्लिम रह० ने नक़ल की है जिस में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ये वाज़ेह इरशाद मौजूद है।

"तुम में का जब कोई क़ज़ा-ए-हाजत (पेशाब-पाखना) के लिए बैठे तो वह हरगिज़ हरगिज़ क़िब्ला रूख न करे।"

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस सरीह इरशाद की मुखालिफत करते हुए सुन्नत के दावेदार बाज़ ग़ैर मुकल्लिदीन लोगों को ये तालीम फरमाते हैं:

घर में या किसी चीज़ की आड़ में जाईज़ है।

(दस्तूरूल मुत्तक़ी:45)

मशहूर गैर मुकल्लिद आलिम नवाब वहीदुज़्ज़माँ हैदराबादी फरमाते हैं:

وَلَا يُكْرَهُ الْاِسْتِقْبَالُ وَالْاِسْتِدْبَارُ لِلْاِسْتِنْجَاءِ. (نزل الابرار:۳۵/۱)

यानी इस्तिन्जा (पेशाब-पाखना) के लिए क़िब्ला रूख मुँह, पुश्त करना मकरूह नहीं है।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इरशाद की सरीह मुखालिफत के बावजूद इन ग़ैर मुक़ल्लिदीन का शुऊर यही है कि अहले सुन्नत और अहले हदीस बस यही हैं। यानी इस्तिन्जा (पेशाब-पाखना) के लिए क़िब्ला रूख मुँह, पुश्त करना मकरूह नहीं है।

जमा बैनस्सलातैन

(13).....हज़रत अब्दुल्लाह बिन उसऊद र० फरमाते हैं कि हज़रत रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नमाज़ अपने वक़्त पर पढ़ा करते थे, सिवाए मुज़दलिफा और अरफात के। (नसाई)

नमाज़ के बारे में ये था आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दायमी व उमूमी अमल, अब ग़ैर मुक़ल्लिदीन की सुनिये वह क्या कहते हैं? नवाब वहीदुज़्ज़माँ फरमाते हैं:

اَلْجَمْعُ بَيْنَ الصَّلٰوتَيْنِ مِنْ غَيْرِ عُذْرٍ وَلَا سَفَرٍ وَلَا مَطَرٍ جَائِزٌ عِنْدَ اَهْلِ الْحَدِيْثِ. (هندية المهدى:۱۰۹)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत का सरीह मुआरिज़ा व खुली मुखालिफत करने के बावजूद अहले हदीस होने का दावा करते हुए उन्हें ज़रा भी शर्म नहीं आएगी।

कलिमाते अज़ान व इक़ामत

(14).....तिरमिज़ी शरीफ में हज़रत अबू महजूरह रज़ियल्लाहु अन्हु की सहीह हदीस है, फरमाते हैं कि:

اَنَّ النَّبِیَّ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ عَلَّمَہُ الْاَذَانَ تِسْعَ عَشَرَۃَ کَلِمَۃً وَالْاِقَامَۃَ سَبْعَ عَشَرَۃَ.

हज़रत नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनको अज़ान के 19 और इक़ामत के 17 कलिमात सिखाए थे।

इस सहीह हदीस को ग़ैर मुक़ल्लिदीन रद करते हुए फरमाते हैं कि इक़ामत के कलिमात इकहरे कहने चाहिएं। हकीम सादिक़ साहब ने भी सलातुर्रसूल में इसी को सहीह बतलाया है, हालाँकि उनका कहना ये है कि:

"नबूव्त के मानने वालों को चाहिए कि किसी सुन्नत और हदीस का इन्कार न करें"

अब उनसे कोई पूछे कि हज़रत महजूरह रज़ियल्लाहु अन्हु की तिरमिज़ी वाली सहीह रिवायत को इन्होंने क्यों रद कर दिया, और इस सहीह रिवायत पर ग़ैर मुक़ल्लिदीन का क्यों अमल नहीं है।

जलसा-ए-इस्तिराहत

(15).....तिरमिज़ी शरीफ में हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत है, फरमाते हैं कि:

کَانَ النَّبِیُّ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّمَ یَنْھَضُ فِی الصَّلٰوۃِ عَلٰی صُدُوْرِ قَدَمَیْہِ.

हज़रत नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम (दूसरे सजदे से जब उठते तो) तो पन्जों के भल खड़े होते थे।

और ग़ैर मुक़ल्लिदीन का ये अमल है कि वह बैठते हैं फिर ज़मीन पर टेक लगाकर उठते हैं, हालांकि इमाम तिरमिज़ी रह० के बक़ौल ये अहले इल्म (हदीस वालों) का तरीक़ा नहीं है। अहले इल्म का तरीक़ा वही है जो इस हदीस शरीफ में मज़कूर है।

قَالَ اَبُوْعِيْسٰى حَدِيْثُ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ عَلَيْهِ الْعَمَلُ عِنْدَ اَهْلِ الْعِلْمِ يَخْتَارُوْنَ اَنْ يَّنْهَضُ الرَّجُلُ عَلٰى صُدُوْرِ قَدَمَيْهِ.

इमामे तिरमिज़ी फरमाते हैं: कि हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु वाली इस हदीस पर अहले इल्म का अमल है, अहले इल्म इसी को पसन्द करते हैं कि आदमी पंजों के भल खड़ा हो जाए।

तमाम अहले इल्म ने हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु की इस हदीस को कुबूल किया, मगर ग़ैर मुक़ल्लिदीन ने इस को रद्द कर दिया। और हदीस के इन दावेदारों को कभी भूले से भी इस हदीस पर अमल की तौफ़ीक़ नहीं होती, यूँ बराबर फरमाएंगे:

"नबूव्त के मानने वालों को चाहिए वह हुजूर अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कि किसी सुन्नत और हदीस का इन्कार न करें"

(16).....अबूदाऊद शरीफ में हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की ये रिवायत भी है, फरमाते हैं कि:

हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नमाज़ में (दूसरी रकाअत के लिए उठते वक़्त) दोनों हाथ ज़मीन पर टेकने से मना फरमाया है।

हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिस चीज़ से मना करते हैं ग़ैर मुक़ल्लिदीन का अमल उसी पर होता है, बल्कि उसी को सुन्नत समझते हैं। (فَيَا لِلْعَجَبِ)

क़िराते फातिहा खल्फल इमाम

ग़ैर मुक़ल्लिदीन के नज़दीक मुक़्तदी को इमाम के पीछे सूरह फातिहा का पढ़ना वाजिब और ज़रूरी है। बिला इसके मुक़्तदी की नमाज़ नहीं होगी, जबकि ये अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तालीम व इरशाद के बिल्कुल खिलाफ है।

(१७)..... عَنْ اَبِیْ مُوْسیٰ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ اِنَّ رَسُوْلَ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ خَطَبَنَا فَبَیَّنَ لَنَا سُنَّتَنَا وَعَلَّمَنَا صَلٰوتَنَا فَقَالَ اِذَا صَلَّیْتُمْ فَاَقِیْمُوْا صُفُوْفَکُمْ ثُمَّ لِیَؤُمَّکُمْ اَحَدُکُمْ فَاِذَا کَبَّرَ فَکَبِّرُوْا وَاِذَا قَرَأَ فَاَنْصِتُوْا وَاِذَا قَرَأَ غَیْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَیْھِمْ وَلَا الضَّالِّیْنَ فَقُوْلُوْا اٰمِیْنَ. الخ.

तर्जुमाः- हज़रत अबू मूसा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है वह फरमाते हैं कि हज़रत रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमें खुतबा दिया और खोल-खोल कर सुन्नत का रास्ता बतलाया, हमें नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा बतलाया आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि जब तुम नमाज़ पढ़ने लगो तो अपनी सफों को सीधा करो, फिर तुम में से कोई इमामत करे, जब इमाम तकबीर कहे तो तुम भी तकबीर कहो और जब वह कुरआन पढ़ने लगे तो तुम खामोश हो जाओ, और जब वह "ग़ैरिल मग़ज़ूकि अलैहिम वलज़्ज़ाल्लीन" पढ़े तो तुम आमीन कहो।

तमाम सहाबा-ए-किराम के मजमाअ में नमाज़ की आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तालीम फरमाई और उस

में सरीह लफ्ज़ों में मुक़्तदियों के बारे में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जब इमाम क़िरात शुरू करे तो वह खामोश रहें।

मुस्लिम शरीफ ही की ये भी रिवायत है:

(१८)..... عَنْ عَطَاءِ ابْنِ يَسَارٍ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ اَنَّهُ اَخْبَرَهُ اَنَّـهُ سَـأَلَ زَيْدَ بْنَ ثَابِتٌ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ الْقِرَأَةِ مَعَ الْاِمَامِ فَقَالَ: لَا قِرَأَةَ مَعَ الْاِمَامِ فِىَ شَىْءٍ"

तर्जुमाः- हज़रत अता बिन यसार रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा कि इमाम के साथ मुक़्तदी को भी क़िरात करनी चाहिए या नहीं? सहाबी-ए-रसूल हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु ने फरमाया किसी नमाज़ में भी मुक़्तदी को इमाम के साथ क़िरात नहीं करनी चाहिए।

क़िरात खल्फल इमाम के बारे में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ये तालीम थी कि इमाम के पीछे कुछ पढ़ना नहीं है, सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम में से जो फुक़हा थे उनका इस पर अमल था, मगर हदीस के दावेदार और ठेकेदार हज़रात ग़ैर मुक़ल्लिदीन हज़रात इन हदीसों को रकीक तावीलात की बिना पर छोड़ देते हैं, हालाँकि बुखारी व मुस्लिम से तअल्लुक़ ज़ाहिर करने के लिए गाहे-गाहे वह इस का भी ऐलान ज़रूरी समझते हैं कि बुखारी व मुस्लिम की तमाम हदीसें सही हैं, मगर जब अमल का वक़्त आता है तो मुस्लिम की इन हदीसों का इन्कार करके खुद अपने दावा की धज्जियाँ उड़ा फिज़ाए आसमानी में बिखेर देते हैं: "لَا صَلٰوةَ اِلَّا بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ" वाली हदीस पढ़ कर अपने अवाम को वरग़लाते हैं कि मुक़्तदी को भी सूरह-ए-फातिहा पढ़नी ज़रूरी है, जबकि इस हदीस शरीफ में मुक़्तदी का

कहीं दूर-दूर तक ज़िक्र नहीं है।

और जब ग़ैर मुक़ल्लिदीन हज़रात को समझाया जाता है कि "لَا صَلٰوةَ" वाली हदीस का तअल्लुक़ हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु के बक़ौल मुक़्तदी से नहीं है, तो शीओं वाले लब व लहजे में साफ-साफ कह देते हैं कि ''ایں قول جابر است وقول صحابی حجت نیست'' यानी ये जाबिर की बात है, और सहाबी की बात हुज्जत नहीं है, यानी सहाबी जो फरमाएं वह ग़लत और बरतानवी इस्तेमार के मुतनब्बी जो फरमाएं वह दीन होगा।

आमीन बिस्सिर

(19).....ग़ैर मुक़ल्लिदीन हज़रात का मज़हब है कि जहरी नमाज़ों में इमाम और मुक़्तदी पुकार कर और बुलन्द आवाज़ से आमीन कहें, और इसी पुकार वाली आमीन ही को ग़ैर मुक़ल्लिदीन सबीलुर्रसूल कहते हैं।

अब ज़रा मुस्नदे अहमद बिन हन्बल रह० की रिवायत भी देखें:

हज़रत वाईल बिन हुज्र रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि: हमें हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नमाज़ पढ़ाई जब आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने "ग़ैरिल मग़ज़ूकि अलैहिम वलज़्ज़ाल्लीन" पढ़ा तो आमीन कहा और आहिस्ता आवाज़ से आमीन कहा। (मुस्नदे अहमद)

ये रिवायत दार कुत्नी में भी है, तिरमिज़ी में भी है, गर्ज़ कि मुतअद्दद अहादीस की किताबों में है, और बहुत से सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम मस्लन हज़रत उमर, हज़रत अली, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हुम जैसे बुज़ुर्गान सहाबा-ए-किराम का इस पर अमल भी रहा था कि ये हज़रात

आमीन पस्त आवाज़ से कहते थे, ताबईन की एक बड़ी तादाद का भी यही मज़हब है, बड़े-बड़े मुहद्दिसीन भी इसी के क़ाईल हैं।

मगर ग़ैर मक़ल्लिदीन हज़रात का आलम ये है कि वह आमीन सिर्फ पुकार कर कहेंगे और उसी को सबीलुर्रसूल क़रार देंगे, और जो आहिस्ता से आमीन कहेगा उसके बारे में उनका फैसला होगा कि वह सबीलुर्रसूल पर नहीं है, बल्कि गुस्ताखी का आलम ये होगा कि ऐसों को ग़ैर मुक़ल्लिदीन यहूदी कहेंगे, और गालियाँ देंगे, ग़ैर मुक़ल्लिदीन जमाअत के एक माया-ए-नाज़ आलिम फरमाते हैं:

"आज कल जो भी आमीन कहने से हसद करते हैं उनको और जलाना चाहिए और हर जमाअत में पुकार कर बुलन्द आवाज़ से आमीन कहनी चाहिए, ये सुन्नते नब्वी पर चलना क्या माअना, मआज़ल्लाह ये कुफ्र सरीह है, और जो कोई यहूदी जले उसको और जला दें, यहाँ तक कि अपने गुस्से में आप मर जाए, और "خَسِرَ الدُّنيَا وَالْاٰخِرَة" हो।"

(रिसाला आमीन, अज़ मौलाना नूर गिर्जाखी:19)

यानी ये सबीलुर्रसूल वाले लोग पुकार कर आमीन दूसरों को जलाने के लिए कहते हैं और इस पर सुन्नते नब्वी का सवाब हासिल करने की नीयत भी रखते हैं, इन शीरीं दहन लोगों को क्या मालूम कि सिर्फ आमीन क्या माअना, अगर पूरी नमाज़ ही पढ़ने का ये मक़सद हो कि उस से दूसरों को जलाकर के मज़ह लिया जाए तो खुद इस तरह की नमाज़ पढ़ने वाला "خَسِرَ الدُّنيَا وَالْاٰخِرَة" का मिस्दाक़ होगा।

जुमा की अज़ाने अव्वल

(16).....हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस को

जारी फरमाया, तमाम सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने इस को क़ुबूल फरमाया, और किसी ने कोई इख्तिलाफ नहीं किया, और हर ज़माने में इस पर अमल होता रहा, किसी इमाम और किसी फक़ीह व मुज्तहिद ने इस से इख्तिलाफ नहीं किया, और इख्तिलाफ कर भी कैसे सकते थे जबकि खुद आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि मेरी और खुलफा-ए-राशिदीन महदीयीन की सुन्नत को लाज़िम पकड़ लो, ये चूँकि खलीफाए राशिद के हुक्म से जारी हुई, इस लिए ये सुन्नत है, और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुक्म के मुताबिक़ इस पर अमल ज़रूरी है।

इमाम बुखारी इस वाक़िया-ए-अज़ान को नक़ल करने के बाद फरमाते हैं: "فثبت الامر علی ذلک" अम्र (इस अज़ाने अव्वल) पर साबित हो गया।

यानी फिर ये एक मुस्तक़िल सुन्नत बन गई।

(मुलाहिज़ा हो बुखारी शरीफ:125/1, अबू दाऊद शरीफ:155/1, नसाई शरीफ:156/1)

मगर ग़ैर मुक़ल्लिदीन हज़रात इस को बिदअत कहते हैं, जिस का मतलब ये है कि हज़रते उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु बिदअत को राइज करने वाले थे, और तमाम सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन भी नऊज़ु बिल्लाह बिदअत को क़ुबूल करने वाले और उस पर अमल करने वाले थे, और उनमें कोई भी बिदअत पर इन्कार करने वाला नहीं था। "نعوذ بالله من ذلک"

बीस रकअत तरावीह

(16).....बीस रकआत तरावीह आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से भी साबित है।

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يُصَلِّیْ فِیْ رَمْضَانَ عِشْرِيْنَ رَكْعَةً وَالْوِتْرَ.

(مصنف ابن ابی شیبة: ۲/۲۹۴، بیهقی: ۲/۴۹۶، معجم طبرانی کبیر، مسند عبد بن حمید: ۲۱۸، حدیث واهل حدیث: ۶۳۵)

तर्जुमाः- हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है वह फरमाते हैं कि हज़रत रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रमज़ानुल मुबारक में बीस रकआत तरावीह और वित्र पढ़ा करते थे।

(۲۲)..... عَنْ جَابِرِ ابْنِ عَبْدِاللّٰهِ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ خَرَجَ النَّبِیُّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ذَاتَ لَيْلَةٍ فِیْ رَمْضَانَ فَصَلَّی النَّاسَ اَرْبَعَةَ وَعِشْرِيْنَ رَكْعَةً.

(تاریخ جرجان لابی قاسم حمزة بن یوسف السهمی: ۲۷۵، م۴۲۷ھ، حدیث واهل حدیث: ۶۳۵)

तर्जुमाः- हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है वह फरमाते हैं कि रमज़ानुल मुबारक में एक रात हज़रत नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बाहर तशरीफ लाए और सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन को चौबीस रकअतें (चार इशा की और बीस तरावीह की) पढ़ाईं।

हज़रत उबय इब्ने कअब रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के हुक्म से सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन के हुक्म से बीस रकआत तरावीह पढ़ाया करते थे।

(मुलाहिज़ा हो, कन्जुल उम्माल:409/4, अबू दाऊद शरीफ:202/1, सियर ऐलामुन नब्ला:400/4, मुसन्नफ इब्ने अबी शैबा:393/2)

मुअत्ता इमाम मालिक में भी हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़ामना-ए-खिलाफत में बीस रकआत तरावीह पढ़ने का

ज़िक्र है। (मुअत्ता इमाम मालिकः98/2)

नीज़ सुनने कुबरा बयहक़ी (496/2) में भी यही है।

हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़ामना-ए-खिलाफत में भी बीस रकआत तरावीह पढ़ी जाती थीं।

(सुनने कुबरा बयहक़ीः496/2, हदीस व अहले हदीसः639)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के दौर-ए-खिलाफत में भी बीस रकआत तरावीह पढ़ी जाती थीं।

(सुनने कुबरा बयहक़ीः496/2, मुसन्नफ इब्ने अबी शैबाः393/2)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु भी बीस रकआत तरावीह पढ़ते थे।

(मुख्तसर क़यामुल्लैल लिल्मरोज़ीः157, हदीस व अहले हदीसः642)

बीस रकआत तरावीह पर सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन का इज्मा है।

(मुलाहिज़ा हो, अल-मुग़नी लिइब्ने क़ुदामाः167/2, इरशादुस सारी शरह सहीहुल बुखारीः515/3, हदीस व अहले हदीसः643)

अल्लामा अली बिन सुल्तान अल-क़ारी अल-हन्फी अल-मुतवफ्फा सन् १०१४ हि० फरमाते हैंः

"اجمع الصحابة على ان التراويح عشرون ركعة"

(مرقاة المفاتيح: ۲/۱۹۴)

तर्जुमाः- सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन का बीस बीस रकआत तरावीह पर इज्मा है।

शरहुन्नुक़ाया (241/2) में भी इज्मा नक़ल किया है, हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाहि अलैहि फरमाते हैंः

"هٰكَذَا اَدْرَكْتُ بِبَلَدِنَا بِمَكَّةَ يُصَلُّوْنَ عِشْرِيْنَ رَكْعَةً"

(ترمذی شریف: ۱/۱۶۶)

तर्जुमाः- हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाहि अलैहि फरमाते हैं कि मैं ने ऐसा ही पाया है अपने शहर मक्का मुकर्रमा में कि वहाँ (सब) बीस रकअतें ही पढ़ते हैं।

अइम्मा-ए-अरबाः इमाम मालिक, इमाम अबू हनीफा, इमामा शाफई, इमाम अहमद बिन हन्बल रहमतुल्लाहि अलैहिम भी बीस रकआत तरावीह के क़ाईल हैं।

(मुलाहिज़ा हो, बिदायतुल मुजतहिदः**156/1**)

हज़रत शेख अब्दुल क़ादिर जीलानी रहमतुल्लाहि अलैहि भी बीस रकअत तरावीह के क़ाईल हैं।

(मुलाहिज़ा हो, गनीयतुत्तालिबीन मुतरज्जिमः**393, 396**)

इमाम तक़ीयुद्दीन इब्ने तयमिया अल-हिरानी रहमतुल्लाहि अलैहि मुतवफ्फा सन् **738** हि० भी तरावीह बीस रकआत के क़ाईल हैं। (मुलाहिज़ा हो, फतावा इब्ने तयमियाः**112,/23**, हदीस व अहले हदीसः**653**)

क़ारिईने किराम! ग़ौर फरमाएं कि जो अमल खुद आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से साबित हो जिस पर खुलफाए राशिदीन रज़ियल्लाहु अन्हुम ने मवाज़िबत की हो, जिस पर दौर-ए-सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन में इज्मा हुआ हो जिस पर सारी उम्मत का अमल हो, जिसे हर सदी के फुक़्हा ने सुन्नत क़रार दिया हो, उस अमल को ग़ैर मुक़ल्लिदीन सुन्नत तो कुजा बिदअत कहने से भी नहीं झिझकते। ग़ौर फरमाएं! अगर ये बिदअत है तो फिर सुन्नत कौनसा अमल होगा? फिर अगर इस अमल को बिदअत क़रार दिया जाए तो खुलफा-ए-राशिदीन सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन, हज़रात ताबईन, तबअ ताबईन, अइम्मा-ए-मुजतहिदीन रहमतुल्लाहि अलैहिम अजमईन और उन के करोड़ों नहीं अरबों मुत्तबईन

उलमा, फक़्हा, औलिया और सारी उम्मत को बिअती क़रार देना लाज़िम आयेगा। अल-अयाज़ु बिल्लाह

और सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन पर कैसे ऐतमाद किया जा सकता है, और दीन जो सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन के वास्ते से हम तक पहुँचा है वह भी किस तरह क़बिले ऐतमाद हो सकता है। अल-अयाज़ु बिल्लाह

क़ारिईने किराम खुद फैसला फरमाएं कि ये हदीस व सुन्नत की मुवाफिक़त है या मुखालिफत।

एक मजलिस की तीन तलाक़

(16).....हज़रत उवेमर इजलानी रज़ियल्लाहु अन्हु ने सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन के एक बड़े मजमा में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने अपनी बीवी से लिआन किया और उसके बाद अर्ज़ किया:

"كَذَبْتُ عَلَيْهَا يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِنْ اَمْسَكْتُهَا فَطَلَّقَهَا ثَلاثًا قَبْلَ اَنْ يَّامُرَهُ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ"

(بخاری: ۲/۷۹۱، باب من اجاز طلاق الثلاثة، مسلم: ۱/۴۸۹)

तर्जुमाः- या रसूलल्लाह! अगर मैं इसे अपने पास रोक रक्खूँ तो मैं ने इस पर झूठ बाँधा, उसके बाद उसे तीन तलाक़ें दे दीं, क़ब्ल इस के कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उन्हें हुक्म देते।

इमाम नववी रह० ने बहवाला इमाम जरीर तिबरी लिखा है कि लिआन का ये वाक़िआ सन् 9 हि० का है, जिस से मालूम हुआ कि आयते पाक "اَلطَّلَاقُ مَرَّتَانِ" के एक अर्से बाद ये वाक़िया पेश आया है।

इस हदीस शरीफ को इमाम मुस्लिम रह० ने मुतअद्दद तुरूक़ से रिवायत किया है, दीगर अइम्मा-ए-हदीस ने भी इस की तखरीज की है, मगर किसी रिवायत में इसका ज़िक्र नहीं है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बयक मजलिस दी गई तीन तलाक़ को कल्अदम या एक क़रार दिया हो, बल्कि उसके बरअक्स इसी वाक़िए से मुतअल्लिक़ अबूदाऊद की रिवायत में तसरीह है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन तीन तलाक़ों को नाफिज़ फरमा दिया। रिवायत के अलफाज़ ये हैं।

(۲۴)..... فَطَلَّقَهَا ثَلاثَ تَطْلِيْقَاتٍ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَاَنْفَذَهُ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَكَانَ مَا صَنَعَ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سُنَّةً" (ابوداؤد:۱/۳۰۷)

तर्जुमाः- हज़रत उवेमर इजलानी रज़ियल्लाहु अन्हु ने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मौजूदगी में तीन तलाक़ें दे दीं, और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें नफिज़ फरमा दिया, और उन्हों ने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास जो किया (वही लिआन में) तरीक़ा-ए-अमल क़रार पाया।

इस रिवायत पर इमाम अबूदाऊद और मुहद्दिस मुन्ज़िरी ने किसी क़िस्म का कोई कलाम नहीं किया है, और सुनन अबूदाऊद की किसी रिवायत पर दोनों का सुकूत मुहद्दिसीन के नज़दीक उस के क़ाबिले एहतिजाज होने की अलामत है, मुज़ीद बराँ शौकानी ने "नैलुल अवतार" में इस हदीस शरीफ के बारे में तसरीह की है कि "رجالہ رجال الصحیح" इस हदीस शरीफ के रावी सहीह के रावी हैं।

उसूले मुहद्दिसीन के ऐतबार से इस साबित शुदह रिवायत में सहाबी-ए-रसूल हज़रत सहल बिन सअद रज़ियल्लाहु अन्हु की ये तसरीह है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उवेमर

इजलानी र० की एक मजलिस में दी हुई तीनों तलाक़ों को नाफिज़ फरमा दिया, इस की रोशन दलील है कि बयक मजलिस दी गई तीन तलाक़ें तीन ही शुमार हों, इमामुल मुहद्दिसीन बुखारी रह० के तराजिम अबवाब की नुक्ता आफरीनियों से वाक़िफ हज़रात अच्छी तरह जानते हैं कि उन्हों ने "باب من اجاز (جوز) طلاق الثلاث" के तहत हज़रत सहल बिन सअद र० की रिवायत लाकर अबूदाऊद की रिवायत में आई हुई इसी ज़्यादती की जानिब शिारह किया है, अबू दाऊद की ये रिवायत चुँकि उनकी शराइत के मुताबिक़ नहीं थी इस लिए मतन में उसे न लाकर तरजिमतिल बाब से उसकी तरफ इशारह कर दिया।

इमाम नसाई जैसा जलीलुल क़द्र इमामे हदीस भी हज़रत उवेमर इजलानी र० की तीन तलाक़ों को तीन ही बतला रहा है।

"باب من الرخصة فی ذلک"(एक मजलिस में तीन तलाक़ों की रूख्सत का बाब) के ज़ेल में उनका इस हदीस का ज़िक्र करना इसका खुला सुबूत है।

ज़ेरे बहस मस्अले में ये ऐसी पुख्ता और बेगुबार दलील है कि अगर इसके अलावह कोई और दलीद न होती तो तन्हा यही काफी थी।

इज्मा

कुरआन व हदीस के बाद शरीअते इस्लामी का तीसरा माखज़ इज्मा है, अह्दे फारूक़ी में हज़रात सहाबा रिज़ानुल्लाहि अलैहिम अजमईन का इस बात पर इज्मा हो चुका है कि एक मजलिस की तीन तलाकें तीन ही शुमार होंगी।

मुहक़िक़ हाफिज़ बिन अब्दुल वाहिद अल-मारूफ बि-इब्नुल हुमाम अल-हन्फी लिखते है:

"وَذَهَبَ الْجَمْهُوْرُ الصَّحَابَةِ وَالتَّابِعِيْنَ وَمَنْ بَعْدَهُمْ مِنْ اَئِمَّةِ الْمُسْلِمِيْنَ اِلٰى اَنَّهُ يَقَعُ ثَلاثٌ" (فتح القدير: ٣/٣٣٠)

तर्जुमा:- जमहूर सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन और ताबईन और बाद के अइम्मा-ए-मुस्लिमीन रहमतुल्लहि अलैहिम अजमईन का यही मज़हब है कि तीन तलाकें तीन ही होंगी।

आगे चलकर लिखते हैं कि सहाबा-ए-किराम रिज़ावानुल्लाहि अलैहिम अजमईन का इसी पर इज्मा है।

"فَاِجْمَاعُهُمْ ظَاهِرٌ فَاِنَّهُ لَمْ يُنْقَلْ عَنْ اَحَدٍ مِّنْهُمْ اِنَّهُ خَالَفَ عُمَرَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ حِيْنَ اَمْضَى الثَّلَاثَ لَهُ" (فتح القدير: ٣/٣٣٠)

तर्जुमा:- हज़रात सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन का इज्मा ज़ाहिर है क्योंकि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के फैसले की कि तीन तलाकें तीन हैं, किसी सहाबी से मुखालिफत मन्कूल नहीं।

अल्लामा बदरूद्दीन अल-अयनी अल-हन्फी लिखते हैं।

"وَمَذْهَبُ جَمَاهِيْرِ الْعُلَمَاءِ مِنَ التَّابِعِيْنَ وَمِنْ بَعْدِهِمْ مِّنْهُمْ الْاَوْزَاعِيُّ وَالنَّخْعِيُّ وَالثَّوْرِىُّ وَاَبُوْحَنِيْفَةَ وَاَصْحَابُهُ وَمَالِكٌ وَاَصْحَابُهُ وَالشَّافِعِيُّ وَاَصْحَابُهُ وَاَحْمَدُ وَاَصْحَابُهُ وَاِسْحَاقُ وَاَبُوْدَاؤُدَ وَاَبُوْعُبَيْدَ وَاٰخَرُوْنَ كَثِيْرُوْنَ عَلٰى مَنْ طَلَّقَ اِمْرَأَتَهُ ثَلاثًا وَقَعْنَ وَلٰكِنَّهُ يَاْثَمُ وَقَالُوْا مَنْ خَالَفَ فِيْهِ فَهُوَ شَاذٌّ مُخَالِفٌ لِاَهْلِ السُّنَّةِ وَاِنَّمَا تَعَلَّقَ بِهِ اَهْلُ الْبِدْعِ وَمَنْ لَا يَلْتَفِتُ اِلَيْهِ لِشُذُوْذِهِ مِنَ الْجَمَاعَةِ لَهُ" (عمدة القارى: ٢٠/٢٣٣، باب من اجاز طلاق الثلاث، مكتبه رشيديه كوئٹه پاكستان)

तर्जुमा:- ताबईन और उनके बाद के जमहूर उलमा जिन

में इमाम अवज़ाई, इमाम नखई, इमाम सौरी, इमाम अबू हनीफा, और उनके असहाब इमाम मालिक, और उनके असहाब, इमामा शाफई, और उनके असहाब, इमाम अहमद, और उनके असहाब, इमाम इसहाक़ इब्नु राहवैयहि, इमाम अबू उबैद वग़ैरह रहमतुल्लहि अलैहिम अजमईन व दीगर बहुत सारे अइम्मा का यही मज़हब है कि तीन तलाकें तीन ही होंगी। अल्बत्ता इस तरह तलाक़ देने वाला गुनहगार होगा। जमहूर कहते हैं कि इस मस्अले में जिसने मुखालिफत की वह शाज़ और और मुखालिफ अहले सुन्नत है, उसने इस मस्अले में अहले बिदअत और ऐसे लोगों की पैरवी की है जो जमाअत मुस्लिमीन से कट जाने की वजह से क़ाबिले इल्तिफात नहीं हैं।

सऊदी अरब के अकाबिर उलमा का फैसला

यहाँ ये बात भी क़ाबिले ज़िक्र है कि सऊदी अरब की आला तरीन फिक़्ही मजलिस "हयअतुल किबारिल उलमा" ने सन् 1393 हि० में पूरी बहस व तम्हीस के बाद बिलइत्तिफाक़ ये फैसला किया है कि एक वक़्त में दी गई तीन तलाकें तीन ही शुमार होंगी, ये पूरी बहस और मुफस्सल तजवीज़ "मुजल्लतुल बुहूसुल इस्लामिया" में सन् 1397 हि० में 150 सफ्हात में शाय हुई है, जो इस मौजू पर एक वक़ी दस्तावेज़ की हैसियत रखती है, इस फैस्ले में सऊदी अरब के जो अकाबिर उलमा शरीक रहे उनके असमा-ए-गिरामी ज़ेल में दर्ज हैं:

(1).....शेख अब्दुल अज़ीज़ बिन बाज़ रहमतुल्लाहि अलैहि

(2).....अब्दुल्लाह बिन हुमैदी रहमतुल्लाहि अलैहि

(3).....शेख मुहम्मद अमीन अल-शन्क़ीती रहमतुल्लाहि अलैहि
(4).....शेख सुलेमान बिन उबैद रहमतुल्लाहि अलैहि
(5).....शेख अब्दुल्लाह खैय्यात रहमतुल्लाहि अलैहि
(6).....शेख मुहम्मद हरकान रहमतुल्लाहि अलैहि
(7).....शेख इब्राहीम बिन मुहम्मद आल अल-शैख रह०
(8).....शेख अब्दर्रज़्ज़ाक़ अफीफी रहमतुल्लाहि अलैहि
(9).....शेख अब्दुल अज़ीज़ बिन सालेह रहमतुल्लाहि अलैहि
(10).....शेख सालेह बिन अजून रहमतुल्लाहि अलैहि
(11).....शेख मुहम्मद बिन जुबैर रहमतुल्लाहि अलैहि
(12).....शेख अब्दुल मजीद हसन रहमतुल्लाहि अलैहि
(13).....शेख राशिद बिन हुनैन रहमतुल्लाहि अलैहि
(14).....शेख सालेह बिन लुहैदान रहमतुल्लाहि अलैहि
(15).....शेख मिहज़ार अक़ील रहमतुल्लाहि अलैहि
(16).....शेख अब्दुल्लाह बिन इज़यान रहमतुल्लाहि अलैहि
(17).....शेख अब्दुल्लाह बिन मुनीअ रहमतुल्लाहि अलैहि

तअज्जुब है कि ग़ैर मुक़ल्लिदीन हज़रात जो हर मुआमले में हरमैन शरीफैन के उलमा का हवाला देते हैं, इस मसले में उलमा-ए-सऊदी अरब की राय और मौक़िफ को बिल्कुल नज़र अन्दाज़ कर देते हैं।

बेजा जसारत

एक ग़ैर मुक़ल्लिद आलिम जो अपनी जमाअत में अहमियत की नज़र से देखे जाते हैं, हज़राते सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन के इन फतवों की शरई हैसियत को मखदूश बनाने की नाज़ेबा जसारत करते हुए लिखते हैं:

"एक मजलिस में अगर किसी ने तीन तलाकें दे दीं तो

उसे एक ही तलाक़ तसव्वुर करेंगे, जहाँ तक हज़रते उमर फारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के इख्तियार करदह तरीक़े कार का तअल्लुक़ है तो उन्होंने बतौरे ताज़ीर एक आरडीनेन्स जारी करके फरमाया था कि अगर किसी ने तीन तलाकें अपनी बीवी को बयक वक़्त दे दीं तो तीन तलाक़ का इतलाक़ हो जाएगा, खलीफा-ए-सानी ने नस्से शरई पर मस्लिहते शरई को तरजीह दी थी, वैसे हज़रते उमर फारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के इस तरीक़े कार को उस वक़्त के आम मुसलमानों ने तसलीम नहीं किया, सिर्फ तेरह अफराद ने उसको तसलीम किया था, और वह सब ही खलीफा-ए-वक़्त के गवर्नर थे।"

(रोज़नामा "अखबारे मशिरक" कलकत्ता 16 सितम्बर 1993 ई०)

क़ारिईने किराम खुद ग़ौर फरमाएं कि इस इबारत से हदीस पाक और हज़रते उम्र फारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु से किस दरजा बुग्ज़ व इनाद ज़ाहिर होता है।

दो हाथ से मुसाफह करना

(25).....दो हाथ से मुसाफह करना सहीह हदीस से साबित है, इमाम बुखारी रह० ने बुखारी शरीफ में बाबुल मुसाफह के तहत हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की हदीस नक़ल फरमाई है, जिस में अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने ये जुमला भी नक़ल फरमाया है:

"وَكَفِّيْ بَيْنَ كَفَّيْهِ"

मेरा हाथ हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दोनों मुबारक हाथों के दरमियान में था।

इस से इमाम बुखारी रह० ने ये मस्अला निकाला है कि मुसाफह दोनों हाथों से करना चाहिए, और मुहद्दिसे जलील हज़रत

हम्माद रह० और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० का अमल नक़ल किया है कि इस हदीस शरीफ पर अमल फरमाते हुए उन्हों ने दोनों हाथों से मुसाफह किया, जिस से ज़ाहिर है कि ये दोनों जलीलुल क़द्र मुहद्दिस भी दोनों हाथ से मुसाफह के क़ाईल थे, मगर बुखारी शरीफ की सहीह हदीस के बरखिलाफ ग़ैर मुक़ल्लिदीन हमेशा एक हाथ से ही मुसाफह करते हैं, और हदीस शरीफ की मुखालिफत करते हुए कभी तो कहते हैं कि इब्ने मसऊद रज़िल्लाहु अन्हु का तो एक हाथ था, हम कहते हैं कि हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तो दानों हाथ थे, तो हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत तो दोनों हाथों से मुसाफह करना हुआ, हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत को छोड़ कर सहाबी की सुन्नत को क्यों इख्तियार करते हो?

और असल तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के भी दोनों हाथ थे, मगर जब दो आदमी दोनों हाथ से मुसाफह करते हैं तो दूसरे के दोनों हाथों के दरमियान हर एक का एक ही हाथ होता है और ये मुमकिन भी नहीं कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तो दोनों हाथ बढ़ाएं और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सिर्फ एक हाथ बढ़ाएं।

कभी कहते हैं कि ये मुसाफह नहीं था, बल्कि ये तो वैसे ही अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ को हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने हाथों में पकड़ रखा था। हम कहते हैं कि हज़रत इमाम बुखारी रह० तो इस से मुसाफह ही समझ रहे हैं, तब ही तो इस पर बाबुल मुसाफह बाब क़ाइम फरमाया और हज़रत हम्माद रह० और अब्दुल्लाह बिन

मुबारक रह० इस हदीस शरीफ से मुसाफह ही समझ रहे हैं, तब ही तो दोनों हज़रात दोनों हाथ से मुसाफह करते थे, तो ग़ैर मुक़ल्लिदीन हज़रात की समझ हज़रत इमामा बुखारी रह० और दीगर किबार मुहद्दिसीन रहिमहुमुल्लाह तआला की समझ से ज़्यादा हो गई, और इमाम बुखारी रह० को इतनी भी समझ नहीं तो उन की अहादीस पर क्या ऐतबार किया जा सकता है, लिहाज़ा ग़ैर मुक़ल्लिदीन को बुखारी शरीफ से बेज़ारी का ऐलान करदेना चाहिए।

फिरक़ा-ए-ग़ैर मुक़ल्लिदीन की हदीसे पाक से बेज़ारी और इनाद का हाल ये है कि कभी भी इस हदीस पर अमल नहीं करते, और बुखारी शरीफ की इस सहीह हदीस पर अमल करने वालों का उल्टा मज़ाक़ बनाते हैं, और अपना शिआर ही हदीस की मुखालिफत पर एक हाथ से मुसाफह करने को बना लिया। पनाह बखुदा!

बतौर नमूना ये चन्द अहादीस बयान की गई हैं वरना तो सहीह अहादीस का बड़ा ज़खीरह दस्तियाब हो सकता है कि गैर मुक़ल्लिदीन बराबर उनकी मुखालिफत करते हैं, और कभी भी उन पर अमल की तौफीक़ उनको नहीं होती जिस से अहादीसे सहीहा से इन्कार व इनाद बखूबी ज़ाहिर है।

अब हम ग़ैर मुक़ल्लिद उलमा के चन्द हवाले पेश करते हैं जिस से अन्दाज़ा हो जाएगा कि हज़रत इमाम आज़म अबूहनीफा रह० की शान में गुस्ताखी करने का क्या अन्जाम होता है? ताकि हज़रत इमाम आज़म अबूहनीफा रह० की शान में गुस्ताखी करने वाले अपने अन्जाम और अपनी आक़िबत की फिक्र करें।

इमाम आज़म
अबूहनीफा रह०
की शान में
गुस्ताखी का वबाल

अर्ज़े मुरत्तिब

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّی عَلٰی رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ. اَمَّا بَعْدُ!

इमाम आज़म अबूहनीफा रह० के बारे में हदीसे पाक में अज़ीम बशारत मौजूद है, मुहद्दिसीन किराम ने आप के मनाक़िब में मुस्तक़िल किताबें तस्नीफ फरमाई हैं, सिहाह सित्ता के मुसन्निफीन (इमाम बुखारी, इमाम मुस्लिम, इमाम तिरमिज़ी, इमाम अबू दाऊद, इमाम इब्ने माजा, इमाम नसाई रहमतुल्लाहि अलैहिम) आपके तलामिज़ह के तलामिज़ह में शुमार होते हैं, और उनके फैज़ याफ्ता और खोशाचीं हैं, हज़रत इमाम बुखारी रह० के उस्ताज़ुल असात्ज़ह मुहद्दिसे अज़ीम हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० जिन को मुहद्दिसीन अमीरूल मोमिनीन फिल हदीस का लक़ब देते हैं, और इमाम बुखारी ने उनको अपने ज़ामने का सब से बड़ा आलिम और मुहद्दिस तस्लीम किया है, और उनके मुक़ाबले में दूसरों को बे इल्म तक कह दिया, फरमाते हैंः अगर खुदा तआला अबू हनीफ़ा और सुफयाने सौरी रहमतुल्लाहि अलैहिमा के ज़रीए फरयाद रसी न करता तो मैं आम आदमियों की तरह एक आदमी होता। (मुक़द्दमा अनवारूल बारीः94/1)

और भी मुतअद्दद मनाक़िब और कमालात व महासिन को बयान फरमाया है, बल्कि इमाम साहब को तमाम औसाफे हमीदा और कमालात व महासिन का मजमुआ क़रार दिया है।

(मुलाहिज़ा हो, सदाइकुल हन्फीयाः76)

और उन लोगों को जिन्हों ने इमाम अबू हनीफा रह० की

दुश्मनी को ज़िन्दगी का मिशन बना रखा है बे वकूफ क़रार दिया है, मगर अफसोस है कि एक तब्क़ा ने इमाम अबू हनीफ़ा रह० की दुश्मनी और उन से बुग्ज़ व इनाद ही को अपनी ज़िन्दगी का मिशन बना रखा है। इन्तिहा ये है कि जाहिल अजहल शख्स भी उनकी शान में गुस्ताखी करके अल्लाह तआला की दुश्मनी मोल लेता है, किसी मदरसे में पढ़ा नहीं, इस्तिन्जा करना नहीं आता, और इमाम अबू हनीफ़ा रह० का ज़िक्र इतने भोंडे अन्दाज़ में गुस्ताखी के साथ करता है कि तअज्जुब होता है, और ये तो इस फिरक़ा का खास इम्तियाज़ है कि जो शख्स इस फिरक़े से वाबस्ता हो जाता है, अकाबिर अस्लाफ से बे ऐतमादी और उन की शान में बदजुबानी पैदा हो जाती है, खास तौर पर इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रह० से दिली बुग्ज़ व इनाद पैदा हो जाता है, हालांकि हदीस शरीफ में है:

"مَنْ عَادٰی لِیْ وَلِیًّا فَقَدْ اٰذَنْتُهٗ بِالْحَرْبِ"

तर्जुमाः- जिस शख्स ने मेरे किसी वली से अदावत की मैं उस से ऐलाने जंग करता हूँ।

और अल्लाह तआला जिस से ऐलाने जंग करे, उसका कहाँ ठिकाना हो सकता है, हदीस शरीफ में कुर्बे क़यामत की अलामत में ये भी बयान किया गया है कि:

"وَلَعَنَ آخِرُ هٰذِهِ الْاُمَّةِ اَوَّلَهَا"

तर्जुमाः- कि इस उम्मत के बाद वाले पहले वाले लोगों को बुरा कहेंगे।

इमाम अबू हनीफा रह० की शान में गुस्ताखी करने वाले यक़ीनन इस हदीस शरीफ के मिस्दाक़ में दाखिल हैं।

पेशे नज़र मुख्तसर रिसाला में अहले हदीस उलमा की नज़र में इमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लहि अलैह का क्या मक़ाम है?

और उनकी शान में गुस्ताखी करने का वबाल कितना सख्त है? बयान किया गया है कि अगर किसी और की नहीं मानते, मुहद्दिसीन के इरशाद भी अगर क़ाबिले तवज्जोह नहीं, कम अज़ कम अपने उलमा के इरशादात पर ही अमल करलें। बक़ौल शायर

يَـا نَـاطِـحَ الْـجَبَـلِ الْـعَـالِـىْ يُـكْلِمُـهٗ
اَشْـفِقْ عَلَى الرَّاسِ لَا تُشْفِقْ عَلَى الْجَبَلِ

तर्जुमाः- ऐ बुलन्द पहाड़ से टकराने वाले! ताकि तू उसको तज़लज़ुल करदे, इसका अन्देशा न कर बल्कि सर की फिक्र कर कि जो पहाड़ से टकराता है अपना सर फोड़ता है।

अपने सर बल्कि अपने दीन व ईमान की फिक्र कर।

از خدا جوئیم توفیق ادب
بے ادب محروم گشت از فضل رب

उम्मीद कि ये मुख्तसर रिसाला इन्साफ पसन्द और आलिबाने हक़ हज़रात के लिए मुफीद होगा। ان شاء اللہ تعالیٰ

اَللّٰهُمَّ اَرِنَا الْحَقَّ حَقًّا وَارْزُقْنَا اتِّبَاعَهٗ وَاَرِنَا الْبَاطِلَ بَاطِلاً وَارْزُقْنَا اجْتِنَابَهٗ
رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ وَتُبْ عَلَيْنَا اِنَّكَ اَنْتَ
التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ. بِحُرْمَةِ حَبِيْبِكَ سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى خَيْرِ خَلْقِهٖ سَيِّدِنَا
وَمَوْلاَنَا وَحَبِيْبِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ
وَاَصْحَابِهٖ اَجْمَعِيْنَ اِلٰى
يَوْمِ الدِّيْنِ
آمِيْن

मुहम्मद फारूक़ गुफिरा लहू

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّی عَلٰی رَسُوْلِهِ الْکَرِیْمِ. اَمَّا بَعْدُ!

हज़रत इमाम आज़म अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहि अलैह की शान में गुस्ताखी तो मुसलसल इस जमाअत का महबूब तरीन मश्ग़ला है, जाहिल से जाहिल शख्स इमाम आज़म रह० की शान में गुस्ताखी करता है, और अन्दाज़े गुफतुगू और लब व लहजा से मालूम होता है कि इमाम आज़म रह० से उन को दिली बुग्ज़ व इनाद है।

उम्मत के अज़ीम मुहद्दिस, अज़ीम फक़ीह, अज़ीम मोहसनि के साथ ये रवय्या कितना खतरनाक है, इस को कम अज़ कम अपने उलमा और अपने बज़ुरगों के अक़वाल की रोशनी में मुलाहिज़ा फरमाएं।

ग़ैर मुक़ल्लिदीन उलमा की चन्द इबारतें मुलाहिज़ा हों।

अहले हदीस मुतशद्दिद होते हैं

मौलाना दाऊद गज़नवी फरमाते हैं: एक अजीब बात है कि अहले हदीस उमूमन निहायत मुतशद्दिद होते हैं, थोड़ी सी बात पर सख्त नुक्ता चीनी के खूगर होते हैं। (दाऊद गज़नवी:18)

यही वह नफ्सियात हैं जिस पर कुरआन पाक ने

"وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةٍ"

फरमाया है, और "وَلَا تُطِعْ كُلَّ حَلَّافٍ" (الاٰية)

अइम्मा-ए-दीन की शान में गुस्ताखी से सूए खातमा का खौफ

(1).....मौलाना दाऊद गज़नवी फरमाते हैं: अइम्मा-ए-दीन

ने जो दीन की खिदमत की है उम्मत क़यामत तक उनके अहसान से उहदा बरआ नहीं हो सकती, हमारे नज़दीक अइम्मा-ए-दीन के लिए जो शख्स सूए ज़न रखता है, या ज़बान से उनकी शान में बेअदबी और गुस्ताखी के अल्फाज़ इस्तेमाल करता है, ये उसकी शक़ावत क़लबी की अलामत है, और मेरे नज़दीक उस के सूए खात्मा का खौफ है हमारे नज़दीक अइम्मा-ए-दीन की हिदायत व दिरायत पर उम्मत का इज्मा है। (दाऊद गज़नवी:373)

अहले हदीस को इमाम अबू हनीफ़ा रह० की बद दुआ लेकर बैठ गई

(2).....अइम्मा-ए-किराम का उन (मौलाना दाऊद गज़नवी) के दिल में इन्तिहाई एहतराम था, हज़रत इमाम अबू हनीफा रह० का इस्मे गिरामी बेहद इज्ज़त से लेते, एक दिन मैं (मौलाना मो० इस्हाक़) उन की खिदमत में हाज़िर था, जमाअते अहले हदीस की तन्ज़ीम के मुतअल्लिक़ गुफतुगू शुरू हुई, बड़े दर्दनाक लहजे में फरमायाः मोलवी इस्हाक़! जमाअत अहले हदीस को हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा रह० की रूहानी बद दुआ लेकर बैठ गई है, हर शख्स अबू हनीफा अबू हनीफा कह रहा है, कोई बहुत ही इज़्जत करता है तो इमाम अबू हनीफा कह देता है, फिर उनके बारे में उनकी तहक़ीक़ ये है कि वह तीन हदीसें जानते थे, या ज़्यादा से ज़्यादा ग्यारह, अगर कोई बहुत बड़ा अहसान करे तो वह उन्हें सत्तरह हदीसों का आलिम गरदानता है, जो लोग इतने जलीलुल क़द्र इमाम के बारे में ये नुक़्ता-ए-नज़र रखते हों उन में इत्तिहाद व यकजहती क्योंकर पैदा हो सकती है।

"یا غربة العلم انما اشکوا بثی وحزنی الی الله"

(داؤد غزنوی:۱۲۷)

इमाम अबू हनीफ़ा रह० की शान में गुस्ताखी करने वाला मुर्तद हो गया

(3).....हज़रत मुफ्ती मुहम्मद हसन रह० ने एक बार मौलाना अब्दुल जब्बार गज़नवी रह० की विलायत का एक वाक़िया सुनाया, वह वाक़िया यूँ था कि अमृतसर में एक मोहल्ला तीलियान था, जिस में अहले हदीस हज़रात की अक्सरीयत थी, वहाँ अब्दुल अली नामी एक मोलवी इमामत व खिताबत के फराईज़ अन्जाम देते थे, वह मदरसा ग़ज़नवीया में मौलाना अब्दुल जब्बार गज़नवी से पढ़ा करते थे, एक बार मोलवी अब्दुल अली ने कहा कि अबू हनीफ़ा रह० से तो मैं अच्छा हूँ, और बड़ा हूँ, क्योंकि उन्हें सिर्फ सत्तरह हदीसैं याद थीं, और मुझे उनसे कहीं ज़्यादह याद हैं। इस बात की इत्तिला मौलाना अब्दुल जब्बार को पहुँची, वह बुजुर्गों का निहायत अदब व अहतिराम किया करते थे, उन्होंने ये बात सुनी तो उनका चहरा गुस्से से सुर्ख हो गया, उन्होंने हुक्म दिया कि इस नालाइक़ (अब्दुल अली) को मदरसे से निकाल दो, वह तालिबे इल्म जब मदरसे से निकाला गया तो मौलाना अब्दुल जब्बार गज़नवी रह० ने फरमायाः मुझे ऐसा लगता है कि ये शख्स अन्क़रीब मुरतद हो जाएगा।

मुफ्ती मुहम्मद हसन रावी कहते हैंः कि एक हफ्ता न गुज़रा था कि वह शख्स मुर्तद होगया, और लोगों ने उसे ज़लील करके मस्जिद से निकाल दिया।

इस वाक़िये के बाद किसी ने मौलाना अब्दुल जब्बार गज़नवी से सवाल कियाः हज़रत आपको कैसे इल्म हो गया था कि वह अन्क़रीब काफिर हो जाएगा?

फरमाने लगेः कि जिस वक़्त मुझे उसकी गुस्ताखी की

इत्तिला मिली उस वक़्त बुखारी शरीफ की ये हदीस मेरे सामने आगई कि:

"من عادی لی ولیا فقد آذنته بالحرب"

जिस शख्स ने मेरे किसी वली से अदावत की मैं उस से ऐलाने जंग करता हूँ।

मेरी नज़र में इमाम अबू हनीफा वलीयुल्लाह थे, जब अल्लाह तआला की तरफ से ऐलाने जंग होगया तो जंग में हर फरीक़ दूसरे की आला चीज़ को छीनता है, इस लिए ऐसे शख्स के पास ईमान कैसे रह सकता था। (दाऊद गज़नवी:191)

अहले हदीस गुलाम अहमद क़ादयानी के हामी बन गये

इसी तरह अमृतसर में सब से पहले अमल बिल हदीस शुरू करने वाले हाफिज़ मो० यूसुफ साहब डिप्टी कलेक्टर मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी के मुईद व हामी बन गये।

(इशाअतुस सुन्नह:114/21)

ग़ैर मुक़ल्लिद मुर्तद ईसाई

मौलाना महबूब अहमद साहब अमृतसरी लिखते हैं:

जहाँ तक मुझे इल्म है वह ये कि अमृतसर व गिर्दो नवाह में जिस क़द्रर मुर्तद ईसाई हैं ये पहले ग़ैर मुक़ल्लिद थे।

(अल-किनाबुल मजीद:8)

इमाम अबू हनीफा रह० की तरफ से दिल में गुबार आने का वबाल

मौलाना मो० इब्राहीम साहब स्यालकोटी के दिल में भी

इमाम आज़म रह० के बारे में एक दफा कुछ गुबार आगया था, खुद लिखते हैं: कि (मैं ने) इमाम अबू हनीफ़ा रह० के मुतअल्लिक़ तहक़ीक़ात शुरू कीं, तो मुख्तलिफ कुतुब की वर्क़ गरदानी से मेरे दिल पर कुछ गुबार आगया, जिसका असर बैरूनी तौर पर ये हुआ कि एक दिन दोपहर के वक़्त जब सूरज पूरी तरह रोशन था यकायक मेरे सामने गुप अंधेरा छा गया, गोया

"ظلمات بعضها فوق بعض"

का नज़ारह हो गया, मअन खुदा तआला ने मेरे दिल में डाला कि ये हज़रत इमाम साहब रह० से बदज़नी का नतीजा है, इस से इस्तिग़फार करो, मैं ने कलिमात दोहराने शुरू किये, वह अंधेरे फौरन काफूर हो गये, और उनके बजाए ऐसा नूर चमका कि उसने दोपहर की रोशनी को मात कर दिया, उस वक़्त हज़रत इमाम साहब रह० से हुस्ने अक़ीदत और ज़्यादह बढ़ गई और मैं उन शख्सों से जिन को हज़रत इमाम साहब रह० से हुस्ने अक़ीदत नहीं है, कहा करता हूँ: कि मेरी और आप की मिसाल इस आयत की मिसाल है कि हक़ तआला मुन्किरीन मआरिजे कुदसीया आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से खिताब करके फरमाता है:

"اَفَتُمَارُوْنَهٗ عَلٰى مَا يَرٰى"

मैं ने जो कुछ आलमे बेदारी और होशयारी में देख लिया उसमे मुझसे झगड़ा करना बे सूद है।

"وَاللّٰهُ وَلِيُّ الْهِدَايَةِ خَاتِمَةُ الْكَلَامِ"

अब मैं इस मज़मून को इन कलिमात पर खत्म करता हूँ, और अपने नाज़िरीन से उम्मीद रखता हूँ कि वह बुज़ुरगाने दीन से खुसूसन अइम्मा मतबूईन से हुस्ने ज़न रखें, और गुस्ताखी और बेअदबी से परहेज़ करें, क्योंकि इसका नतीजा हर दो जहाँ

में मौजिबे खुसरान व नुक़सान है।

"نَسْئَلُ اللّٰهَ الْكَرِيْمَ حُسْنَ الظَّنِّ وَالتَّأَدُّبَ مَعَ الصَّالِحِيْنَ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ الْعَظِيْمَ مِنْ سُوْءِ الظَّنِّ بِهِمْ فَإِنَّهُ عَرْقُ الرِّفْضِ وَالْخُرُوْجِ وَعَلَامَةُ الْمُنَافِقِيْنَ وَلَنِعْمَ مَا قِيْلَ"

از خدا خواہیم توفیق ادب
بے ادب محروم شد از لطف رب

(تاریخ اہل حدیث:۷۹)

अइम्मा-ए-दीन के हक़ में बेअदबी करने वाला राफिज़ी

मौलाना अब्दुर्रहीम साहब स्यालकोटी रह० ने फरमायाः

मौलाना सनाउल्लाह मरहूम अमृतसरी ने जो मुझ से बयान किया कि जिन अय्याम में मैं कानपुर में मौलाना अहमद हसन साहब कानपुरी से इल्मे मन्तिक़ की तहसील करता था, इख्तिलाफे मज़ाक़ व मशरब के सबब से अहनाफ से मेरी गुफतुगू रहती थी, उन लोगों ने मुझ पर ये इल्ज़ाम थोपा कि तुम अहले हदीस लोग अइम्मा-ए-दीन के हक़ में बेअदबी करते हो, मैं ने इस के मुतअल्लिक़ हज़रत मियाँ साहब मरहूम देहलवी यानी शेखुल कुल हज़रत सैय्यद नज़ीर हुसैन साहब मरहूम से दरयाफ्त किया तो आप ने जवाब में कहा कि हम ऐसे शख्स को जो अइम्मा-ए-दीन के हक़ में बेअदबी करे झूठा राफिज़ी जानते हैं, अलावह अज़ीं मियाँ साहब मरहूम मेयारूल हक़ में इमाम साहब का ज़िक्र इन अल्फाज़ में करते हैं:

"اما منا و سیدنا ابو حنیفة النعمانؒ افاض الله علیه شابیب

العفو والغفران"

नीज़ फरमाते हैंः इन (इमाम साहब) का मुज्तहिद होना और मुत्तबा-ए-सुन्नत और मुत्तक़ी व परहेज़गार होना काफी है, उनके फज़ाईल में और आयते करीमा

"اِنَّ اَکْرَمَکُمْ عِنْدَ اللّٰہِ اَتْقَاکُمْ"

ज़ीनत बख्श मरातिब उन के लिए हैं।

(हाशिया तारीख अहले हदीसः80)

हज़रात अइम्मा से अक़ीदत नुजूले बरकात का ज़रीया है

मौलाना मो० इब्राहीम साहब रह० स्यालकोटी फरमाते हैंः

हर चन्द कि मैं सख्त गुनहगार हूँ, लेकिन ये ईमान रखता हूँ और अपने सालेह असात़ज़ह जनाब मौलाना अब्दुल्लाह गुलाम हसन साहब मरहूम स्यालकोटी और जनाब मौलाना हाफिज़ अब्दुल मन्नान साहब मरहूम मुहद्दिस वज़ीराबादी की सोहबत व तलक़ीन से ये बात यक़ीन के रूतबे तक पहुंच चुकी है कि बुजुरगाने दीन खुसूसन हज़रात अइम्मा मतबूईन से हुस्ने अक़ीदत नुजूले बरकात का ज़रीया है। (तारीख अहले हदीसः79)

इमाम अबू हनीफा रह० की बेअदबी करने वाले का खतमा अच्छा नहीं होता

मौलाना मो० इब्राहीम साहब रह० स्यालकोटी हाफिज़ अब्दुल मन्नान साहब वज़ीराबादी रह० के मुतअल्लिक़ लिखते हैः

आप अइम्मा का बहुत अदब करते थे, चुनान्चे आप फरमाया करते थे कि जो शख्स अइम्मा-ए-दीन और खुसूसन

इमाम अबू हनीफा रह० की बेअदबी करता है, उस का खातमा अच्छा नहीं होता। (तारीख अहले हदीस:428)

नईम बिन हम्माद का अन्जाम

नईम बिन हम्माद खुज़ाई इमाम बुखारी रह० के असात्ज़ह में हैं। "وَضَعَ كُتُبًا فِى الرَّدِّ عَلَى الْحَنَفِيَّةِ" जिस ने हन्फियों के रद में कई किताबें तस्नीफ कीं, ये शख्स इमाम साहब के हसद में यहाँ तक बढ़ गया था कि झूठी हदीसें भी गढ़ लिया करता था, और इमाम साहब की ऐब गोई में झूठी हिकायतें भी गढ़ लेता था, जो सब की सब झूठ हैं।

(मीज़ानुल ऐतदाल:536/2, तहज़ीबुत्तहज़ीब:463/1, निहायतुस सुऊल फी रिवायतिस सुन्नतिल वुसूल बहवाला तारीख अहले हदीस:70, दाऊद गज़नवी:378)

मौलाना स्यालकोटी रह० ने मुकम्मल बहस के बाद लिखा है। खुलासतुल कलाम ये कि नईम की शख्सियत ऐसी नहीं कि उस की रिवायत की बिना पर हज़रत इमाम अबू हनीफा रह० जैसे बुजुर्ग इमाम के हक़ में बद गोई करें, जिन को हाफिज़ शमसुद्दीन ज़हबी रह० जैसे नाक़िदुर्रिजाल इमाम आज़म के मुअज्ज़ज़ लक़ब से याद करते हैं।

हाफिज़ इब्ने कसीर रह० "अल-बिदाया" में आपकी निहायत तारीफ करते हैं, आपके हक़ में लिखते हैं:

"اَحَدُ الْاَئِمَّةِ الْاِسْلَامِ وَالسَّادَةِ الْاِعْلَامِ وَاَحَدُ اَرْكَانِ الْعُلَمَاءِ وَاَحَدُ الْاَئِمَّةِ الْاَرْبَعَةِ اَصْحَابُ الْمَذَاهِبِ الْمَتْبُوْعَةِ الخ"

नीज़ इमाम यहया बिन मुईन रह० से नक़ल करते हैं कि इन्होंने कहा कि आप (अबू हनीफा रह०) सिक़ह थे, अहलुस सिद्क़ से थे, किज़्ब से मुत्तहम न थे।

नीज़ अब्दुल्लाह बिन दाऊद अल-खरीबी रह० से नक़ल करते हैं, उन्होंने कहाः लोगों को मुनासिब है कि अपनी नमाज़ों में इमाम अबू हनीफा के लिए दुआ किया करें, क्योंकि उन्होंने उन पर फिक़्ह और सुनन नब्वीया को महफूज़ रखा।

(अल-बिदायाः107, तारीख अहले हदीस)

ये शख्स (नईम बिन हम्माद) गिरिफ्तार हुआ, और वहीं फौत हुआ (हथकड़ियों समेत)

"فالقی فی حفرة ولم یکفن ولم یصل علیه فعل ذالک به صاحب ابن ابی داؤد" (تاریخ بغداد: ۳۱۴)

देखिए! गुस्ताखे इमाम, नमाज़े जनाज़ा, कफन और कब्र तक से महरूम रहा।

इमाम अबू हनीफा रह० से बदज़नी की मुआफी

आलिम बाअमल फाज़िले अकमल हज़रत मौलाना सैय्यद तजम्मुल हुसैन बिहारी रह० लिखते हैंः एक ग़ैर मुक़ल्लिद मोलवी इब्राहीम आरवी मक्का मुकर्रमा गये, और हज़रत किब्ला-ए-आलम मौलाना सैय्यद शाह मुहम्मद अली साहब मूँगेरी रह० भी वहीं थे, मौलाना मुहम्मद इब्राहीम साहब ने कहा कि जनाबे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मजलिस ख्वाब में मेरी हाज़िरी हुई, और मजलिसे मुबारक में हज़रत इमाम आज़म अबू हनीफा रह० भी तशरीफ फरमा थे, जनाबे रिसालत मआब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझे फरमाया कि तुम उन यानी इमाम आज़म अबू हनीफा रह० से बदज़न हो, क़ुसूर मुआफ कराओ, मैं ने इमाम आज़म रह० के क़दमों पर गिर कर मुआफ कराया।

(कमालातः17)

इमाम मुहम्मद रह० की शान में गुस्ताखी

एक ग़ैर मुक़ल्लिद तालिबे इल्म मदरसा देवबन्द में पढ़ता था, उसने हज़रत इमाम मुहम्मद रह० की शान में गुस्ताखी की, इस पर और तालिबे इल्मों ने उसे पीट डाला, इस वाक़िये की मौलाना नज़ीर हुसैन साहब से शिकायत भी की, हज़रत वाला ने फरमायाः कि उस ने इमाम मुहम्मद रह० की शान में गुस्ताखाना कलिमात इस्तेमाल किए थे, उस पर तलबा को गुस्सा आगया, ये सुन कर मोलवी साहब ने फरमायाः कि वाक़ई ये उसकी बड़ी बेजा हरकत थी। (दाऊद गज़नवी:380)

इब्ने हुमाम की तन्क़ीस

आड़ में बैठे हुए एक ग़ैर मुक़ल्लिद ने दौराने गुफ्तुगू हज़रत इब्ने हुमाम रह० की कुछ तन्क़ीस की, मौलाना नज़ीर हुसैन साहब ने उसे ड़ांटा कि ये बड़े लोग थे, हमारा मुंह नहीं कि उनकी शान में कुछ कह सकें। (दाऊद गज़नवी:380)

इमाम अबू हनीफा रह० की शान में गुस्ताखी करने वाला

"الناس فی ابی حنیفة حاسد او جاهل"

यानी हज़रत इमाम अबू हनीफा रह० के हक़ में बुरी राय रखने वाले कुछ तो हासिद हैं और कुछ उन के मक़ाम से बे खबर हैं। (दाऊद गज़नवी:278)

क़ाज़ियुल कुज़ात
इमाम अबू यूसुफ़ रह०

क़ाज़ियुल कुज़ात इमाम अबू यूसुफ़ रह०

इसी तरह इमाम अबू यूसुफ रह० जैसे जलीलुल क़द्र मुहद्दिस व फ़क़ीह के बारे में ये तब्क़ा अपने इन्तिहाई दिली बुग्ज़ व इनाद का इज़हार करता है, और उनके बारे में ऐसी बातें कहता है जो एक मोमिन से भी मुमकिन नहीं, मस्लन उन्होंने हारून रशीद को फत्वा दिया था कि अपने बाप की लौंडी से तुझे सोहबत करना हलाल है, इस के सिले में उन्हें क़ाज़ी बना दिया गया। और इमाम अबू यूसुफ रह० हारून रशीद को खुद शराब बनाकर पिलाते थे। العیاذ باللّٰہ। मुलाहिज़ा फरमाएं:

मुहद्दिसीन में उनका क्या मक़ाम है?

मुहद्दिस अली बिन सालेह (सन् 151 हि०) जब हदीस रिवायत फरमाते हैं तो फरमाते हैं:

"حدثنی افقه الفقهاء وقاضی القجاة وسید العلما ابو یوسف"

यानी मुझे अपने दौर के सब फक़हा से बड़े फक़ीह और क़ाज़ियुल कुज़ात आलिमों के सरदार ने हदीस सुनाई।

और मुहद्दिस अली इब्नुल जअद (सन् 230 हि०) जो इमाम बुखारी रह० के उस्ताज़ हैं, फरमाया करते: जब तू अबू यूसुफ रह० का नाम लेना चाहे तो पहले अपने मुंह को साबुन और गर्म पानी से खूब पाक साफ करले। फिर फरमाया: खुदा की क़सम मैं ने इमाम अबू यूसुफ रह० जैसा मुहद्दिस नहीं देखा, आप साईमुद्दहर थे, और क़ाज़ी बनने के बाद भी रोज़ाना 200 नफिल पढ़ते थे, किसी मुसलमान पर तोहमत लगाने के लिए सुबूत चाहिए,

आपने जो वाक़िया उनकी तरफ मन्सूब किया है, उस की कोई सनद नहीं है।

आपके नवाब सिद्दीक़ हसन खाँ ही लिखते हैंः ये वाक़िआ बिलकुल बे अस्ल है। (कश्फुल इल्तिबासः269)

और फिर आप ने जो इस से नतीजा निकाला है कि इस वजह से हारून रशीद ने क़ाज़ी रह० को क़ाज़ी बनाया, तो जिहालत का बहुत बड़ा करिश्मा है, क्योंकि क़ाज़ी साहब को खलीफा महदी ने इस उहदे पर फाईज़ फरमाया था, फिर खलीफा हादी के ज़माने में भी वह इस उहदे पर फाईज़ रहे, उसके बाद हारून रशीद के ज़माने में भी इस उहदे पर फाईज़ रहे।

(मुक़द्दमा किताबुल खिराज)

हज़रत क़ाज़ी साहब रह० का तो खौफे खुदा में हाल ये था कि आखिरी बीमारी में बहुत परेशान थे और फरमाते थे कि अल्लाह की क़सम मैं ने न कभी बदकारी की, न कभी ज़िन्दगी भर एक दिरहम भी हराम का खाया, और न ज़िन्दगी भर के फैसलों में कभी नाइन्साफी की, हाँ एक मर्तबा नाईन्साफी हुई कि मैं हारून रशीद को कुछ फैसले सुना रहा था कि एक ईसाई आया, उसने दावा किया कि फुलाँ बाग़ खलीफा ने मुझ से गसब किया है, मैं ने खलीफा से पूछा, उस ने कहा वह तो मुझे खलीफा मन्सूर से मीरास में मिला है, मैं ने ईसाई से कहा कि तेरे पास कोई गवाह है? उसने कहा कि नहीं, गवाह तो नहीं, आप खलीफा से क़सम लें, मैं ने खलीफा से क़सम ली, उस ने क़सम उठाई, और ईसाई चला गया, अब मैं इस पर डर रहा हूँ कि मैं ने ईसाई को खलीफा के साथ बैठा कर ये ये मुकद्दमा क्यों न सुना? इस पर रो रहे थे। (मनाक़िबे ज़हबीः43)

हज़रत क़ाज़ी साहब बीमार थे तो वली-ए-कामिल हज़रत

ख्वाजा मारूफ करखी रह० ने हज़रत अब्दुर्रहमान इब्नुल क़वास रह० से फरमाया कि क़ाज़ी साहब की वफात हो जाए तो मुझे भी खबर देना, अब्दुर्रहमान फरमाते हैं, मैं बाहर निकला और क़ाज़ी साहब रह० के घर की तरफ गया तो क़ाज़ी साहब का जनाज़ा बिलकुल तैय्यार था, मैं ने सोचा अब हज़रत ख्वाजा मारूफ करखी रह० को बताने जाऊँगा तो मैं खुद जनाज़े से रह जाऊँगा, इस लिए मैं ने नमाज़ जनाज़ा पढ़ी और फिर आकर हज़रत मारूफ करखी रह० को खबर दी, आपको सुन कर बहुत सदमा हुआ, हज़रत मारूफ करखी रह० ने फरमायाः आज ही रात में मैं ने ख्वाब देखा कि मैं गोया जन्नत में दाखिल हुआ हूँ, तो एक बहुत शानदार महल देखा, मैं ने पूछाः ये किस का महल है? तो मुझे बताया गया कि ये क़ाज़ी अबू यूसुफ का है, मैं ने पूछा ऐसे आलीशान महल के वह हक़दार कैसे बने? तो बताया गया कि उन्हों ने लोगों को खूब इल्म सिखाया, और लोगों ने उन पर कई बे बुन्याद इल्ज़ाम लगाये। (मनाक़िबे ज़हबीः44)

इमाम मुहम्मद रह० के विसाल के बाद वली-ए-कामिल मुहद्दिसे आज़म अबदाले वक़्त ने ख्वाब में उन्हें देखा और पूछाः मुहम्मद! क्या गुज़री? फरमायाः अल्लाह तआला ने फरमाया मैं ने तुझे इल्म का खज़ाना बनाया था इस लिए कोई अज़ाब नहीं, जा जन्नत में चला जा, और मैं इस अज़ीमुश्शान महल में हूँ। मैं ने पूछा क़ाज़ी अबू यूसुफ रह० कहाँ हैं? फरमायाः वह मुझ से भी बुलन्द मक़ामात पर हैं। फिर मैं ने पूछा इमाम अबू हनीफा रह० कहाँ हैं? फरमायाः वह तो कई दरजे हम से बुलन्द हैं।

(बग़दादीः182/2)

जो लोग सदियों से जन्नत नशीन हैं, मगर लोग उनको भी मुआफ नहीं करते।

सहाबा-ए-किराम

रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन

की शान में

ग़ैर मुक़ल्लिदीन की गुस्ताखियाँ

अर्ज़े मुरत्तिब

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّی عَلٰی رَسُوْلِهِ الْکَرِیْمِ. اَمَّا بَعْدُ!

कुरआने पाक में ईमान वालों की शान बयान की गई है कि वह इस तरह दुआ करते हैं:

"وَالَّذِیْنَ جَاؤُوْا مِنْ بَعْدِهِمْ یَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اغْفِرْلَنَا وَلِاِخْوَانِنَا الَّذِیْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِیْمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِیْ قُلُوْبِنَا غِلًّا لِلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا رَبَّنَا اِنَّکَ رَؤُفٌ الرَّحِیْمُ" (سورة الحشر)

तर्जुमाः-

आयते पाक से मालूम हुआ कि सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन से मुहब्बत करना वाजिब है, और किसी सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु की तरफ से अपने दिल में बूग्ज़ व इनाद व कीना वग़ैरह रखना किसी तरह जाईज़ नहीं।

इस लिए हदीस शरीफ में हज़रत नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन की मुहब्बत को अपनी मुहब्बत की अलामत और उन से बुग्ज़ को अपनी ज़ाते गिरामी से बूग्ज़ की अलामत क़रार दिया है।

"فَمَنْ اَحَبَّهُمْ فَبِحُبِّیْ اَحَبَّهُمْ وَمَنْ اَبْغَضَهُمْ فَبِبُغْضِیْ اَبْغَضَهُمْ"

(الحدیث)

और ज़ाहिर है कि जिस से मुहब्बत होती है उस के मुतअल्लिक़ीन से भी मुहब्बत होती है, किसी शख्स से मुहब्बत होती है तो उस के वालिदैन से भी मुहब्बत होती है और उस की औलाद से भी मुहब्बत होती है।

इन्सान को किसी से मुहब्बत होती है, तो उसके असात़ज़ह से भी मुहब्बत होती है, उस्ताज़ से मुहब्बत होती है तो उसके शागिर्दों से भी मुहब्बत होती है।

यक़ीनन आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुहब्बत का तक़ाज़ा सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन से मुहब्बत करना है, अगर किसी दिल में सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन की मुहब्बत नहीं बल्कि मुहब्बत के बजाय उन से बुग्ज़ व इनाद है, यक़ीनन उसके दिल में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की भी मुहब्बत नहीं है।

कुरआने पाक में सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन की अज़मते शान से जलन कुफ्फार का तरीक़ा बतलाया है। इरशादे खुदावन्दी है:

"وَمَثَلُهُمْ فِى الْاِنْجِيْلِ كَزَرْعٍ اَخْرَجَ شَطْأَهٗ فَاٰزَرَهٗ فَاسْتَغْلَظَ فَاسْتَوٰى عَلٰى سُوْقِهٖ يُعْجِبُ الزُّرَّاعَ لِيَغِيْظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ"

तर्जुमाः- फिर फरमाया इन्जील में उनकी एक और मिसाल दी गई कि वह ऐसे हैं जैसे कोई काश्तकार ज़मीन में बीज उगाए तो अव्वल वह एक ज़ईफ सी सुई की शक्ल में नमूदार होता है, फिर उसमें शाखें निकलती हैं, फिर वह और क़वी होता है, फिर उसका मज़बूत तना बन जाता है, खेती करने वाले को खुश करता है, अच्छा लगता है, ताकि उनकी इस हालत से काफिरों को हसद में जला दें।

मालूम हुआ कि सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन से बुग्ज़ व इनाद कुफ्फार का तरीक़ा है।

फिरक़ा-ए-ग़ैर मुक़ल्लिदीन (नाम निहाद अहले हदीस) जो अपने मासिवा तमाम उम्मत को गुमराह बल्कि काफिर व मुश्रिक क़रार देता है। मशाईख, औलिया अल्लाह, अइम्मा मतबूईन और

उनके मुक़ल्लिदीन से बढ़ कर सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन की शान में भी गुस्ताखियाँ करता है। العیاذ باللّٰہ

हदीस शरीफ में अलामाते क़यामत बयान करते हुए इरशाद फरमाया है: "وَلَعَنَ اٰخِرَهُ هٰذِهِ الْاُمَّةِ اَوَّلَهَا"

इस उम्मत के अखीर के पहलों को लानत करेंगे। यानी कुरबे क़यामत की निशानियों में से एक ये भी है कि बाद वाले पहले हज़रात को बुरा कहने लगें। ये हदीस शरीफ ग़ैर मुक़ल्लिदीन पर बजा तौर पर सादिक़ आती है। इस रिसाला में दो बाब हैं:

अव्वल बाब में सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन के मुक़ाम व मन्ज़िलत को कुरआन व हदीस की रोशनी में मुस्तसर तौर पर बयान किया गया है।

और बाबे दोम में सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन की शान में ग़ैर मुक़ल्लिदीन की गुस्ताखियों का बयान है ताकि इस फिरक़े के ज़ैग़ व ज़लाल को समझने में सहूलत हो।

اَللّٰهُمَّ اَرِنَا الْحَقَّ حَقًّا وَارْزُقْنَا اتِّبَاعَهُ وَاَرِنَا الْبَاطِلَ بَاطِلاً وَارْزُقْنَا اجْتِنَابَهُ
رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا اِنَّکَ اَنْتَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ وَتُبْ عَلَیْنَا اِنَّکَ اَنْتَ
التَّوَّابُ الرَّحِیْمُ. بِحُرْمَةِ حَبِیْبِکَ سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
وَصَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی خَیْرِ خَلْقِهٖ سَیِّدِنَا
وَمَوْلَانَا وَحَبِیْبِنَا مَحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِهٖ
وَاَصْحَابِهٖ اَجْمَعِیْنَ اِلٰی
یَوْمِ الدِّیْنِ
آمیْن

मुहम्मद फारूक़ गुफिरा लहू

27/6/1422 हि०

बाबे अव्वल

हज़रात सहाबा-ए-किराम

रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन

का

मुक़ाम व मन्ज़िलत

हज़रात सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन के बारे में अल्लाह जल्ला शानुहू फरमाते हैं:

(१)..... "وَالسّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ مِنَ الْمُهَاجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ وَالَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُمْ بِاِحْسَانٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ وَاَعَدَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ تَحْتَهَا الْاَنْهٰرُ خَالِدِيْنَ فِيْهَا اَبَدًا ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ"

तर्जुमाः- मुहाजिरीन और अन्सान में से सबक़त करने वाले और सब से अव्वल रहने वाले और जिन लोगों ने ईमान व इख्लास के साथ साबिक़ीन अव्वलीन की पैरवी की तो उन सब से अल्लाह राज़ी हुआ और वह अल्लाह से राज़ी हुए, और अल्लाह ने उनके लिए ऐसे बाग़ तय्यार किये हैं जिन के नीचे नहरें जारी हैं, वह हमेशा उन बाग़ों में रहेंगे, यही बड़ी कामियाबी है।

एक और जगह इरशादे खुदावन्दी है:

(२)..... "لٰكِنِ الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ جَاهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ وَاُولٰئِكَ لَهُمُ الْخَيْرَاتُ وَاُولٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ"

तर्जुमाः- लेकिन हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और जो लोग उनके साथ ईमान लाए, उन्होंने अपने माल और जान से जिहाद किया, यही लोग बहतरीन लोग हैं, और यही लोग कामियाब हैं।

(३)..... "مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ اَشِدَّاءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَاءُ بَيْنَهُمْ تَرَاهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَّبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ

وَرِضْوَانًا سِيْمَاهُمْ فِيْ وُجُوْهِهِمْ مِنْ اَثَرِ السُّجُوْدِ"

तर्जुमाः- मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और जो लोग उनके साथ हैं ज़ोर आवर हैं काफिरों पर, नर्म दिल हैं आपस में, तू देखेगा उनको रूकू में और सज्दह में ढूंढते हैं अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी खुशी, निशानी उनकी उनके मुंह पर है सज्दह के असर से।

और हज़रत नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके बारे में फरमायाः

(۴)..... "مَنْ اَبْغَضَهُمْ فَبِبُغْضِیْ اَبْغَضَهُمْ وَمَنْ آذَاهُمْ فَقَدْ آذَانِیْ وَمَنْ آذَانِیْ فَقَدْ اَذَی اللّٰهَ وَمَنْ اَذَی اللّٰهَ فَیُوْشِکُ اَنْ یَّاْخُذَهُمْ"

तर्जुमाः- जिसको सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन से बुग्ज़ है उसे दर हक़ीक़त मुझ से बुग्ज़ है और जिस ने सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन को ईज़ा पहुँचाई तो उसने दर हक़ीक़त मुझे ईज़ा पहुँचाई, और जिस ने मुझे ईज़ा पहुँचाई उसने दर हक़ीक़त अल्लाह को ईज़ा पहुँचाई और जिसने अल्लाह को ईज़ा पहुँचाई उसकी हलाकत में क्या शक है?

(तिरमिज़ी शरीफ)

तिरमिज़ी शरीफ में ह़ज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

(۵)..... "اِذَا رَاَیْتَهُمْ اَلَّذِیْنَ یَسُبُّوْنَ اَصْحَابِیْ فَقُوْلُوْا لَعْنَةُ اللّٰهِ عَلٰی شَرِّکُمْ"

तर्जुमाः- जब तुम उन लोगों को देखों जो मेरे सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन को गाली दे रहे हैं तो उनसे कहोः तुम्हारे शर पर अल्लाह की लानत हो।

एक बहुत मशहूर हदीस शरीफ में हैः

(٢)..... "اَللّٰهَ اَللّٰهَ فِیْ اَصْحَابِیْ لَاتَتَّخِذُوْهُمْ غَرَضًا مِّنْ بَعْدِیْ" (سنن ترمذی شریف)

तर्जुमाः- मेरे सहाबा के बारे में अल्लाह से डरो, मेरे बाद उन्हें निशाना न बना लेना।

अल्लामा ज़हबी ने रिसाला "अल-कबाईर" में सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन के बारे में हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत से आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद नक़ल किया हैः

(٢)..... "قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ اِنَّ اللّٰهَ اِخْتَارَنِیْ وَاخْتَارَ لِیْ اَصْحَابِیْ وَجَعَلَ لِیْ اَصْحَابًا وَاِخْوَانًا وَاَصْهَارًا وَسَیَجِیْئُ قَوْمٌ بَعْدَهُمْ یَعِیْبُوْنَهُمْ وَیَنْقُصُوْنَهُمْ فَلَا تُوَاکِلُوْهُمْ وَلَا تُشَاوِرُوْهُمْ وَلَا تُنَاکِحُوْهُمْ وَلَا تُصَلُّوْا عَلَیْهِمْ وَلَا تُصَلُّوْا مَعَهُمْ"

तर्जुमाः- आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमायाः अल्लाह तआला ने मुझे चुना और मेरे लिए मेरे असहाब को चुना, और मेरे लिए उसने असहाब व इखवान और असहार बनाए, और उनके बाद एक क़ौम पैदा होगी, ये लोग मेरे असहाब की मन्क़सत बयान करेंगे, और उन की ऐब जोई करेंगे, तुम उनके साथ न खाओ न पियो, न उनका मशविरह लो, न उनको मशविरह दो, उनके साथ शादी ब्याह न करो, न उनकी नमाज़

जनाज़ह पढ़ो, और न उनके साथ नमाज़ अदा करो।

इस इरशाद पाक से मालूम हुआ कि सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन, अम्बिया व रूसुल अलैहिमुस्सलाम के बाद तारीखे इन्सानी में अशरफ तरीन लोगों में से थे, जिनको अशरफुल अम्बिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम की मईयत व सोहबत और उनकी तालीम की नश्र व अशाअत और शरीअत को आम करने के लिए चुना था।

नीज़ ये मालूम हुआ कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ये पेशीन गोई है कि आप के बाद इस उम्मत में एक तब्क़ा पैदा होगा, जो सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन की ऐब जोई और उनकी मज़म्मत किया करेगा, ये इस उम्मत का बदतरीन गिरोह होगा। मुसलमानों के लिए उनके साथ उठना बैठना और उनसे किसी तरह का भी तअल्लुक़ रखना हराम होगा, उनके साथ नमाज़ भी पढ़ना जाईज़ न होगा, यहाँ तक कि अगर इन दुश्मनाने सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन गिरोह का कोई फर्द मर जाए तो उसकी जनाज़ह की नमाज़ भी पढ़ने से रोका गया है।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इन इरशादात से दीन में सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन के मुक़ाम व मन्ज़िलत का अन्दाज़ह किया जा सकता है।

हज़रत अबू ज़रआ रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं:

जब तुम किसी को देखो कि वह किसी सहाबी की बुराई कर रहा है, तो समझ लो कि वह ज़िन्दीक़ है। (अल-इसाबह:11/1)

हाफिज़ ज़हबी रह० फरमाते हैं:

"فَمَنْ طَعَنَ فِيْهِمْ اَوْ سَبَّهُمْ فَقَدْ خَرَجَ مِنَ الدِّيْنِ وَمَرَقَ مِنْ مِّلَّةِ الْمُسْلِمِيْنَ" (الکبائر:۲۲۸)

तर्जुमाः- यानी सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन को जिस ने मतऊन किया या उनको बुरा भला कहा वह दीने इस्लाम से निकल गया और मुसलमानों की मिल्लत और जमाअत से वह कट गया।

अल्लातमा क़ाज़ी अयाज़ रह० फरमाते हैंः

"وَمِنْ تَوْقِيْرِهٖ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَوْقِيْرُ اَصْحَابِهٖ وَبِرَّهُمْ وَمَعْرِفَةُ حَقِّهِمْ وَالْاِقْتِدَاءُ بِهِمْ وَحُسْنُ الثَّنَاءِ عَلَيْهِمْ"

(الاساليب البديعة:٨)

तर्जुमाः- यानी आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तौक़ीर व ताज़ीम का तक़ाज़ा है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के असहाबे-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन की भी तौक़ीर की जाए, उनके साथ नेक सुलूक हो, उनका हक़ जाना जाए, उनकी पैरवी की जाए, उनकी मद्ह व सना की जाए।

इमाम ज़हबी रह० फरमाते हैंः

सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन की जो बुराई करे, और उनकी लग्ज़िशों के दरपे रहे, और उनकी तरफ कोई ऐब मन्सूब करे, वह मुनाफिक़ होगा। (अल-कबाइरः**239**)

इमाम मालिक रह० फरमाते हैंः

जिसने असहाबे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में से किसी को अबू बकर को, उमर को, उस्मान को, अली को, मुअविया को, अम्र बिन आस (रज़ियल्लाहु अन्हुम) को, बुरा-भला कहा तो अगर वह ये कहे कि वह लोग ज़लाल व कुफ्र पर थे तो उसे क़त्ल किया जाएगा, और अगर उसके अलावा कोई बात कहे तो उसको सख्त सज़ा दी जाएगी। (शरहुश्शिफाः**755/1**)

सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन को बुरा-भला कहने वालों के बारे में उलमा-ए-उम्मत और सल्फे सालिहीन का मौक़िफ बिल्कुल वाज़ेह और बेगुबार है, उम्मते मुहम्मदिया का इस पर इत्तिफाक़ है कि सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन की मज़म्मत करने वाला ज़िन्दीक़ और मुनाफिक़ है। (अल-कबाइर लिज़्ज़हबी:239)

इमाम सरखसी रह० फरमाते हैं:

जिस ने सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन की ऐब जोई की वह मुल्हिद और इस्लाम का मुखालिफ है, उसका इलाज तलवार है, अगर वह तौबा न करे। (उसूले सरखसी:124/2)

और अल्लामा इब्ने तैमिया रह० फरमाते हैं:

वह बदतरीन ज़िन्दीक़ है। (फतावा इब्ने तैमिया:163/2)

बाबे दोम

सहाबा-ए-किराम

रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन

की शान में

ग़ैर मुक़ल्लिदीन की गुस्ताखियाँ

हज़रत आयशा रज़िल्लाहु अन्हा की शान में गुस्ताखी

मशहूर ग़ैर मुक़ल्लिद आलिम अब्दुल हक़ बनारसी ने हज़ारहा आदिमयों को अमल बिल हदीस के परदह में क़ैदे मज़हब से निकाला। और मोलवी साहब ने हमारे सामने कहा कि आयशा हज़रते अली से लड़कर मुर्तद हुई, अगर बे तौबा मरी तो काफिर मरी, और सहाबा को पाँच-पाँच हदीसें याद थीं, हमको सब हदीसें याद हैं, सहाबा से हमारा इल्म बड़ा है, सहाबा को इल्म कम था। (कशफुल हिजाब:21, तालीफ मौलाना अब्दुर्रहमान[1] पानीपती रह०)

(1) मालूम होना चाहिए कि मौलाना अब्दुर्रहमान पानीपती रहमतुल्लाहि अलैह शेख अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि अलैह के तरबियात याफ्ता होने के साथ-साथ असहाबे वरा व तक़्वा और अहले दयानत व अमानत में से हैं, इस लिए उनकी शहादत मोतबर और अहमियत की

कुछ सहाबा-ए-किराम

रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन

फासिक़ थे

(نعوذ باللّٰہ)

और नवाब वहीदुज़्ज़माँ फरमाते हैं:

"इस से मालूम हुआ कि कुछ सहाबा फासिक़ हैं, जैसा कि वलीद और उसी के मिस्ल कहा जाएगा, मुआविया बिन अबू सुफयान, अम्र इब्ने आस, मुगीरह बिन शोबा और समुरह बिन जुन्दुब रज़ियल्लाहु अन्हु के हक़ में" (कि वह फासिक़ थे)

(नुजुलुल अबरार:**94/3**)

हामिल है, झूठ उनसे बईद अज़ क़यास है।

और इस बनारसी शेख की अज़मत के लिए बस यही काफी है कि वह अपनी जमाअत में मुहद्दिसीन में शुमार होते हैं, और उनकी मद्ह व तौसीफ के क़सीदे गाए जाते हैं।

(तफसील देखिए: तराजिम अहले हदीस हिन्द में)

लेकिन साहिबे नुज़्हतुल ख्वातिर के मुताबिक़ ये शख्स अइम्मा मुजतहिदीन के हक़ में बड़ा जरी, फोहश गो, और बड़ा ज़बान दराज़ वाकेअ हुआ था। इस लिए हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा की शान में इस क़िस्म की बदगोई इस बनारसी से मुस्तबअद नहीं समझना चाहिए, साहिबे नुज़हतुल ख्वातिर लिखते हैं: "ये शख्स सफरे हज में मक्का मुकर्रमा पहुँचा, वहाँ अइम्मा मजतहिदीन की शान में नामुनासिब अलफाज़ कहे, जिसकी वजह से वहाँ के हुक्काम ने गिरिफ्तार कर लिया, लेकिन बाद में रिहा कर दिया, फिर जब हज के बाद मक्का मुकर्रमा से मदीना मुनव्वरह पहुँचा तो बाज़ इख्तिलाफी मसाईल पर गुफ्तुगू की, और अइम्मा मुजतहिदीन की शान में फिर नामौजूँ कलिमात कहे, और उनके मत्तबिईन अहनाफ व शावाफे वगैरह को गुमराह क़रार दिया, उस वक़्त मदीना तय्यबा में मुहम्मद सईद सल्फी मदरासी मौजूद थे, उन्होंने ये मुआमला क़ाज़ी तक पहुँचाया, अब्दुल हक़ को मालूम हुआ तो वहाँ से चुपके से भाग निकला, और जद्दह पहुँच कर क़याम किया।" (नुज़हतुल ख्वातिर:**340/7**)

हज़रते मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु की शान में गुस्ताखी

और हज़रत अमीर मुआविया र० के मुतअल्लिक़ लिखते हैं:

"भला उन पाक नुफूस पर मुआविया र० का क़यास क्योंकर हो सकता है, जो न मुहाजिरीन में से हैं, न अन्सार में से, न उन्होंने हुजूर आकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कोई खिदमत की, बल्कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से लड़ते रहे, और फत्हे मक्का के दिन डर के मारे मुसलमान हो गए, फिर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात के बाद हज़रते उस्मान ग़नी रहि़यल्लाहु अन्हु को ये राय दी कि अली, तल्हा, और जुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुम को क़त्ल कर डालें।" (लुगातुल हदीस)

आगे लिखते हैं:

''एक सच्चे मुसलमान का जिस में एक ज़र्रह बराबत भी हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहब्बत हो दिल कैसे गवारह करेगा कि सहाबा से सुकूत करते हैं, इस लिए मुआविया से भी सुकूत करना हमारा मज़हब है, और यही असलम और क़रीने अहतियात है, मगर उनकी निस्बत कलिमाते ताज़ीम मिस्ल "हज़रत" व "रज़ियल्लाहु अन्हु" कहना सख्त दिलेरी व बेबाकी है, अल्लाह महफूज़ रक्खे। (लुगातुल हदीस)

खुत्बा-ए-जुमा में खुल्फा-ए-राशिदीन का नाम लेना बिदअत है

ग़ैर मुक़ल्लिदीन का मज़हब ये है कि खुत्बा-ए-जुमा में

इल्तिज़ामन खुल्फा-ए-किराम का नाम लेना बिदअत है, नवाब वहीदुज़्ज़माँ लिखते हैं:

"وَلَا يَلْتَزِمُوْنَ ذِكْرَ الْخُلَفَاءِ وَلَا ذِكْرَ سُلْطَانِ الْوَقْتِ لِكَوْنِهٖ بِدْعَةً غَيْرَ مَاثُوْرَةٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَاَصْحَابِهٖ"

तर्जुमाः- यानी अहले हदीस खुल्फा और सुल्ताने वक़्त का खुत्बा-ए-जुमा में नाम लेने का इल्तिज़ाम नहीं करते, इस लिए कि ऐसा करना बिदअत है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन से ये मन्कूल नहीं है।

सहाबी का क़ौल हुज्जत नहीं

ग़ैर मुक़ल्लिदीन के मज़हब व अक़ीदत में सहाबी का क़ौल दीन व शरीअत में हुज्जत नहीं है। फतावा नज़ीरिया में है:

دوم آنکہ اگر تسلیم کردہ شود کہ سند ایں فتویٰ صحیح است تاہم از و احتجاج صحیح نیست زیرا کہ قول صحابی حجت نیست" (فتاویٰ نذیریہ:۳۴۰)

तर्जुमाः- यानी दूसरी बात ये है कि अगर हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास और हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर का फतवा सहीह भी है तब भी उस से दलील पकड़ना दुरूस्त नहीं है, इस लिए कि सहाबी का क़ौल दलील नहीं है।

सहाबी का फेअल भी हुज्जत नहीं

ग़ैर मुक़ल्लिदीन के मज़हब में सहाबी का फेअल भी हुज्जत नहीं है, अल-ताजुल मुकलिल में नवाब सिद्दीक़ हसन खाँ फरमाते हैं।

सहाबी का राय भी हुज्जत नहीं

ग़ैर मुक़ल्लिदों का ये भी कहना है कि सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन राय दीन में हुज्जत नहीं है, उर्फ़ुल जादी में है कि:

''آرے اگر سخن ہست در قبول رائے ایشاں نہ روایت''

यानी अगर गुफ्तुगू है तो ये है कि सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन की राय कुबूल नहीं न कि उन की रिवायत।

सहाबा-ए-किराम
रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन
का फहम भी हुज्जत नहीं है

ग़ैर मुक़ल्लिदीन के मज़हब में जिस तरह सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन का क़ौल व फेअल और उनकी राय हुज्जत नहीं है, इसी तरह सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन का फहम भी हुज्जत नहीं है, फतावा नज़ीरिया में है:

राबिअन ये कि ''وَلَوْ فَرَضْنَا'' तो ये आयशा अपने फहम से फरमाती हैं, (यानी हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा का ये कहना कि अगर आँहुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस ज़माने में होते तो आप औरतों को मस्जिद में जाने से मना कर देते) और फहमे सहाबा हुज्जत नहीं है। (फतावा नज़ीरिया:622/1)

''وفعل الحابی لا یصلح للحجة'' (ص:۲۹۲)

तर्जुमा:- यानी सहाबी का फेअल इस लायक़ नहीं होता कि वह दली शरई बने।

हज़रत आयशा की शान में गुस्ताखी

इस मसअले के ज़िम्न में हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा ने औरतों को मस्जिद में जाने वाली बात अपनी फहम से फरमाई है, जो हुज्जते शरई नहीं, फतावा नज़ीरिया के मुफ्ती ने हज़रते आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा की शान में ज़बर्दस्त गुस्ताखी की है। उन्हें आँहुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुक्म का मुखालिफ बताया है, और उन को कुरआन की इस आयत का मिस्दाक़ क़रार दिया है।

"وَمَنْ يُّشَاقِقِ الرَّسُوْلَ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُ الْهُدٰى وَيَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيْلِ الْمُؤْمِنِيْنَ نُوَلِّهٖ مَا تَوَلّٰى وَنُصْلِهٖ جَهَنَّمَ وَسَائَتْ مَصِيْرًا"

तर्जुमाः- यानी जो रसूल से इख्तिलाफ करेगा जब्कि खुल चुकी है उस पर सीधी राह और मोमिनीन के अलावा रास्ता चलेगा तो हम उसको वही हवाला कर देंगे जो इसने इख्तियार किया है और उसको जहन्नम में पहुँचा देंगे।

फतावा नज़ीरिया के मुफ्ती की बात मुलाहिज़ा होः

फिर अब जो शख्स बाद सुबूत क़ौले रसूल व फेअल सहाबा की मुखालिफत करे तो वह उस आयत का मिस्दाक़ हैः

"وَمَنْ يُّشَاقِقِ الرَّسُوْلَ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُ الْهُدٰى وَيَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيْلِ الْمُؤْمِنِيْنَ نُوَلِّهٖ مَا تَوَلّٰى وَنُصْلِهٖ جَهَنَّمَ" الاٰية.

जो हुक्म सराहतन शरअ शरीफ में साबित हो जाए इस में हरगिज़ राय व क़यास को दखल न देना चाहिए कि शैतान इस क़यास से कि "انا خير منه" हुक्मे सरीहे इलाही से इन्कार करके मलऊन बन गया है, और ये बिल्कुल शरीअत को बद डालना है। (फतावा नज़ीरियाः622)

फतावा नज़ीरिया के मुफ्ती की गुमराही मुलाहिज़ा फरमाएं उसने दर परदा हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा पर कैसा ज़बर्दस्त हम्ला किया है, यहाँ मुफ्ती नज़ीर अहमद साहब रह० के इस फत्वा का हासिल ये निकलता है।

(1)·····हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने आँहुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुक्म की मुखालिफत की।

(2)·····हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा इस मस्अले में आँहुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुक्म की मुखालिफत करके आयते मज़कूरह बाला का मिस्दाक़ हुईं।

(2)·····हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने इस मस्अले में अपने क़यास और राय को दखल दिया।

(2)·····हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने दीन के हुक्म में राय और क़यास को दखल देकर वही काम किया जो शैतान ने "انا خير منه" कह कर किया था।

(2)·····हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने मआज़ल्लाह ये कह कर कि मौजूदह वक़्त में औरतों को मस्जिद और ईदगाह जाना मुनासिब नहीं है, शरीअत को बदल डालने की जुरअत की।

नाज़िरीने किराम! मुलाहिज़ा फरमाएं कि क्या हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की जनाब में ये गुस्ताखियाँ बड़े से बड़ा गुनहगार भी अगर उसको ईमान का एक ज़र्रह भी नसीब है कर सकता है? हरगिज़ नहीं।

सहाबा-ए-किराम

रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन

खिलाफे नुसूस अमल पर अमल पैरा थे

ग़ैर मुक़ल्लिदीन के उलमा अकाबिर का ये भी मज़हब है

कि सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन खिलाफे नुसूस काम भी किया करते थे, हालाँकि वह जानते होते थे कि ये काम किताब व सुन्नत के खिलाफ और हराम व मासियत है, मौलाना रईस अहमद नदवी फरमाते हैं:

"एक वक़्त की तलाक़े सलासा को मुतअद्दद सहाबा अगर्चे वाकेअ मानते हैं, मगर ये सारे सहाबा बयक वक़्त तीन तलाक़ दे डालने वाले फेअल को हराम व मासियत और खिलाफ नुसूस किताब व सुन्नत क़रार देने पर मुत्तफिक़ हैं। (तन्वीरूल आफाक़:**15**)

इस किताब "तन्वीरूल आफाक़" में जामिया सल्फीया के नदवी सल्फी मुहक्किक़ साहब फरमाते हैं:

"हालाँकि पूरी उम्मत का इस उसूल पर इज्मा है कि सहाबा के वह फतावा हुज्जत नहीं बनाए जा सकते जो नुसूस किताब व सुन्नत के खिलाफ हों।" (तन्वीरूल आफाक़:**515**)

बहुत से सहाबा व ताबईन बहुत सी आयात की खबर रखने और तिलावत करने के बावजूद भी मुख्तलिफ वुजूह से उन के खिलाफ अमल पैरा थे। (तन्वीरूल आफाक़:**47**)

हज़रत अली रज़िल्लाहु अन्हु

बेफिक्र शहज़ादह की तरह

हज़रत अली रज़िल्लाहु अन्हु की ज़िन्दगी का नक़्शा खींचते हुए हकीफ फैज़ आलम मौसूफ फरमाते हैं:

"ग़नीमत से बेहिसाब माल आप को घर में बैठे मिल जाता था, हरम आबाद था, औलाद मौजूद थी, आठ दस गाँव बतौर जागीर खुलफा-ए-सलासा की तरफ से इनायत हुए थे, गोया आप एक बेफिक्र शहज़ादह की तरह ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे, कभी

कभार दीनी उमूर में अपनी खुशी से हिस्सा लेते थे, मगर उमूरे जहाँबानी, सियासते मुदुनी, दुनयवी नशेब व फराज़ में मग्ज़मारी की ज़रूरत ही कभी महसूस न की थी। (सिद्दीक़ा-ए-कायनातः71)

हज़रत अली रज़िल्लाहु अन्हु की नाम निहाद खिलाफत और खुदसाख्ता हुक्मरानी

हकीम फैज़ आलम ग़ैर मुक़ल्लिद ने अपनी किताब खिलाफते राशिदह में हज़रत अली रज़िल्लाहु अन्हु या खानदाने नबूव्वत के दूसरे हज़रात या उनके अलावा दीगर सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन के बारे में जो कुछ लिखा है, वह खालिस उस की सबाइयत और शीई ज़हनीयत का परतो है, ये शख्स हज़रत अली रज़िल्लाहु अन्हु के बारे में जो कुछ कह रहा है, नाज़िरीन सीने पर हाथ रख कर सुनते रहें, फरमाया जाता हैः

"जिहालत, ज़िद, हट धरमी, नस्ली असबीयत का कोई इलाज नहीं, अपने खुदसाख्ता नज़रयात से चिमटे रहने या मज़ऊमा तखय्युलात को सीने से लगाए रखने का दफ्ईया नामुमकिन है, मगर सैय्यदना अली रज़िल्लाहु अन्हु की नाम निहाद खिलाफत के मुतअल्लिक़ कुरआनी आयात, हुजूर सादिक़ व मस्दूक़ के इरशादात की रोशनी में हक़ाईक़ गुज़िश्ता सफ्हात में बयान किए जा चुके है, उनकी मौजूदगी में सैय्यदना अली रज़िल्लाहु अन्हु की खुदसाख्ता हुक्मराना उबूरी दौर को खिलाफते राशिदह में शुमार करना सरीहन दीनी बद दयानती है, मगर अग़यार ने जिस चाबुक दस्ती से आँजनाब रज़िल्लाहु अन्हु की नाम निहाद खिलाफत को खिलाफते हक़्क़ा साबित करने के लिए दुनयाए सबाइयत से दर आमद करदा मवाद से जो कुछ तारीख के

सफ्हात में क़लम बन्द किया है, उसका हक़ीक़त से कोई तअल्लुक़ या वास्ता नहीं।" (पे०:55,56)

सैय्यदना अली रज़िल्लाहु अन्हु ने खिलाफत के ज़रीए अपनी शख्सीयत को क़दआवर बनाना चाहा था

उसकी मुज़ीद गुहर अफ्शानी मुलाहिज़ा फरमाइये, लिखता है:

"इसी तरह सैय्यदना अली रज़िल्लाहु अन्हु को भी मुसलमान मुन्तखब करके खलीफा बनाते तो उनकी ज़ात की वजह से खिलाफत को ज़रूर वक़ार मिलता, मगर सैय्यदना अली रज़िल्लाहु अन्हु ने खिलाफत के ज़रीए अपनी शख्सियत और ज़ात को क़द आवर बनाना चाहा, जिसका नतीजा ये निकला कि मुसलमानों का सैलाब आता, फुतूहात ही ठप होकर रह गईं, बल्कि कम व बेश एक लाख फरज़न्दाने तौहीद खाक व खून में तड़प कर ठण्डे हो गए।" (पे०:51)

सैय्यदना अली रज़िल्लाहु अन्हु की खिलाफत अज़ाबे खुदावन्दी थी

इस शख्स ग़ैर मुक़ल्लिद हकीम फैज़ आलम के सीने में सैय्यदना अली रज़िल्लाहु अन्हु के खिलाफ कैसा बुग्ज़ भरा हुआ है, ज़रा सीने पर हाथ रख कर उनके बारे में इस ग़ैर मुक़ल्लिद का ये तब्सिरह मुलाहिज़ा फरमाएं, और इसकी गन्दी ज़हनीयत का अन्दाज़ह लगाएं, लिखता है:

"आपको उम्मत ने खलीफा मुन्तखब नहीं किया था, आप दुनियाए सबाइयत के मुन्तखब खलीफा थे, इसी लिए आपकी खुद

साख्ता खिलाफत का चार पाँच साला दौर उम्मत के लिए अज़ाबे खुदावन्दी था, जिस में एक लाख से ज़्यादा फरज़न्दाने तौहीद खून में तड़प तड़प कर खत्म हो गए, आपकी शहादत आलमें इस्लाम के लिए एक आयते रहमत साबित हुई, और आलमे इस्लाम ने चार पाँच साल की अनारकी के बाद सुख का सांस लिया।"

(पे०:228)

हज़रात हसनैन को जुम्रा-ए-सहाबा में रखना सबाइयत की तर्जुमानी

हकीम मौसूफ की ग़ैर मुक़ल्लिदीयत ऐसी दो अतिशा है कि वह इसको भी गवारह नहीं करती कि हज़रत हसन व हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा को जमाअते सहाबा में शुमार किया जाए, चुनान्चे वह अपनी किताब सैय्यदना हसन बिन अली के पे०:23 पर फरमाते हैं:

"हज़रात हसनैन को रज़ियल्लाहु अन्हुमा को जुम्रा-ए-सहाबा में शुमार करना सरीहन सबाइयत की तर्जुमानी है, या अन्धाधुन्ध तक़लीद की खराबी।"

इन ग़ैर मुक़ल्लिदीन साहिबान का नाज़िरीन सीने पर हाथ रख कर ये रीमार्क भी मुलाहिज़ा फरमाएं, फरमाया जाता है:

"हक़ीक़त ये है कि आप (रज़ियल्लाहु अन्हु) बरसाम के मरीज़ थे, और इस मर्ज़ के मरीज़ अव्वल तो मर जाते हैं, वरना पागल हो जाते हैं, अगर बच भी निकलें तो उन की ज़बान लुकनत आमेज़ हो जाती है, और ज़हन कमा हक्क़हू सोचने की कूव्वतों से महरूम हो जाता है।

(खिलाफते राशिदा:138)

हज़रते उमर र० मोटे-मोटे मसाईल में गलती करते थे और उनका शरई हुक्म उन्हें मालूम नहीं था

चुनान्चे तरीक़े महम्मदी में मौलाना मुहम्मद जूनागढ़ी लिखते हैं:

"पस आओ सुनो! बहुत से साफ-साफ मोटे-मोटे मसाईल ऐसे हैं कि हज़रत फारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनमें गलती की, और हमारा और आप का इत्तिफाक़ है कि फिल वाक़ेअ उन मसाईल के दलाईल से हज़रत फारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु बे खबर थे।" (पे०:41)

फिर दस मस्अलों में ह़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की बेखबरी साबित करने के बाद मुहम्मद जूनागढ़ी साहब का इरशाद होता है: "ये दस मस्अले हुए अभी तलाश से ऐसे और मसाईल भी मिल सकते हैं, इन मोटे-मोटे मसाईल में जो रोज़ मर्रह के हैं दलाईले शरईया आप से मखफी रहे।" (पे०:42)

अल्लाहु अकबर! ग़ैर मुक़ल्लिदीन में ऐसे भी दम खम रखने वाले उलमा मौजूद हैं जो ह़रत उमर फारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की भी दीनी व शरई मसाईल में गलतियाँ पकड़ते हैं।

हज़रत उमर और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हुमा को कुरआन की आयत व अहादीस समझ में नहीं आईं

यही सल्फीया बनारस के नदवी व सल्फी ग़ैर मुक़ल्लिद

साहब बड़े तन्तने से और निहायत तहक़ीर आमेज़ अन्दाज़ में हज़रत उमर और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हुमा के बारे में गुहर अफ्शानी करते हैं, फरमाते हैं:

"कुरआने मजीद की दो आयतों और पचासों हदीसों में तयम्मुम से नमाज़ की इजाज़त है, हज़रत उमर और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हुमा के सामने ये आयात व अहादीस पेश हुई थीं, फिर भी उनकी समझ में बात नहीं आ सकी।" (पे०:418)

हज़रत उमर और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हुमा का नुसूसे शरईया के खिलाफ मौक़िफ

ग़ैर मुक़ल्लिदीन उलमा ये भी कहते हैं कि हज़रत उमर और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हुमा दीनी व शरई मुआमलात में नुसूसे शरईया के खिलाफ मौक़िफ इख्तियार करते थे, मौलाना रईस अहमद नदवी साहब फरमाते हैं:

"ज़ाहिर है कि किसी नस के खिलाफ उन दोनों जलीलुल क़द्र सहाबा के मौक़िफ को लाइहे अमल और हुज्जते शरईया के तौर पर दलीले राह नहीं बनाया जा सकता, और ये भी ज़ाहिर है कि चूँकि बतरीक़े मोतबर साबित है कि उन दोनों जलीलुल क़द्र सहाबा ने नुसूस शरईया के खिलाफ मौक़िफ इख्तियार कर लिया था। इस लिए सिर्फ इन दोनों सहाबा को नुसूस की खिलाफ वर्ज़ी का मुरतकिब क़रार दिया जा सकता है।" (पे०:87, 88)

जामिया सल्फ़ीया का ये सल्फ़ी नदवी मुहक़्क़िक़ हज़रते उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की शान में क्या बकता है, नाज़िरीन मुलाहिज़ा फरामएं, लिखता हैः

"मौसूफ उमर की ख्वाहिश व तमन्ना भी यही थी कि कुरआनी हुक्म के मुताबिक़ एक मजलिस की तीन तलाकों को एक ही क़रार दें, मगर लोगों की गलत रवी रोकने की मस्लिहत के पेशे नज़र मौसूफ ने बऐतराफे ख्वेश इस कुरआनी हुक्म में तरमीम करदी, इस कुरआनी हुक्म में मौसूफ ने ये तरमीम की कि तीन क़रार पाने लगीं।" (पे०:498, तनवीर)

ग़ैर मुक़ल्लिदीन का ख्याल है कि

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद

रज़ियल्लाहु अन्हु

नमाज़ और दीन की बहुत सी बातें भूल गए

ग़ैर मुक़ल्लिदीन के असाग़िर ही से नहीं बल्कि अकाबिर से भी बहुत सी बातें इस क़िस्म की सादिर हुई हैं कि उनको आम अक़्ले इन्सानी भी बावर नहीं कर सकती, मगर ये ग़ैर मुक़ल्लिदीन अपने नज़रिया और अपने फिक्र को सच साबित करने के लिए उनका अपनी ज़बान व क़लम से बर्मला इज़हार करते हैं, ख्वाह उस से जमाअते सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम की अज़ीम से अज़ीम तर शख्सीयत की अज़मत मजरूह होती हो, मगर इन ग़ैर मुक़ल्लिदों को इसकी ज़रा भी परवाह नहीं होती है, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु को जमाअते सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम में बड़ा अज़ीम मर्तबा हासिल था, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सोहबत व मुलज़िमत में

बेशतर वक़्त रहा करते थे, कोई अजनबी आता तो उनको खानदाने नबूव्वत का फर्द समझता, उनके बारे में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि:

"تَمَسَّكُوْا بِعَهْدِ ابْنِ اُمِّ عَبْدٍ"

तर्जुमाः- यानी इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के तौर तौर तरीक़ और उनके अहकाम को मज़बूती से थाम लो।

नीज़ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सहाबा -ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम से फरमाते थे कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु जिस तरह तुम्हें कुरआन पढ़ाएं उसके मुताबिक़ पढ़ा करो। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के इल्म व फिक़्ह और उनकी दीनी पुख्तगी और उमूरे जहाँबानी में उनकी सलाहियत पर ऐसा ऐतमाद था कि आप फरमाया करते थे कि:

"لَوْ كُنْتُ مُؤَمِّرًا اَحَدًا مِّنْهُمْ مِنْ غَيْرِ مَشْوِرَةٍ لَاَمَّرْتُ عَلَيْهِمْ اِبْنَ اُمِّ عَبْدٍ"

(ترمذی)

तर्जुमाः- यानी अगर मैं किसी को जमाअते सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम पर बिला मश्विरह अमीर और हाकिम बनाता तो इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु को बनाता।

गर्ज़ कि सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन की जमाअत में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु को बड़ा इम्तियाज़ी मक़ाम हासिल था। मगर ग़ैर मुक़ल्लिदों का उनके बारे में क्या ख्याल है? और उनके नज़दीक उनकी क्या इज़्ज़त व फज़ीलत है? तो मौलाना अब्दुर्रहमान मुबारकपुरी रह० जैसा ग़ैर मुक़ल्लिदीन का मुहद्दिस ये फरमाता है कि उनको तो नमाज़ भी

पढ़नी नहीं आती थी, नमाज़ की वह बहुत सी चीज़ों को भूल गए थे, इसी वजह से वह रफअ यदैन नहीं किया करते थे, और इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु तो नमाज़ के मसाईल के अलावह भी दीन की बहुत सी बातों को भूल गए थे। मौलाना अब्दुर्रहमान साहब ने तिरमिज़ी की शरह में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु पर जो कलाम किया है ये उस का खुलासा है, नाज़िरीन की बसारत के लिए मैं उनकी इस मौक़ा की पूरी इबारत नक़ल करता हूँ, फरमाते हैं:

"وَلَوْ تَنَزَّلْنَا وَسَلَّمْنَا اَنَّ حَدِيْثَ ابْنِ مَسْعُوْدٍ هٰذَا صَحِيْحٌ اَوْ حَسَنٌ فَالظَّاهِرُ اَنَّ ابْنَ مَسْعُوْدٍؓ قَدْ نَسِيَهُ كَمَا قَدْ نَسِيَ اُمُوْرًا كَثِيْرَةً"

(تحفة الاحوذی: ۱/۲۲۱)

तर्जुमाः- यानी अगर हम नुजूल करें और तसलीम करें कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ियल्लाहु अन्हु) की रफअ यदैन न करने वाली ये हदीस सहीह है तो ज़ाहिर है कि इब्ने मसऊद (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने रफअ यदैन करना भुला दिया था, जैसा कि उन्हों ने दीन की बहुत सी बातों को भुला दिया था।

अब जब ग़ैर मुक़ल्लिदीन से कहा जाता है कि सोचो तुम हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में क्या कह रहे हो, क्या ये बात एक आम मुसलमान से भी मुमकिन है कि नमाज़ की इतनी अहम सुन्नत को अपनी पूरी ज़िन्दगी भूला रहे, और उसे लोगों का रफअ यदैन करना देख देख कर भी याद न आए, तो ग़ैर मुकल्लिदों के बड़े छोटे सब एक ज़बान होकर कहते हैं कि ये बात हम तहक़ीक़न नहीं कह रहे हैं, तक़लीदन कह रहे हैं और फलाँ ने भी तो यही कहा है, यानी यहाँ ग़ैर मुक़ल्लिदीन खालिस दूसरों के मुक़ल्लिद बन जाते हैं, और इस वक़्त न तक़लीद हराम होती है, और न शिर्क।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद

रज़ियल्लाहु अन्हु

के खिलाफ

जामिया सल्फीया के सल्फी नदवी मुहक्क़िक़ ने अपनी किताब "तनवीरूल आफाक़" में हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जलीलुल क़द्र सहाबी और फ़ुक़्हा-ए-सहाबा में अज़ीमुल मर्तबत फक़ीह हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के खिलाफ निहायत सूक़ियाना व आमियाना ज़बान में गुफ्तगु की है, उसका एक नमूना मुलाहिज़ा हो।

फरमाते हैं:

"चूंकि इब्ने मसऊद (रज़ियल्लाहु अन्हु) का बयान मज़कूर अल्लाह व रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बयान करदा उसूल शरीअत के खिलाफ है, इस लिए ज़ाहिर है कि बयान इब्ने मसऊद (रज़ियल्लाहु अन्हु) शरअन साक़ितुल ऐतबार है।"

मुज़ीद कहता है:

"दरीं सूरत इब्ने मसऊद (रज़ियल्लाहु अन्हु) का अपनी नज़र में इस तरह तलबीस वाला मशकूक अमल अगर क़बिले निफाज़ है, लेकिन शरीअत की नज़र में उसका हुक्म भी वाज़ेह व ज़ाहिर है, यानी कि ऐसी तीन तलाकें एक क़रार पाएंगी, तो आखिर हुक्में शरीअत छोड़कर इब्ने मसऊद (रज़ियल्लाहु अन्हु) या उनके अलावा दूसरों के मौक़िफ को किस दलील शरई की बुनियाद पर उसूले फतवा बना लेना दुरूस्त है। (पे०:165)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की मन्क़सत जिन्से रवाफिज़ से है

ग़ैर मुक़ल्लिदीन के उलमा के बयानात आप ने पढ़े, उनसे आप ने अन्दाज़ा लगाया कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के खिलाफ उनके दिलों में कैसा बुग्ज़ भरा हुआ है, मगर हज़रत शेखुल इस्लाम का हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में क्या ख्याल है? इब्ने तयमिया हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के फज़ाईल म मनाक़िब बयान करने के बाद फरमाते हैं:

"وَسُئِلَ عَنْ عَلِيٍّ عَنْ عُلَمَاءِ النَّاسِ فَقَالَ وَاحِدٌ بِالْعِرَاقِ اِبْنُ مَسْعُوْدٍ وَاِبْنُ مَسْعُوْدٍ فِى الْعِلْمِ مِنْ طَبْقَةِ عُمَرَ وَعَلِى وَاُبَىّ وَمُعَاذٍ وَهُوَ مِنَ الطَّبْقَةِ الْاُوْلٰى مِنْ عُلَمَاءِ الصَّحَابَةِ فَمَنْ قَدَحَ فِيْهِ اَوْ قَالَ هُوَ ضَعِيْفُ الرِّوَايَةِ فَهُوَ مِنْ جِنْسِ الرَّافِضَةِ الَّذِيْنَ يَقْدَحُوْنَ فِىْ اَبِىْ بَكْرٍ وَعُمَرَ وَعُثْمَانَ وَذٰلِكَ يَدُلُّ عَلٰى اِفْرَاطِ جَهْلِهٖ بِالصَّحَابَةِ وَزِنْدَقَتِهٖ وَنِفَاقِهٖ" (فتاوى: ۴/۵۳۱)

तर्जुमाः- यानी हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हुसे पूछा गया कि सहाबा में से उलमा कौन हैं? तो आप ने फरमाया आलिम तो एक ही हैं, और वह इराक़ में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु हैं, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु इल्म में हज़रत उमर, हज़रत हज़रते अली, हज़रत उबय, हज़रत मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हुम के तब्क़ा के सहाबी थे। उलमा-ए-सहाबा में उनका शुमार अब्क़ा-ए-ऊला में होता है, अब जो

उनकी बुराई करे या ये कहे कि वह रिवायत में कमज़ोर थे, तो अज़ क़िस्मे राफिज़ी है, जो अबू बकर, उमर और उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हुम की शान में बेहूदगी करते हैं, ये दलील है कि वह शदीद क़िस्म का जाहिल है, ज़िन्दीक़ और मुनाफिक़ है।

हज़रत अबू ज़र गिफारी

रज़ियल्लाहु अन्हु

कम्यूनिस्ट नज़रिया वाले थे

हज़रत अबू ज़र गिफारी रज़ियल्लाहु अन्हु का सहाबा में एक खास मुक़ाम था, आँहुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बहुत दुलारे थे, आँहुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ उन के इश्क व मुहब्बत और शिद्दते तअल्लुक़ का आलम ये था कि वह आँहुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की एक एक अदा पर मर मिटने वाले थे, मिज़ाज ज़ाहिदाना था, दुनिया की मुहब्बत का गुज़रान उनके दिल में नहीं था, उनके बारे में हकीम फैज़ आलम सिद्दीक़ी ने जिस अन्दाज़ से रीमार्क किया उसका किसी ऐसे शख्स के क़लम से निकलना नामुमकिन है जो मुक़ामे सहाबियत से कुछ भी वाक़िफ है, और जिस का दिल ईमान व यक़ीन की दौलत से मामूर हो, हज़रत अबू ज़र गिफारी रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में हकीम साहब अल्लामा इक़बाल रह० का इस शेअरः

मिटाया क़ैसर-ओ-किसरा के इस्तिबदाद को किसने
वह क्या था ज़ोरे हैदर, फक़्रे बूज़र सिद्क़े सलमानी

की आड़ में अपने बुग्ज़ व कीना और अपनी ग़ैर मुक़ल्लिदीयत का इस तरह इज़हार करते हैं।

"इस शेअर में दूसरे नम्बर पर हज़रत अबू ज़र गिफारी (रज़ियल्लाहु अन्हु) का नाम है जो इब्ने सबा के कम्यूनिस्ट

नज़रिया से मुतअस्सिर होकर हर खाते पीते मुसलमान के पीछे लठ लेकर भाग उठते थे।" (खिलाफते राशिदहः143)

मसलमानो! ज़रा ग़ौर करो कि ग़ैर मुक़ल्लिदीयत का रास्ता कैसा शैतानी रास्ता है, इस राह पर चलने के बाद आदमी सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन हत्ता कि हज़रत उमर फारूक़ और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हुमा जैसे फ़ुक़्हा-ए-सहाबा के बारे में ये अन्दाज़े गुफ्तगू क्या किसी अहले सुन्नत वल जमाअत का हो सकता है? और क्या ऐसे लोग अहले हक़ क़रार दिये जा सकते हैं?

आह! ग़ैर मुक़ल्लिदीयत की राह, कैसी पुर खतर राह है, जिस राह पर चल कर ईमान का बचाना दुशवार हो जाता है।

हक़ीक़त ये है कि ग़ैर मुक़ल्लिदीन के दूसरे बातिल अक़ाईद न भी होते तब भी सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन के बारे में सिर्फ यही एक अक़ीदह दायरा-ए-अहले सुन्नत से उन्हें निकालने और उन की गुमराही के लिए काफी था।

फिरक़ा-ए-ग़ैर मुक़ल्लिदीयत
की इब्तिदा और
अंग्रेज़ से तअल्लुक़ात

अर्ज़े मरत्तिब

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّی عَلٰی رَسُوْلِهِ الْکَرِیْم. اَمَّا بَعْدُ!

ग़ैर मुक़ल्लिदीन (नाम निहाद अहले हदीस) अपने आप को मुहद्दिसीने किराम, और सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन से जोड़ते है, जो सरासर मुग़ालता है, न मुहद्दिसीने किराम में कोई ग़ैर मुक़ल्लिद था, न सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन में। (कि न वह कुव्वते इज्तिहाद रखता हो, न तक़लीद करता हो, बल्कि तक़लीद को शिर्क जानता हो)

फिरक़ा-ए-ग़ैर मुक़ल्लिदीन अंग्रेज़ का खुद काश्ता पौदा है, जिस को मुसलमानों के दरमियान तफरीक़ व इन्तिशार पैदा करने के लिए परवान चढ़ाया है।

और इस फिरक़े ने अपना फरीज़ा बखूबी अन्जाम दिया, हमेशा अपने वली नेमत अंग्रेज़ के साथ वफादारी का सुबूत दिया, अंग्रेज़ के खिलाफ जिहाद की हुरमत के फतवे लिखे, अंग्रेज़ की तरफ से इस फिरक़ा के उलमा को इनामात से नवाज़ा गया, इस मुख्तसर रिसाला में ये सब चीज़ें खुद इस फिरक़ा के उलमा की तहरीरों और मज़बूत हवालों के साथ साबित की गई हैं, ताकि इन्साफ पसन्द लोगों को इस फिरक़ा के ज़ैग़ व ज़लाल को समझने में सहूलत हो।

अल्लाह पाक दीन की सहीह फहम नसीब फरमाए और तमाम बातिल फिरक़ों की तलबीसात से हिफाज़त फरमाए। आमीन!

اَللّٰهُمَّ اَرِنَا الْحَقَّ حَقًّا وَارْزُقْنَا اتِّبَاعَهٗ وَاَرِنَا الْبَاطِلَ بَاطِلاً وَارْزُقْنَا اجْتِنَابَهٗ

وَصَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی خَیْرِ خَلْقِهٖ سَیِّدِنَا وَمَوْلاَنَا وَحَبِیْبِنَا

مَحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِهٖ صَحْبِهٖ وَبَارِکْ وَسَلِّمْ.

मुहम्मद फारूक़ गुफिरा लहू 23/6/1422 हि०

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّی عَلٰی رَسُوْلِهِ الْکَرِیْمِ. اَمَّا بَعْدُ!

मदीना तय्यबा में ग़ैर मुक़ल्लिदीन का नाम व निशान नहीं था

मौलाना सनाउल्लाह रह० का ऐतराफः

शेखुल इस्लाम ने 20 अक्तूबर सन् 1933 ई० को एक ऐलान अपने फिरक़ा वाराना अखबार अहले हदीस अमृतसर में शाय किया, फरमाते हैं ब्रादराने इस्लाम जमाअते ग़ैर मुक़ल्लिदीन के अक्सर अफराद जानते हैं कि मौलाना अहमद साहब देहलवी रह० सात-आठ साल से मदीना तय्यबा में मुक़ीम हैं। जब आप वहाँ पहुँचे तो इस मुक़द्दस शहर के साकिनीन में से किसी को अहले हदीस न पाया, न इस जमाअत का कोई मदरसा न रिबात न दीगर किसी खिदमत के आसार इस जमाअत के यहाँ मौजूद हैं, न इस जमाअत का वहाँ तज़किरह है, न नाम व निशान, ऐसा मालूम होता है कि सदियों से इस जमाअत के आमाल नामे मदीनतुर्रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत से खाली हैं, ये हालत देख कर दिल पर सख्त चोट लगी, और बेहद अफसोस हुआ कि ये मरकज़े इस्लाम, ये दरबारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मसकन जहाँ दुनिया भर के मुसलमान जमा होते हैं, वहाँ कोई अहले हदीस का नाम लेवा और मज़हबे अहले हदीस का मबल्लिग़ न हो? कितनी शर्म की बात है कि दावा तो सुन्नत का, और साहिबे सुन्नते मुतह्हरह के घर मदीना तय्यबा में इस दावेदार क़ौम का कोई हिस्सा भी न हो अफसोस।

"اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَیْهِ رَاجِعُوْنَ"

इसी तरह मक्का मुकर्रमा में उनका पहला मदरसा दारूल हदीस मुहम्मदिया 12 रबीउल अव्वल 1352 हि० को शुरू हुआ, उसका बानी अब्दुल हक़ नौनारी (अहमदपुर शरक़िया) था। इस से ये बात वाज़ेह हुई कि जैसे मिर्ज़ाइयत, प्रवेज़ियत अरब ममालिक वग़ैरह में पाक व हिन्द से गई इसी तरह ग़ैर मुक़ल्लिदीयत भी पाक व हिन्द से गई, जिस तरह क़ादियानियों और अहले कुरआन का ये दावा बातिल है कि उन का दीन हिजाज़ी है इसी तरह ग़ैर मुक़ल्लिदीन का कहना कि हमारा दीन मक्के मदीने से इनती भी निस्बत नहीं जितनी बुतों को मक्का मुकर्रमा से है कि अगर वहाँ के नहीं तो वहाँ से निकाले हुए तो हैं, मैं ने कहा क्या आप इस्लाम की पहली साढ़े तेरह सदयों में किसी एक खलीफा-ए-इस्लाम किसी एक क़ाज़ी, किसी एक इमाम मस्जिदे हराम या इमाम मस्जिदे नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हरमैन शरीफैन के किसी एक खाकरूब को भी किसी मुस्तनद तारीखी शहादत से ग़ैर मुक़ल्लिद साबित कर सकते हैं, कि न उस में इज्तिहाद की अहलीयत थी, और न वह तक़लीद करता था, बल्कि ग़ैर मुक़ल्लिद था, इज्तिहाद को कारे इब्लीस और मुजतहिद की तक़लीद को शिर्क कहता था। ''دیدہ باید۔مرداں بکوشید''

मोलवी अब्दुल हक़ इक़रारी शिया

मौलाना क़ारी अब्दुर्रहमान पानीपती रह० तहरीर फरमाते हैं:

बाद थोड़े अर्से के मोलवी अब्दुल हक़ साहब मोलवी गुलशने अली साहब के पास जो दीवान राजा बनारस के शिया मज़हब थे गए और ये कि मैं शिया हूँ, अब ज़ाहिर शीआ होता हूँ, और मैं ने अमल बिल हदीस के परदे में वह काम किया कि

अब्दुल्लाह बिन सबा से न बना था, हज़ारहा अहले सुन्नत को क़ैदे मज़हब से निकाल दिया, अब उनका शीआ होना बहुत आसान है, चुनान्चे मोलवी गुलशन अली साहब ने तीस रूपये माहवारी उन की नौकरी करवादी।

(कश्फुल हिजाबः21, क़ारी अब्दुर्रहमान पानीपती)

इस फिरक़े का बानी

मौलाना नज़ीर हुसैन साहब शेखुल कुल फिल कुल के सुसर और मियाँ साहब के उस्ताज़ हज़रत मौलाना अब्दुल खालिक़ साहब फरमाते हैंः

"सो बानी-मबानी इस फिरक़ा-ए-नौ अहदास का अब्दुल हक़ है जो चन्द रोज़ से बनारस में रहता है, और हज़रत अमीरूल मोमिनीन (सैय्यद अहमद शहीद बरेलवी) ने ऐसी ही हरकात ना शाइस्ता के बाईस अपनी जमाअत से उसको निकलवा दिया, और उलमा-ए-हरमैन ने इस के क़त्ल का फतवा लिखा।"

(तन्बीहुज़्ज़ाल्लीनः2, बर हाशिया निज़ामुल इस्लाम, तबा खुर्शीद आलम लाहौर)

मुहम्मदी से हअले हदीस

जनाब हाफिज़ असलम साहब जीराजपुरी (जो पहले गैर मुक़ल्लिद थे फिर मुन्किरे हदीस हो गए) लिखते हैंः

पहले इस जमाअत ने अपना कोई खास नाम नहीं रखा था, मौलाना शहीद के मुखालिफों ने उन को बदनाम करने के लिए वहाबी कहना शुरू किया, तो अपने को मुहम्मदी कहने लगे, फिर उसको छोड़कर अहले हदीस लक़ब इख्तियार किया, जो आज तक चला आता है। (नवादिरातः343)

इन सब ठोस और घर के ही हवालों से मालूम हुआ कि

ये फिरक़ा सन् 1246 हि० के बाद की पैदाईश और बिल्कुल नई बिदअत है, पहले ये लोग अपने को "मुहम्मदी" कहलाते थे, और लोग उनको वहाबी कहते थे, लेकिन बाद में कमाले होशयारी और सरकारी नवाज़िश से अहले हदीस बन गए।

मौलाना मुहम्मदी अली सिद्दीक़ी लिखते हैं:

नवाब (सिद्दीक हसन खाँ) साहब ने अब्दुल हक़ बनारस से सन् 1285 हि० में मक्का मुकर्रमा में हज को गए, इजाज़त ली, इजाज़त नामा में अपने नाम के साथ मुहम्मदी लिखा, यही पहला नाम था, अहले हदीस नाम मौलाना सैय्यद नज़ीर हुसैन का रखा हुआ है। (हाशिया मज़हब अहले सुन्नत वल जमाअत:36)

नौ मौलूद होने पर घर की शहादत

तक़रीबन डेढ़ सौ साल क़ब्ल हिन्दुस्तान में ग़ैर मुक़ल्लिदीन का नाम व निशान नहीं था, ग़ैर मुक़ल्लिदीयत की वबा अंग्रेज़ के ज़माने से शुरू हुई।

नवाब भोपाली साहब मरहूम "अल-हित्तह फी ज़िक्र सिहाहि सित्तह" में खुद ऐतराफ करते हैं, यानी उस ज़माने में एक फिरक़ा शोहरत पसन्द रियाकार जुहूर पज़ीर हुआ है, जो बावजूद हर तरह की खामी के अपने लिए कुरआन व हदीस पर इल्म व अमल का मुद्दई है, हालाँकि इसका इल्म व अमल और मारिफत से दूर का भी तअल्लुक़ नहीं है। (पे०:67,68)

मोलवी अब्दुल जब्बार गज़नवी कुछ इस तरह ऐतराफ करते हैं:

"हमारे ज़माने में एक फिरक़ा ऐसा पैदा होगया है जो इत्तिबाए सुन्नत का दावा करता है हालाँकि वह इत्तिबाए हदीस से कोसों दूर है। (फतावा उलमा अहले हदीस:75/4)

मौलाना अब्दुर्रहमान फरीवाई अपनी जमाअत "ग़ैर मुक़ल्लिदीन" के नौमौलूद होने का ऐतराफ इन अल्फाज़ में करते हैं:

"अहया-ए-सुन्नत की तहरीक तेरहवीं सदी के अवाखिर में अपनी क़वी तरीन शक्ल (ग़ैर मुक़ल्लिदीयत) में शुरू हुई।"

(जुहूदे मुख्लिसा:93)

नीज़ लिखते हैं:

इस इल्मी और इस्लाही तहरीक की क़यादत की बाग डोर वक़्त के दो मुजद्दिदः इमाम नवाब सिद्दीक़ हसन भोपाली, और इमाम सैय्यद नज़ीर हुसैन मुहद्दिस देहलवी ने संभाली।

गोया ये तमाम हज़रात फिरक़ा-ए-ग़ैर मुक़ल्लिदीयत के नौमौलूद होने पर मुत्तफिक़ हैं।

अंग्रेज़ से क़ब्ल हिन्दुस्तान में कोई ग़ैर मुक़ल्लिद न था

अंग्रेज़ की आमद से पहले मुत्तहिदह हिन्द व पाक में कोई मुसलमान भी तक़लीद का मुन्कर न था, सब अहले सुन्नत वल जमाअत हन्फी थे।

नवाब सिद्दीक़ हसन खाँ साहब लिखते हैं:

खुलासा हिन्दुस्तान के मुसलमानों का ये है कि जब से यहाँ पर इस्लाम आया है चूंकि अक्सर लोग बादशाहों के तरीक़ा और मज़हब को पसन्द करते हैं, उस वक़्त से आज तक ये लोग हन्फी मज़हब पर क़ायम रहे, और हैं और इसी मज़हब के आलिम और फाज़िल, क़ाज़ी और मुफ्ती और हाकिम होते रहे।

(तर्जुमाने वहाबीया:10, नवाब सिद्दीक़ हसन खाँ साहब)

आज़ादी-ए-मज़हब

जब से इस सरज़मीन पर अंग्रेज़ के मन्हूस क़दम आये तो दीन व मज़हब से आज़ादी और बू राह रवी की रौ भी चल निकली।

मोलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी लिखते हैं:

ये मज़हब से आज़ादी और खुदसरी व खुद इज्तिहादी की तेज़ हवा यूरोप से चली है, और हिन्दुस्तान के हर शहर व बस्ती, कूचा व गली में फैल गई है, जिसने ग़ालिबन हिन्दुओं को हिन्दू और मुसलमानों को मुसलमान नहीं रहने दिया, हन्फी और शाफई मज़हब का तो क्या पूछना है।

(इशाअतुस सुन्नह:**552/19**, शुमारह:**8**, मोलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी)

आज़ादी की ये हवा इत्तिफाक़न नहीं चली थी, बल्कि इस में अंग्रेज़ी हुकूमत की मन्शा व मर्ज़ी भी शामिल थी, चुनान्चे नवाब सिद्दीक़ हसन खाँ साहब लिखते हैं:

"फरमां रवाने भोपाल को हमेशा आज़ादी-ए-मज़हब में कोशिश रही, जो खास मन्शा गौरमेन्ट इन्डिया का है। दौलते आलिया ब्रिटिश ने इस मुआमले में क़दीमन व हदीसन हर जगह इन्साफ पर नज़र रखी है, किसी जगह मुजर्रद तोहमत व इफतिरा पर कार्यवाही खिलाफे वाक़े नहीं फरमाई, बल्कि इश्तिहार आज़ादी-ए-मज़हब जारी किये। (तर्जुमाने वहाबीया:**3**, नवाब सिद्दीक़ हसन खाँ)

मुज़ीद लिखते हैं:

अगर कोई बदख्वाह व बद अन्देश सल्तनत ब्रिटिश का होगा तो वही शख्स होगा, जो आज़ादी-ए-मज़हब को नापसन्द करता है, और एक मज़हब खास पर जो बाप दादाओं के वक़्त से चला आता है, जमा हुआ है। (तर्जुमाने वहाबीया:**5**, नवाब सिद्दीक़

हसन खाँ साहब)

एक और मक़ाम पर यूँ रक़मतराज़ होते हैंः

ये आज़ादगी हमारी मज़ाहिब जदीदह (हन्फी, शाफई वग़ैरह मज़ाहिब, नाक़िल) से ऐन मुराद क़ानून इंगलिशीया है।

(तर्जुमाने वहाबीया:**20**, नवाब सिद्दीक़ हसन खाँ)

नवाब साहब भोपाली मरहूम की ये तारीखी शहादत भी नाज़िरीन मुलाहिज़ा फरमा लेंः "ये लोग (अहले हदीस) अपने दीन में वही अज़ादी बरत्ते हैं जिस का इश्तिहार बार बार अंग्रेज़ सरकार से जारी हुआ, खुसूसन दरबारे देहली से जो सब दरबारों का सरदार है। (तर्जुमाने वहाबीया:**32**, नवाब सिद्दीक़ हसन खाँ)

इन जवाबात से ये बात बखूबी साबित हो गई है कि ग़ैर मुक़ल्लिदीयत जिस में मज़हबी आज़ादी और ज़हनी व फिक्री आवारगी पाई जाती है वह इसी ब्रिटिश गौरमेंट के अहद में वुजूद में आई है, उस से पहले इस का वुजूद न था।

अंग्रेज़ के खिलाफ जिहाद के हराम होने का फत्वा

ग़ासिब अंग्रेज़ से उलमा-ए-देवबन्द ने जिहाद किया तो ग़ैर मुक़ल्लिदीन ने उसकी सख्त मुखालिफत की, हिन्दुस्तान को "दारूल इस्लाम" क़रार दिया और अंग्रेज़ी हुकूमत के खिलाफ जिहाद के बिल्कुल नाजायज़ होने का फत्वा दिया, बल्कि अज़्मे जिहाद को गुनाहे कबीरा क़रार दिया, और जिहाद करने वालों के लिए निहायत सख्त अल्फाज़ इस्तेमाल किये।

नवाब सिद्दीक़ हसन साहब लिखते हैंः

"कुल मुसलमानों को सरकार की मुखालिफत नाजायज़ है, और किसी शख्स को हैसियते मौजूदह पर हिन्दुस्तान के दारूल

इस्लाम होन में शक न रहे।" (तर्जुमाने वहाबीया:**48**, सिद्दीक़ हसन खाँ)

नीज़ फरमाते हैं:

"जब ये मुल्क "दारूल इस्लाम" हुआ तो फिर जिहाद करना क्या माना बल्कि अज़्मे जिहाद ऐसी जगह एक गुनाह बड़े गुनाहों से।" (तर्जुमाने वहाबीया:**5**, नवाब सिद्दीक़ हसन खाँ)

एक मुक़ाम पर मौसूफ का इरशाद है:

"बस फिक्र करना उन लोगों का जो अपने हुक्मे मज़हबी से जाहिल हैं इस अम्र में कि हुकूमत ब्रिटिश मिट जाए और ये अमन व अमान जो आज हासिल है फसाद के परदे में जिहाद का नाम लेकर उठा दिया जाए, सख्त नादानी और बेवकूफी है।" (तर्जुमाने वहाबीया:**7**, नवाब सिद्दीक़ हसन खाँ)

मुज़ीद रक़म्तराज़ हैं:

"जो लड़ाइयाँ ग़दर में वाक़े हुईं वह हरगिज़ शरई जिहाद न थीं, और क्योंकर वह शरई जिहाद हो सकता है, कि जो अमन व अमान खलाईक़ का और राहत व रिफाहे मखलूक़ का हुकूमत इंगलिशीया से ज़मीन हिन्द में क़ायम था उसमे बड़ा खलल वाक़े हो गया।" (तर्जुमाने वहाबीया:**18**, नवाब सिद्दीक़ हसन खाँ)

आगे चल कर अरक़ाम फरमाते हैं:

"ये बग़ावत जो हिन्दुस्तान में बज़माना ग़दर हुई उसका नाम जिहाद रखना उन लोागें का काम है जो असल दीन से आगाह नहीं, और मुल्क में फसाद डालना और अमन व अमान उठाना चाहते हैं।" (तर्जुमाने वहाबीया:?, नवाब सिद्दीक़ हसन खाँ)

नवाब साहब जिहादे आज़ादी सन् 1857 ई० से अपनी और अपने फिरक़े की बराअत ज़ाहिर करते हुए यूँ गोया होते हैं:

"किसी ने न सुना होगा कि आज तक कोई मुवह्हिद

मुत्तबा-ए-सुन्नत, हदीस व कुरआन पर चलने वाला बेवफाई और क़रार तोड़ने का मुर्तकिब हुआ, या फित्ना अंग्रेज़ी और बग़ावत पर आमादा हुआ, जितने लोगों ने ग़दर में शर व फसाद किया और हुक्कामे इंगलिशीया से बर सरे इनाद हुए, वह सब के सब मुक़ल्लिदाने मज़हबे हन्फी थे।" (तर्जुमाने वहाबीया:**25**, सिद्दीक़ हसन खाँ)

क़ारिईने किराम! ये नहीं समझना चाहिए कि अंग्रेज़ के खिलाफ जिहाद करने के मुखालिफ सिर्फ नवाब साहब ही थे, बल्कि देखा जाए तो गिरोहे ग़ैर मुक़ल्लिदीन के तक़रीबन सब अकाबिर व असाग़िर जिहाद के मुखालिफ थे। शेअरः

"न तन्हा मन दरीं मैखाना मस्तम"

मियाँ नज़ीर हुसैन देहलवी साहब के सवानेह निगार "गौरमेंट इंगलिशीया के साथ वफादारी (लिवायलिटी)" की शह सुर्खी के तहत लिखते हैं।

"हज को जाते वक़्त जो छुट्टी कमिश्नरी देहली वग़ैरह ने मियाँ साहब को दी थी, उसकी नक़ल सफरे हज के बयान में हदया-ए-नाज़िरीन की जायेगी, मगर इसी के साथ ये बता देना भी ज़रूरी है कि मियाँ साहब गौरमेंट इंगलिशीया के कैसे वफादार थे, ज़माना-ए-ग़दर सन् **1857** ई० में जबकि देहली के मुक़्तदा और बेशतर मामूली मोलवियों ने अंग्रेज़ों पर जिहाद का फतवा दिया तो मियाँ साहब ने न उस पर दस्तखत किया, न मोहर। वह खुद फरमाते थे कि मियाँ वह हुल्लड़ था, बहादुर शाही न थी, वह बेचारा बूढ़ा बहादुर शाह क्या करता, हश्रातुल अर्ज़ खाना बरअन्दाज़ों ने तमाम देहली को खराब, वीरान, तबाह और बरबाद कर दिया। शराईत इमारत व जिहाद बिल्कुल मफकूद थे, हम ने तो उस फत्वे पर दस्तखत नहीं किया, मोहर क्या करते, और क्या लिखते, मुफ्ती सदरूद्दीन खान साहब चक्कर में आगऐ, बहादुर

शाह को भी बहुत समझाया कि अंग्रेज़ों से लड़ना मुनासिब नहीं है, मगर वह बाग़ियों के हाथ कठपुतली हो रहे थे, करते तो क्या करते।" (अल-हयात बादल ममातः76, फैज़ हसन बिहारी, अल-मकतबतुल असरीया)

मियाँ साहब के पास एक इस्तिफ्ता आया कि जिहाद फर्ज़े ऐन है या फर्ज़े किफाया? और इस वक़्त जिहाद है या नहीं? मियाँ साहब ने उसके जवाब में जिहाद की चार शर्तें बयान फरमाईं और आखिर में लिखा।

"बस जब ये बात बयान हो चुकी तो मैं कहता हूँ कि इस ज़माने में इन चार शर्तों में कोई शर्त मौजूद नहीं तो क्योंकर जिहाद होगा, हर गिज़ नहीं होगा।"

(फतावा नज़ीरियाः472/2, मियाँ नज़ीर हुसैन, मतबूआ दनी प्रिटिंग वर्कस दारूस सलतनत देहली)

मियाँ साहब अपने आप को अंग्रेज़ी इक़्तिदार का मुआहिद क़रार देते हुए लिखते हैंः

"अलावा बरीं हम लोग मुआहिद हैं सरकार से अहद किया हुवा है फिर क्योंकर अहद के खिलाफ कर सकते हैं, अहद शिकनी की बहुत मज़म्मत हदीस में आई।"

(फतावा नज़ीरियाः472/2, मियाँ नज़ीर हुसैन, मतबूआ दनी प्रिटिंग वर्कस दारूस सलतनत देहली)

एक और साईल के जवाब में इरशाद फरमाते हैंः

"हिन्दुस्तान में शौकतो कुव्वत और कुदरते अस्लहा और आलात मफ्कूद है और अमान व पैयमान यहाँ मौजूद है, बस जबकि शर्त जिहाद की इस दयार में मादूम हुई तो जिहाद का करना यहाँ सबब हलाकत और मासियत का होगा।"

(फतावा नज़ीरियाः472/2, मियाँ नज़ीर हुसैन, मतबूआ

दनी प्रिटिंग वर्कस दारूस सलतनत देहली)

मियाँ नज़ीर हुसैन साहब के इस फत्वे पर दर्ज ज़ेल ग़ैर मुक़ल्लिद उलमा ने भी ताईदी दस्तखत सबत फरमाए हैं:

(1).....सैय्यद मुहम्मद अबुल हसन।

(2).....सैय्यद मुहम्मद अबुस्सलाम।

(3).....मुहम्मद यूसुफ 1303 हि०

(4).....मुहम्मद अबदुल समद खाँ बिन मुल्ला अब्दुल वाहिद 1291 हि०

(5)..... "المعتصم بحبل الله الاحد ابو البركات"हाफिज़ मुहम्मद 1292 हि०

(6).....मुहम्मद अबदुल ग़फ्फार 1288 हि०

(7).....मुहम्मद अबदुल अज़ीज़ 1288 हि०

(8).....मुहम्मद इस्हाक़ 1255 हि०

(9).....शहाबुद्दीन 1288 हि०

(10).....अबदुल ग़फूर 1288 हि०

(11).....मुहम्मद अबदुल खालिक़ उफिया अन्हु खोलनी।

(12).....वसीयत अली उफिया अन्हु।

(13).....अबुल फज़्ल मुहम्मद अबुस्सलाम नसीराबादी।

(14).....मुहम्मद सईद उफियल्लाहु अन्हु अल-बनारसी।

मोलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी साहब ने सन् 1876 ई० में अंग्रेज़ से जिहाद के खिलाफ एक रिसाला "अल-इक़्तिसाद फी मसाईलिल जिहाद" लिखा जिस में उन्हों ने बज़अमें ख्वेश ये साबित करने की कोशिश की है कि हिन्दुस्तान दारूल इस्लाम है इस लिए यहाँ जिहाद जायज़ नहीं, बल्कि इस वक़्त दुनिया में कहीं भी जिहाद जायज़ नहीं।

प्रोफेसर मुहम्मद अय्यूब लिखते हैं:

"मोलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी ने सरकार बरतानिया की वफादारी में जिहाद की मन्सूखी पर एक मुस्तक़िल रिसाला "अल-इक़्तिसाद फी मसाईलिल जिहाद" सन् 1292 हि० में लिखा। अंग्रेज़ और अर्बी ज़बानों में इस कि तर्जमे हुए। ये रिसाला सर चार्लस एचीसन और सर जेम्स लायल गवर्नराने पंजाब के नाम मज़मून किया गया। मोलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी ने अपनी जमाअत के उलमा से राय लेने के बाद सन् 1296 हि० में ये रिसाला इशाअतुस सुन्नह की जिल्द दोम शुमारह ग्यारह में बतौरे ज़मीमा शाय किया, फिर मुज़ीद मश्विरह व तहक़ीक़ के बाद 1306 हि० में बाज़ाब्ता किताबी शक्ल में शाय हुआ।"

(जंगे आज़ादी सन 1857 ई०, प्रोफेसर मुहम्मद अय्यूब क़ादरी)

अंग्रेज़ के साथ खैरख्वाही का इज़हार

नवाब सिद्दीक़ हसन खान साहब लिखते हैं:

"कोई फिरक़ा हमारी तहक़ीक़ में ज़्यादह तर खैरख्वाह और तालिबे अमन व अमान व आसाइशे रिआया का और क़द्र शनास बन्द व बस्त गौरमेंट का इस गिरोह से नहीं है, जो आप को अहले सुन्नत व हदीस कहता है और किसी मज़हबे खास का मुक़ल्लिद नहीं।"

(तर्जुमाने वहाबीया:58, नवाब सिद्दीक़ हसन खाँ)

अंग्रेज़ हुकूमत खुदा की रहमत है

मियाँ नज़ीर हुसैन साहब के शागिर्दे रशीद और सफरे हज के रफीक़ मोलवी तलत्तुफ हुसैन साहब ने एक मौक़ा पर पाशा से गुफ्तगू करते हुए कहा:

"हम ये कहने से माज़ूर समझे जाएं कि अंग्रेज़ गौरमेंट हिन्दुस्तान में हम मुसलमानों के लिए खुदा की रहमत है।"

(अल-हयात बादल ममात:53, फज़ल हुसैन बिहारी)

अंग्रेज़ हुकूमत इस्लामी सल्तनत से बहतर है

मोलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी साहब फरमाते हैं:

"इस गिरोह अहले हदीस के खैरख्वाह वफादार रिआया ब्रिटिश गौरमेंट होने पर एक बड़ी रोशन और क़वी दलील ये है कि ये लोग ब्रिटिश गौरमेंट के ज़ेरे हिमायत रहने को इस्लामी सल्तनत के ज़ेरे साया रहने से बहतर समझते हैं और इस अम्र को अपने क़वी वकील अशाअतुस सुन्नह के ज़रीए से गौरमेंट पर बखूबी ज़ाहिर और मुदल्लल कर चुके हैं, जो आज तक किसी इस्लामी फिरक़ा रिआया गौरमेंट ने ज़ाहिर नहीं किया और न आइन्दा किसी से इसके ज़ाहिर होने की उम्मीद हो सकती है।"

(अहले हदीस और अंग्रेज़ बहवाला इशाअतुस सन्नह:262/6, शुमारह:9)

आदिल व महरबान गौरमेंट

मोलवी अब्दुर्रहीम अज़ीमाबादी अपनी किताब "अद्-दुर्रूल मन्सूर फी तराजिमि अहले सादिक़ फूर" में हुकूमते बरतानिया को आदिल और महरबान गौरमेंट क़रार देते हुए लिखते हैं:

"खास कर फिरक़ा-ए-अहले हदीस के लिए तो किसी इस्लामी सल्तनत में भी ये आज़ादी मज़हबी (कि वह बिला मुज़ाहिमत अपने तमाम अरकान दीनी अदा करें) नसीब नहीं जो ब्रिटिश हुकूमत में उन्हें हासिल है, बस उनका फर्ज़ मज़हबी व मन्सबी दोनों है कि वह ऐसी आदिल और महरबान गौरमेंट की

मुती व फरमाँबरदार रिआया हों और हमेशा दुआ गोये सल्तनत रहें। فتدبرو لا تكن من الغافلين"

(अद्-दुर्रूल मन्सूरः2, तबा अव्वल, अब्दुर्रहीम अज़ीमाबादी)

ग़ैर मुक़ल्लिदीन के अकाबिर ने मल्का-ए-विकटोरिया जश्ने जुब्ली पर मल्का के हुजूर सिपास नामा पेश किया, फिर चौबीस मार्च सन् 1887 ई० में गवर्नर पंजाब ऐचीसन के हुजूर उसकी रूख्सत के मौक़े पर एक सिपास नामा पेश किया, हिन्दुस्तान के गवर्नर जनरल और वायसराय लार्ड फ्रन के हुज़ूर उसकी वतन वापसी के मौक़े पर एक सिपास नामा पेश किया। ये सिपास नामे क्या थे? अंग्रेज़ी हुकूमत से अक़ीदत व मुहब्बत और वफादारी गौरमेंट ब्रिटिश का एक कामिल वसीक़ा थे, उन में ग़ैर मुक़ल्लिदीन के उलमा व सुलहा ने गौरमेंट इंगलिशीया के हुज़ूर खुशामद व चापलोसी की इन्तिहा करदी, बखौफे तिवालत उनका यहाँ ज़िक्र नहीं किया जा रहा है, तफसील के लिए "अहले हदीस और अंग्रेज़" नामी किताब मुलाहिज़ा फरमाएं।

"अहले हदीस" नाम अंग्रेज़ हुकूमत से अलाट कराया

इस्लामी तारीख में कोई वाकिया ऐसा नहीं मिलता कि किसी मुस्लिम जमाअत ने अपना मज़हबी व मस्लकी नाम किसी ग़ैर मुस्लिम हुकूमत से अलाट करवाया हो, हाँ हिन्दुस्तान के अंग्रेज़ी दौर में ये वाक़िया ज़रूर मिलता है कि ग़ैर मुक़ल्लिदीन ने ब्रिटिश गौरमेंट को ये दरखास्त दी कि उन्हें वहाबी के बजाय अहले हदीस के नाम से मुखातब किया जाए, ब्रिटिश गौरमेंट ने ग़ैर मुक़ल्लिदीन की खिदमात के पेशे नज़र ये दरखास्त मन्जूर की,

और सरकारी दफातिर और काग़ज़ात में ग़ैर मुक़ल्लिदीन को वहाबी के बजाय अहले हदीस लिखने का हुक्म दिया।

मोलवी अब्दुल मजीद खादिम सौबदरवी ग़ैर मुक़ल्लिद रक़्मतराज़ हैं:

"मोलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी ने इशाअतुस सुन्नह के ज़रीए अहले हदीस की बहुत खिदमत की, लफ्ज़े "वहाबी" आप ही की कोशिश से सरकारी दफातिर और काग़ज़ात से मन्सूख हुआ और जमाअत को अहले हदीस के नाम से मौसूम किया गया, आप ने हुकूमत की खिदमत भी की और इनाम में जागीर पाई।"

(हाशिया सीरत सनाई:**452**, अब्दुल मजीद सौबदरवी)

नवाब साहब की शादी

ग़ैर मुक़ल्लिदीन हज़रात ने ब्रिटिश गौरमेंट की खूब खिदमत की जिस के सिले में उन्हें ऐज़ाज़ात व इनामात से नवाज़ा गया, दौलत व हशमत भी मिली, और जागीरें भी पाईं, नवाब सिद्दीक़ हसन खान साहब की शादी वालिया भोपाल से खास अंग्रेज़ी हुकूमत की मन्शा व मर्ज़ी से हुई, नवाब साहब अपनी शादी की रूदाद खुद ज़िक्र फरमाते हैं, मुलाहिज़ा फरमाएं:

नवाब साहब लिखते हैं:

"जब दूसरा साल गुज़रा, रईसा मुअज़्ज़मा ने अपनी ज़ौजियत से मुझे इज़्ज़त व इफ्तिखार बख्शा, और ये अम्र बइत्तिला-ए-गौरमेंट आलिया व हस्बे मर्ज़ी सरकार इंगलिशीया जुहूर में आया, और ये इलाक़ा मौजिबे तरक़्क़ी व मन्सब और उरूज व इज़्ज़त रोज़ अफजूँ का हुआ। और चौबीस हज़ार रूपये सालाना और खिताबात मोतदिल महामी से सरफराज़ हासिल हुआ, और खुलअते गिरामी क़ीमती दो हज़ार रूपये मय अस्प व फील

व चिनौर, पालकी व शमशीर वग़ैरह इनायत हुआ। बाद चन्दे खिताब नव्वाबी व अमीरूल मुल्की वल उजाही 17 फीरशलिंग से सर बुलन्दी अता फरमाई, और अक़्ता यक लक रूपया साल ऊपर से मुज़ीद मरहमत हुए।

(तर्जुमाने वहाबीया:38, नवाब सिद्दीक़ हसन खाँ)

मेम की खिदमत का सिला

मियाँ नज़ीर हुसैन साहब को एक मेम की खिदमत के सिले में रू० 1300 और वफादारी के सर्टीफिकेट मिले और शमसुल उलमा के खिताब से सरफराज़ हुए।

मियाँ साहब के सवानेह निगार लिखते हैं:

"ऐन हालाते ग़दर में जबकि एक एक बच्चा अंग्रेज़ों का दुश्मन हो रहा था, मिसिज़ लेसन्स एक ज़ख्मी मेम को रात के वक़्त मियाँ साहब उठवाकर अपने घर ले आये, पनाह दी, इलाज किया, खाना देते रहे, उस वक़्त अगर ज़ालिम बाग़ियों को ज़रा जब्र भी हो जाती तो आपके क़त्ल और खानुमा बरबादी में मुतलक़ देर न लगती, तुर्रह इस पर ये है कि पंजाबी कटरह वाली मस्जिद को तगल्लुबन बाग़ी दखल किये हुए थे, और इसी से मिला हुआ ज़नाना मकान था, इसी में मेम को छुपाए हुए थे। मगर साढ़े तीन महीने तक किसी को मालूम न हुआ कि हवेली में कितने आदमी हैं? साढ़े तीन महीने के बाद जब पूरी तरह अमन क़ायम हो चुका तब इस नीम जान मेम को जो अब बिल्कुल तन्दुरूस्त और तवाना थी, अंग्रेज़ कैम्प में पहुँचा दिया, जिस के सिले में मबलग़ एक हज़ार तीन सौ रूपये और मुन्दर्जा ज़ेल सर्टीफिकेट मिले।" (अल-हयात बादल ममात:77, फज़ल हुसैन बिहारी)

(मियाँ साहब को) शमसुल उलमा का खिताब गौरमेंट

इंगलिशीया की तरफ से 22 जून सन् 1897 ई० मुताबिक़ 21 मुहर्रमुल हराम सन् 1315 हि० रोज़ से शन्बा को मिला।

याद रहे कि अंग्रेज़ी हुकूमत की तरफ से शमसुल उलमा का खिताब सिर्फ मियाँ नज़ीर हुसैन साहब ही को नहीं मिला, बल्कि ग़ैर मुक़ल्लिदीन के बहुत से उलमा व ज़ोअमा शमसुल उलमा व खान बहादुर के खिताब से सरफराज़ हुए।

मौलवी नज़ीर हुसैन साहब के लिए अंग्रेज़ कमिश्नरी की चिट्ठी

ख्याल रहे कि चिट्ठी अंग्रेज़ी में है, उसका तर्जुमा पेशे खिदमत है, ये चिट्ठी मियाँ साहब ने जब हज का इरादह किया था तो उन को ये खौफ हुआ कि मुखालिफीन उन्हें परेशान करेंगे तो उन्होंने अपनी हिफाज़त की खातिर कमिश्नर देहली से जो अंग्रेज़ था एक चिट्ठी ली, जिस का मज़मून ये है:

"मोलवी नज़ीर हुसैन देहली के एक बड़े मुक़्तदिर आलिम हैं, जिन्होंने नाजुक वक़्तों में अपनी वफादारी गवरमेंट बरतानिया के साथ साबित की है, अब वह अपने फर्ज़ ज़ियारते काबा के अदा करने के लिए मक्का जाते हैं, मैं उम्मीद करता हूँ कि जिस किसी ब्रिटिश गौरमेंट अफसर की मदद चाहेंगे वह उन की मदद करेगा, क्योंकि वह कामिल तौर पर इस मदद के मुस्तहिक़ हैं।"

(तर्जुमाने वहाबीया:83, नवाब सिद्दीक़ हसन खाँ)

नाज़िरीन! ज़रा आप सीने पर हाथ रखकर सोचें कि मुल्क व मिल्लत के लिए आज़ादी की जद्दो जहद करने वालों को तख्ता -ए-दार पर चढ़ाया जा रहा था, और मुजाहिदीन सर बकफ और कफन बरदोश होकर अपनी जानें कुर्बान कर रहे थे, और ग़ैर

मुक़ल्लिदीन हज़रात अंग्रेज़ी सरकार की क्षत्र छाया तले मज़े उड़ा रहे हैं। आखिर इस की कोई तो वजह होगी, हक़ीक़त ये है कि अंग्रेज़ों ने हिन्दुस्तान के आम मुसलमानों में तफरक़ा बाज़ी पैदा करने के लिए और अंग्रेज़ों के खिलाफ उनकी जद्दो जहद को कमज़ोर करने के लिए इस फिरक़े को खड़ा किया और हर क़िस्म की इनायतों से नवाज़ा।

(अल-मआसिर, शुमारहः3, सन् 1396 हि०, बहवाला ग़ैर मुक़ल्लिदीन की डायरीः94)

फक़त वल्लाहु आलम

اَللّٰهُمَّ اَرِنَا الْحَقَّ حَقًّا وَارْزُقْنَا اتِّبَاعَهُ وَاَرِنَا الْبَاطِلَ بَاطِلاً وَارْزُقْنَا اجْتِنَابَهُ
رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا اِنَّکَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ وَتُبْ عَلَيْنَا اِنَّکَ اَنْتَ
التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ. بِحُرْمَةِ حَبِيْبِکَ سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى خَيْرِ خَلْقِهٖ سَيِّدِنَا
وَمَوْلاَنَا وَحَبِيْبِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ
وَاَصْحَابِهٖ اَجْمَعِيْنَ اِلٰى
يَوْمِ الدِّيْنِ
آمِيْن

मुहम्मद फारूक़ गुफिरा लहू

खादिम जामिया महमूदिया, अलीपुर, हापुड़ रोड, मेरठ (यू० पी०)

ग़ैर मुक़ल्लिदीन अपने
और
अहले हक़ उलमा की नज़रम में

अर्ज़े मुरत्तिब

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّی عَلٰی رَسُوْلِهِ الْکَرِیْمِ. اَمَّا بَعْدُ!

फिरक़ा-ए-ग़ैर मुक़ल्लिदीन (नाम निहाद अहले हदीस) जो अपने मा सिवा तमाम उम्मत, उलमा व मशाइख, अवलिया-ए-किराम, मुहद्दिसीन, फ़ुक़्हा मुक़ल्लिदीन को बद दीन, गुमराह, काफिर व मुश्रिक, ग़ैर नाजी क़रार देते हैं।

इस मुख्तसर रिसाला में इस फिरक़ा के उलमा और बाज़ दीगर अहले हक़ उलमा की आरा इस फिरक़े के बारे में जमा की हैं, ताकि ये फिरक़ा इस आयने में अपना चेहरा देख ले, दूसरे अहले हक़ उलमा की आरा को तो तअस्सुब पर मबनी किया जा सकता है, मगर उलमा-ए-मुहक़्क़िक़ीन की आरा को हक़ीक़त पर ही महमूल करना चाहिए, हो सकता है कि किसी खुशनसीब तालिबे हक़ को हक़ की रहनुमाई हो जाए।

اَللّٰهُ یَهْدِ السَّبِیْلَ

اَللّٰهُمَّ اَرِنَا الْحَقَّ حَقًّا وَارْزُقْنَا اتِّبَاعَهٗ وَاَرِنَا الْبَاطِلَ بَاطِلاً وَارْزُقْنَا اجْتِنَابَهٗ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا اِنَّکَ اَنْتَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ وَتُبْ عَلَیْنَا اِنَّکَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِیْمُ. وَصَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی خَیْرِ خَلْقِهٖ سَیِّدِنَا وَمَوْلَانَا وَحَبِیْبِنَا مَحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَبَارِکْ وَسَلِّمْ.

मुहम्मद फारूक़ गुफिरा लहू

24/7/1422 हि०

खादिम जामिया महमूदिया, अलीपुर, हापुड़ रोड, मेरठ (यू० पी०)

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّی عَلٰی رَسُوْلِهِ الْکَرِیْمِ. اَمَّا بَعْدُ!

नवाब सिद्दीक़ हसन खाँ साहब का इरशाद

नवाब सिद्दीक़ हसन खाँ साहब "अल-हित्तह फी ज़िक्रि सिहाहि सित्तह" में ताजुद्दीन सुबुकी रह० से मुहद्दिस की तारीफ नक़ल करने के बाद अपने ज़माने के ग़ैर मुक़ल्लिदीन के बारे में इरशाद फरमाते हैं:

"अहादीसे शरीफा का उन्हें इल्म नहीं है, मुआमलात के बारे में सुन्नत से जो फिक़्ही मसाईल साबित हैं उन्हें ज़रा भी नहीं जानते और किसी मस्अले का सुनन से इस्तिन्बात नहीं कर सकते।"

नीज़ ये भी लिखा है कि उन लोगों ने ज़बानी दावों और तावीलाते शयतानिया पर इक्तिफा कर लिया है, फिर उन्ही को ऐने दीन समझ लिया है, और इस बात पर राज़ी हो गये कि मुसलमानों के दरमियान जो पीछे रह जाने वाले लोग हैं उनके साथ हो जाएं, ये उनका मिज़ाज है, अमीर हो या फक़ीर, सही हो या बीमार, मैं ने उन्हें बार बार अज़माया है, मैं ने उन में से किसी को नहीं पाया जो सालिहीन के तरीक़े की रग़बत रखता हो, या मोमिनीन की सीरत पर चलता हो, बल्कि मैं ने उन सब को इस पर पाया कि हक़ीर दुनिया में मुन्हमिक हैं, और उसके रद्दी मुज़खरफात में गर्क़ हैं, जाह व माल जमा करना चाहते हैं, हराम और हलाल का फर्क़ किये बगैर माल जमा करने के लालची हैं,

उनके दिल मुसलमानों के बारे में सख्त हैं, सरकश हैं, बेहूदा लोगों की तरह हैं।

और आखिर में लिखते हैं:

"فَمَا هٰذَا دِيْنٌ اِنْ هٰذَا اِلَّا فِتْنَةٌ فِى الْاَرْضِ وَفَسَادٍ كَبِيْرٍ"

तर्जुमा:- यानी ग़ैर मुक़ल्लिदीन का अपनाया हुआ ये तरीक़ा कोई दीनी नहीं है, ये तो ज़मीन में फित्ना और बहुत बड़ा फसाद है।

अल्लामा इब्ने तयमिया का इरशाद

रहमतुल्लाहि अलैह

उन जैसे ही लोगों के बारे में अल्लामा इब्ने तयमिया रहमतुल्लाहि अलैह ने फरमाया कि:

"ये लोग अव्वलन आदमी को शीईयत और उस के मज़हब की तरफ बुलाते हैं और उस के बाद बतदरीज उसे इस्लाम के दायरे से खारिज कर देते हैं।" (फतावा:163/4)

मौलाना अब्दुल जब्बार गज़नवी

रहमतुल्लाहि अलैह

की शहादत

मौलाना अब्दुल जब्बार साहब गज़नवी रहमतुल्लाहि अलैह तहरीर फरमाते हैं:

"अल्लाह की क़सम यही लोग हैं जो शरीअते नब्वीया की हद बन्दी को गिराते हैं, और मिल्लत हन्फीया की बुन्याद को कोहना करते हैं, और सुन्नते मुस्तफवीया के निशानों को मिटाते हैं, अहादीसे मरफूआ को छोड़ रखा है, और मुत्तसिलुल असनाद

आसार को फेंक दिया है, और उनके दफा करने के लिए वह हीला बनाते हैं कि जिन के लिए किसी यक़ीन करने वाले का शरहे सद्र नहीं होता, और न किसी मोमिन का सर उठता है।"

(फतावा उलमा-ए-हदीसः80/7)

नवाब वहीदुज़्ज़मा साहब की शहादत

नवाब वहीदुज़्ज़मा साहब रक़्मतराज़ हैंः

"ग़ैर मुक़ल्लिदों का गिरोह जो अपने तईं अहले हदीस कहते हैं उन्हों ने ऐसी आज़ादी इख्तियार की है कि मसाईल इज्माई की भी परवाह नहीं करते, न सल्फे सालिहीन की और न ताबईन की, कुरआन की तफसीर सिर्फ लुग़त से अपनी मन मानी कर लेते हैं, हदीस शरीफ में जो तफसीर आचुकी है उसको भी नहीं सुनते, बाज़ अवाम अहले हदीस का ये हाल है कि उन्हों ने सिर्फ रफअ यदैन और आमीन बिल जहर को अहले हदीस होने के लिए काफी समझा है, बाक़ी और आदाब व सुनन और अख़लाक़े नब्वी से कुछ मतलब नहीं। ग़ीबत, झूठ, इफ्तिरा से बात करते हैं, अइम्मा मुज्तहिदीन और औलिया अल्लाह और हज़रात सूफिया के हक़ में बेअदबी और गुस्ताखी ज़बान पर लाते हैं। अपने सिवा तमाम मुसलमानों को मुश्रिक और काफिर समझते हैं, बात बात में हर एक को मुश्रिक और क़ब्र प्रस्त कह देते हैं।"

(लुगातुल हदीसः91/2, किताबःशीन)

क़ारिईने किराम! आप ने ग़ैर मुक़ल्लिदीन के साहिबान और दीगर उलमा के हवाले मुलाहिज़ा फरमाइये।

ग़ौर कीजिए कि वह ग़ैर मुक़ल्लिदीन के रवैया से किस क़द्र नालाँ हैं, और इस हक़ीक़त का खुले दिल से ऐतराफ कर रहे हैं कि उन लोगों को हदीस से सिवाय मुतनाज़िआ मसाईल के कोई

मस नहीं, ये लोग सिर्फ अपने आप को मुसलमान और मुवह्हिद समझते हैं, और अपने मा सिवा बाक़ी तमाम को मुश्रिक और बिदअती क़रार देते हैं।

ग़ैर मुकल्लिदीन के इन नवाब साहिबान को रोना बिल्कुल सही है, हक़ीक़त यही है कि ग़ैर मुक़ल्लिदीन ने तौहीद व रिसालत अपने लिए ही खास कर रखी है, वह अपने मा सिवा सब को मुश्रिक और बिदअती समझते हैं, इसी पर बस नहीं साफ तौर पर उन को जहन्नुमी बतलाते हैं, उन से निकाह करना नाजाइज़ क़रार देते हैं, ग़ैर मुक़ल्लिदीन के एक मशहूर व मुक़्तदिर आलिम अबू शकूर अब्दुल क़ादिर साहब हिसारी ने खास इस मस्अले पर एक किताब लिखी हैः "सियाहतुल जिनान लि-मुनाकिहति अहले ईमान" इस किताब से चन्द हवाले नक़ल किए जाते हैं।

हन्फी गुमराह हैं और फिरक़ा-ए-नाजिया से खारिज हैं उनसे निकाह जायज़ नहीं

अब्दुल क़ादिर साहब हिसारी लिखते हैंः

"ये अम्र रोशन हो चुका है कि हक़ मज़हबे अहले हदीस है और बाक़ी झूठे और जहन्नुमी है, तो अहले हदीसों पर वजिब है कि उन तमाम गुमराह फिरक़ों से बचें और उनसे खला मला, इख्तिलात, मेल-जोल, दीनी तअल्लुक़ात न रखें, यानी बातिल मज़हब वालों के पीछे नमाज़ न पढ़ें, और उनके जनाज़ों में शामिल न हों, उनसे सलाम न लें, उन से मुनाकिहत न करें, न उनको अपनी लड़कियाँ दें, और न उन से लें।"

(सियाहतुल जिनानः4, अब्दुल क़ादिर हिसारी)

आगे लिखते हैं:

"मुक़ल्लिदीन हन्फीया के हर दो फिरक़े देवबन्दी और बरेलवी बिला शुबह गुमराह और अहले हदीसों जैसे मुसलमान नहीं हैं।" (सियाहतुल जिनान:4, अब्दुल क़ादिर हिसारी)

हज़रत मौलाना अब्दुल हय लखनवी रहमतुल्लाहि अलैह का इरशाद

हज़रत मौलाना अब्दुल हय लखनवी रहमतुल्लाहि अलैह (मुतवफ्फा:1304 हि०) बातिल और नेचरी फिरक़ा की तरदीद करते हुए अखीर में अपने ज़माने के ग़ैर मुक़ल्लिदीन का हाल लिखते हैं:

"وَلِعُمُرِیْ اِفْسَادُ هٰؤُلَاءِ الْمُلَاحِدَةِ وَاِفْسَادُ اِخْوَانِهِمُ الْاَصَاغِرِ الْمَشْهُوْرِیْنَ بِغَیْرِ الْمُقَلِّدِیْنَ الَّذِیْنَ سَمُّوْا اَنْفُسَهُمْ بِاَهْلِ الْحَدِیْثِ وَشَتَّانَ مَا بَیْنَهُمْ وَبَیْنَ اَهْلِ الْحَدِیْثِ قَدْ شَاعَ فِیْ جَمِیْعِ بِلَادِ الْهِنْدِ وَبَعْضِ بِلَادِ غَیْرِ الْهِنْدِ فَخَرَّبَتْ بِهِ الْبِلَادُ وَ وَقَعَ النِّزَاعُ وَالْعِنَادُ فَاِلَی اللّٰهِ الْمُشْتَکٰی وَاِلَیْهِ الْمُتَصَرَّعُ وَالْمُلْتَجٰی بَدَأَ الْاِسْلَامُ غَرِیْبًا وَسَیَعُوْدُ غَرِیْبًا فَطُوْبٰی لِلْغُرَبَاءِ وَلَقَدْ کَانَ حُدُوْثُ مِثْلِ هٰؤُلَاءِ الْمُفْسِدِیْنَ وَالْمُلْحِدِیْنَ فِی الْاَزْمِنَةِ السَّابِقَةِ وَفِیْ اَزْمِنَةِ السَّلْطَنَةِ الْاِسْلَامِیَةِ غَیْرَ مَرَّةٍ فَقَابَلَتْهُمْ اَسَاطِیْنُ الْمِلَّةِ وَسَلَاطِیْنُ الْاُمَّةِ بِالصَّوَارِمِ الْمُنْکِیَةِ وَاَجْرُوْا عَلَیْهِمُ الْجَوَازِمَ الْمُفْنِیَّةِ فَانْدَفَعَتْ فِتْنَتُهُمْ بِهَلَاکِهِمْ وَلَمَّا لَمْ تَبْقَ فِیْ بِلَادِ الْهِنْدِ فِیْ اَعْصَارِنَا سَلْطَنَةٌ اِسْلَامِیَةٌ ذَاتَ شَوْکَةٍ وَقُوَّةٍ عَمَّتِ الْفِتَنُ وَاُوْقِعَتْ عِبَادُ اللّٰهِ فِی الْمِحَنِ. اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَیْهِ رَاجِعُوْنَ." انتهی بلفظه (الآثار المرفوعة

فی الاخبار الموجوعة:۲۴۸، طبع یوسفمی لکھنوی الملحق بامام الکلام)

तर्जुमाः- मुझे अपनी ज़िन्दगी (के खालिक़) की क़सम इन मुल्हिदों का फसाद बरपा करना और उनके छोटे भाइयों को फसाद बरपा करना जो ग़ैर मुक़ल्लिदीन से मशहूर हैं, और जो अपने आप को अहले हदीस कहलाते हैं, और उन्हीं मुहद्दिसीने किराम से क्या तअल्लुक़ और निस्बत ये लोग हिन्दुस्तान के सब शहरों में और हिन्दुस्तान के अलावह दूसरे बाज़ शहरों में फैल चुके हैं, और उनकी वजह से शहरों में खराबी झगड़ा और इनाद वाक़े हो चुका है, सो अल्लाह ही की तरफ शिकवा, आजिज़ी और इल्तिजा है, इस्लाम की इब्तिदा भी गुरबत में हुई और लौटे गा भी ये गुरबत में, सो गुरबा के लिए खुशी हो बेशक ऐसे मुफ्सिद और मुलहिद पहले ज़मानों में और इस्लामी सल्तनत में कई बार ज़ाहिर हुए, लेकिन अकाबिरे मिल्लत और उम्मत के बादशाहों ने उनका मुक़ाबला क़ाते तलवार से किया, और उन पर कांटे और फना करले वाली तलवारें चलाईं, और ऐसे मुल्हिदों की हलाकत से ये फित्ना खत्म हो गया, मगर हमारे ज़माने में जब कि हिन्दुस्तान में दबदबे और कुव्वत वाली इस्लामी सल्तनत ही बाक़ी नहीं रही तो ये फित्ने आम हो गये, और इन फित्नों ने अल्लाह के बन्दों को मशक़्क़तों में मुब्तला कर दिया। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

हज़रत मौलाना लखनवी रहमतुल्लाहि अलैह के इस बयान को ग़ैर मुक़ल्लिदीन हज़रात ग़लत और कम अज़ कम तअस्सुब और गुलू से ताबीर करेंगे, और इस तरह वह अपने आप को और अपने हवारियों के नुफूस को तसल्ली देकर मुतमइन करेंगे, लेकिन मौलाना मरहूम का ये बयान एक खालिस हक़ीक़त है जिस

का इन्कार बग़ैर किसी मुतअस्सिब और ग़ाली के और कोई नहीं करेगा, और न कर सकता है, क्योंकिः

सितम केशी को तेरी कोई पहुँचा है न पहुँचे गा
अगर्चे हो चुके हैं तुझसे पहले फित्ना गर लाखों

(अल-कलामुल मुफीदः182)

सल्तनते मुग़लिया के ज़वाल और हुकूमते इंगलिशीया के उरूज के बाद ग़ैर मुक़ल्लिदीन ने तफरीक़ बयनल मुस्लिमीन का जो फरीज़ा अन्जाम दिया और बिल्खुसूस अहनाफ के साथ जो सुलूक किया तारीख उसे कभी फरामोश नहीं कर सकती, खुले आम अहनाफ पर तबर्रा बाज़ी की जाती थी कि उन की औरतों को बगैर तलाक़ के हलाल और खुद उनको मुस्तहिलुद्दम क़रार देने से भी गुरेज़ नहीं किया जाता था, इन वाक़िआत को तहरीर करते हुए क़लम थर्राता और दिल लरज़ता है, बादिल न ख्वास्ता हम सिर्फ दो वाक़िआत ज़िक्र करते हैं, उन्हीं पर आप बाक़ी हालात को क़यास कर लीजिए।

हकीम अब्दुल हय लखनवी रहमतुल्लाहि अलैह लिखते हैंः

रोज़े जुमा 27 शब (सन् 1312 हि० आज सुबह से दोपहर तक क़यामगाह में रहा, दोपहर को खाना खाकर जामा मस्जिद नमाज़ के वास्ते गया, नमाज़ के बाद चार जगह वाज़ होने लगा, मिम्बर पर मोलवी मुहम्मद अकबर वाज़ कहते हैं, ये बुज़रूग हन्फियों को खूब खाका उड़ाते हैं, दिल खोलकर तबर्रा करते हैं, इस बात पर फख़ करते हैं कि हिदाया पढ़ाने से तौबा की है, फरमाते थे कि आज कौन है कि जिस ने हिदाया पढ़ाने से तौबा करके कलामे मजीद की तालीम शुरू की हो, सब जहन्नम में जाएंगे, और वाज़ में हर हर बात पर अपनी बड़ाई बयान करते हैं, हर आयत को अहले देहली और अपने ऊपर उतारते हैं,

अहले देहली को ज़ालिमीन और मुश्रिकीन से मिलाते हैं, और अपने नईं आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से। अल-अयाज़ु बिल्लाह!

दूसरे साहब मेज़िना के पास भी इसी तौर पर हन्फिया का खाका उड़ा रहे थे, लेकिन कफे लिसान के साथ।

तीसरे साहब दूसरी जानिब मेज़िना के मुहद्दिसीन व मुत्तबिईन सब की खबर ले रहे थे, व क़यामे ताज़ीमी के मना करने पर सख्त सुस्त कह रहे थे।

चौथे साहब हौज़ पर कुछ मुनाजातें और नातिया गज़लें पढ़कर लोगों को अपनी तरफ राग़िब कर रहे थे, अल-ग़रज़ एक हड़बोंग था, इस हड़बोंग पन को देख कर निहायत अफसोस हुआ, खुदा की मर्ज़ी में किसी को दखल नहीं, जब सल्तनत इस्लाम जाती रही तो जिस का जो जी चाहे करे।

(देहली और उसके अतराफः**68, 69**, अब्दुल हय लखनवी)

एक दूसरे मक़ाम पर लिखते हैंः

ये भी किस्सा मोलवी अब्दुल अली साहब ने बया किया कि सब्ज़ी मण्डी यहाँ से बहुत क़रीब है उस मोहल्ले में एक मालवी साहब आकर रहते थे। वह ग़ैर मुक़ल्लिद थे, दिन को मियाँ साहब के मदरसे में रहते थे, रात को वहाँ किराये का मकान था, उस में एक बेवह साहिब भी थीं, उसी मोहल्ले में एक कबीरूस्सिन मियाँ जी भी रहते थे, वह पाबन्दे अवक़ात थे, मोहल्ले के लोग उनकी ताज़ीम करते थे, एक दिन बुढ़िया ने उनसे आकर कहा कि मोलवी साहब की बीवी ने आप को बुलाया है, खड़े खड़े ज़री की ज़री सुन जाइये, मियाँ साहब गए, परदा के पास बीवी साहिबा ने आकर कहा कि आप बाखुदा आदमी हैं, मुझको अल्लाह इस ज़ालिम के पंजे से छुड़ाइये, उन्होंने कहा खैर

है? उसने कहा खैर कहाँ शर है। ये मेरा पीर मैं इसकी मुरीद, मेरे खाविन्द मौजूद हैं, धोके से मुझको निकाल लाया है, मियाँ जी साहब को सुन कर निहायत ही तअज्जुब हुआ, और वाक़ई तअज्जुब की बात है, मैं ने यहाँ तक जब क़िस्सा सुना तो मुझको अजीब हैरत हुई, मोलवी साहब फरमाने लगे कि मियाँ साहब ने उसकी तसल्ली व तशफ्फी की, उस के बाद चले आये, लेकिन मौक़ा के मुन्तज़िर रहे, एक दिन मोलवी साहब से खिलवत में कहा कि मुझ को तन्हाई में आप से राज़ कहना है, बशर्तेकि वह किसी पर ज़ाहिर न होने पाए, आप तक रहे, उन्होंने कहा फरमाईये। मियाँ जी साहब ने कहा कि मैं भी आप का हम मज़हब हूँ मगर हज़रत किया कीजिए इस मोहल्ले के लोग ऐसे सख्त हैं, आप जानते हैं कि ये लोग आदमी मार डालते हैं और किसी को कानों कान खबर नहीं होती, अगर मैं इज़हार करूँ तो खुदा जाने मेरी क्या हालत हो। मोलवी साहब ने कहा खैर ये बहुत मुनासिब है आप अपना मतलब बयान कीजिये। उन्हों ने कहा असल ये है कि इस मोहल्ले में एक औरत से मुझ को कमाल दरजे की उल्फत है, लेकिन उसका खाविन्द मौजूद है, मैं चाहता हूँ कोई ऐसी तदबीर हो कि वह मेरे क़ाबू में आजाए, और शरीअत में भी जायज़ हो, उन्होंने कहा कि ये कोई दुशवार नहीं है, ये लोग यानी हन्फीयुल मज़हब मुस्तहिलुद्दम हैं, उनका माल, माले ग़नीमत है, उनकी बीवियाँ हमारे वास्ते जायज़ हैं, आप क़ाबू में ला सकते हों तो शौक़ से लाइये, उन्होंने कहा बस मुझ को यही चाहिये था, और वहाँ से चले गये, दूसरे वक़्त मोहल्ले के अमायद से ये किस्सा बयान किया, और ये शर्त करली कि उनको जान से न मारें उन लोगों ने उसके खाविन्द को बुला भेजा, जब मोलवी साहब नमाज़ के वास्ते आगे बढ़े तो एक शख्स ने निहायत

दुरूश्ती के साथ उनका हाथ पकड़ कर खींच लिया, और निहायत ही मरम्मत की, और खाविन्द अपनी जोरू को लेकर चला गया, ये वाक़िया हाल ही का है, मुझ को इस के सुनने से औरत को निकाल लाने पर तअज्जुब नहीं हुआ जितना कि हन्फीयों के मुस्तहिल्लुद्दम समझने पर तअज्जुब हुआ, बावजूदेकि इस में कुछ नहीं है, भोपाल में अब्दुल्लाह नाबीना कहता है कि दुनिया में सिर्फ ढाई मुसलमान हैं, मुहम्मद बशीर साहब हन्फीया को मुश्रिक समझते हैं। (देहली और उसके अतराफः69,70, अब्दुल हय लखनवी)

मियाँ साहब के एक शागिर्द मोलवी रहीब बख्श पंजाबी ने तक़लीद के खिलाफ एक किताब लिखी "इशाअत अद्-दीनुल मतीन फी रद्दित तक़लीदि वल मुक़ल्लिदीन" इस किताब में मोलवी साहब ने जी भर कर बुरा कहा और सब्बो शितब की हद पार करदी, इस किताब के चन्द इक़्तिबासात मुलाहिज़ा फरमाइये। मोलवी रहीम बख्श का कहना हैः

"तक़लीदे शख्सी किसी एक इमाम की हक़ीक़त में गुमाराही और शिर्क़ फिल इबादत है"

(सलात खल्फ ग़ैरूल मुक़ल्लिदीनः4,5, बहवाला इशाअत अद्-दीनुल मतीनः5)

मोलवी साहब लिखते हैंः

"फिरक़ा-ए-हन्फीया, मुरजीया, कूफिया बबाइस अक़ीदा गन्दीदा-ए-अरजा के फिरक़े ज़ाल्ला अहले हवा व बिदअत में दाखिल है, और तायफा-ए-नाजीया, महदीया, मुहम्मदीया, अहले सुन्नत वल जमाअत, मा अना अलैहि व असहाबी से खारिज, बस इसी वजह से अकाबिरीन, मुहद्दिसीन, अइम्मा अहले सुन्नत वल जमाअत असहाबे हदीस मिस्ल इमाम मालिक, व इमाम शाफई ने अपनी अपनी मरवीयात व तसनीफात हिदायाते कुतुबे हदीस मिस्ल

सिहाह सित्ता वग़ैरह में अबू हनीफा कूफी रासुल मुरजीया और उस के मुक़ल्लिदीन मुज़िल्लीन फिरक़ा मुरजीया से एक हदीस तक रिवायत नहीं की।"

(सलात खल्फ ग़ैरूल मुक़ल्लिदीनः**8,9,** बहवाला इशाअत अद्-दीनुल मतीनः**44**)

मोलवी साहब के चन्द अशआर तक़लीद और अहले तक़लीद के मुतअल्लिक़ मुलाहिज़ा फरमाएंः

किया है बे हया इस मर्तबा तक़लीद ने उनको
कि हर दम इफ्तिरा करने को हैं तैयार बद मज़हब
मक़ल्लिद इफ्तिरा व किज़ब के हर दम पुजारी हैं
गले में डाल कर तक़लीद का ज़न्नार बद मज़हब
रवा है इफ्तिरा व किज़्ब यारो उनके मज़हब में
भला फिर क्यों न बोलें झूठ ये हर बार बद मज़हब
नश्शा-ए-तक़लीदे शख्सी से मुक़ल्लिद मस्त ला याक़िल
कि बिकते झूठ हैं यारो बिला तकरार ये हर बार बद मज़हब
अज़ल के रोज़ से है झूठ यारो उनकी तीनत में
न बोलेंगे कभी सच फाजिर व बदकार बद मज़हब
तुराब अब हो गया शोहरा ये आलम में बिहम्दिल्लाह
कि मुश्रिक मुक़ल्लिद झूठे बे तकरार बद मज़हब

(सलात खल्फ ग़ैरूल मुक़ल्लिदीनः**10**, बहवाला इशाअत अद्-दीनुल मतीनः**55**)

क़ारिईने किराम! ये सारी किताब इसी क़िस्म के मुतअफ्फिन इबारात से भरी हुई है, जा बजा मुक़ल्लिदीन को कुत्ते और खिन्ज़ीर से तशबीह दी गई है।

तर्के तक़लीद इरतिदाद का सर चश्मा

ग़ैर मुक़ल्लिदों के एक अज़ीम रहनुमा और पेशवा की ही

शहादत मुलाहिज़ा फरमाएं कि किस तरह तर्के तक़लीद को कुफ्र व इरतिदाद का ज़रीया क़रार दे रहे हैं।

मशहूर ग़ैर मुक़ल्लिद आलिम मौलाना मुहम्मद हुसैन साहब बटालवी (मुतवफ्फी 1338 हि०) फरमाते हैं:

"पच्चीस बरस के तजुर्बे से हम को ये बात मालूम हुई कि जो लोग बेइल्मी के साथ मुज्तहिदे मुतलक़ और तक़लीद के तारिक बन जाते हैं, वह आखिर इस्लाम को सलाम कर बैठते हैं, कुफ्र व इरतिदाद और फिस्क़ के असबाब दुनिया में और भी बकस्रत मौजूद हैं, मगर दीनदारों के बेदीन हो जाने के लिए बेइल्मी के साथ तर्के तक़लीद बड़ा भारी सबब है, गिरोह अहले हदीस में जो बे इल्म या कम इल्म होकर तर्के मुतलक़ तक़लीद के मुद्दई हैं वह इन नताईज से डरें, इस गिरोह के अवाम आज़ाद और खुद मुख्तार हो जाते हैं।"

(रिसाला इशाअतुस सुन्नह:2/11, मतबूआ 1888 ई० माखूज़ अज़ खैरूत तन्क़ीद:6)

मशहूर है कि घर का भेदी लंका ढाए। मौलाना मौसूफ ग़ैर मुक़ल्लिद हैं, और उन के खिताब का रूख भी ग़ैर मुक़ल्लिदीन हज़रात ही की तरफ है कि बेइल्म के लिए तर्के तक़लीद कुफ्र व इरतिदाद का ज़रीया है, और जो कुछ फरमया वह बिल्कुल बजा और सही फरमाया है। इस लिए कि जाहिल के लिए वाक़ई तर्के तक़लीद इरतिदाद का खुला दरवाज़ा है, अब्दुल्लाह चकड़ालवी, असलम जीराजपुरी, डाक्टर गुलाम जीलानी बर्क़ (जो हदीस के मुन्कर थे बाद में ताईब हो गऐ) डाक्टर अहमद दीन कालगढ़ी, अल्लामा मशरिक़ी, चौधरी गुलाम अहमद परवेज़, तमन्ना इमादी, और हत्ताके मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादयानी भी इसी तर्के तक़लीद के चोर दरवाज़े से बिल-आखिर इरतिदाद की मन्ज़िल में पहुँचे हैं।

और मौलाना मौदूदी साहब ने भी जिन बाज़ बुनियादी मसाईल में ठोकरें खाई हैं, और जिन बाज़ मसाईल में पूरी मिल्लत इस्लामिया और सल्फे सालिहीन के मद्दे मुक़ाबिल कमर ठोंक कर खड़े हो गये हैं, ये सब तर्के तक़लीद ही का नतीजा है।

(अल-कलामुल मुफीद)

बानी फिरक़ा चकड़ालवीया

ग़ैर मुक़ल्लिद था

मोलवी अब्दुल्लाह चकड़ालवी बानिये फिरक़ा-ए-मुन्किरीने हदीस ग़ैर मुक़ल्लिद था, चुनान्चे मुवर्रिख शेख मुहम्मद इकराम साहब इस फिरक़े का तज़किरा करते हुए लिखते हैं कि इस गिरोह का एक मरकज़ पंजाब में है जहाँ लोग उन्हें चकड़ालवीया कहते हैं, और ये अपने आप को अहले कुरआन का लक़ब देते हैं, इस गिरोह का बानी मोलवी अब्दुल्लाह चकड़ालवी पहले अहले हदीस था। (मौजे कौसरः52, बहवाला तर्के तक़लीद के भयानक नताईजः6)

और इस फिरक़ा ने अहादीस और हज़रात मुहद्दिसीने किराम से जो तमसखुर किया है वह अहले बातिन से मखफी नहीं है।

(अल-कलामुल मुफीदः186)

मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादयानी

(अल-मुतवफ्फी 1908 ई०)

गै़ मुक़ल्लिद था

जो मसाईल ग़ैर मुकल्लिदीन हज़रात के हैं सो उन्हीं पर मिर्ज़ा साहब और उनकी ज़र्रीयत कार बन्द है।

(1).....सूरह फातिहा खलफल इमाम को हम फर्ज़ समझते हैं, ज़रूर पढ़नी चाहिए, मैं भी पढ़ता हूँ, और मसीहे मौऊद अलैहिस्सलाम भी पढ़ते थे। (फतावा अहमदीया अज़ हकीमुल उम्मत:33/1, व मिस्लुहू खुतबा-ए-इलहामिया:131)

और सीरतुल महदी हिस्सा दोम पे०89 में है कि मिर्ज़ा साहब क़िरात फातिहा खल्फल इमाम के क़ायल थे। (मुहस्सलह)

और मलफूज़ात पे० 201/1 में है कि हमारा मज़हब तो यही है कि "لَا صَلٰوةَ اِلَّا بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ" आदमी इमाम के पीछे हो या मुन्फरिद हो हर हालत में उस को चाहिये कि सुरह फातिहा पढ़े।

डाक्टर बशारत अहमद क़ादयानी लिखता है कि मिर्ज़ा साहब इमाम के पीछे फातिहा पढ़ते थे, और सीने पर हाथ बांधा करते थे, लेकिन इमाम के पीछे फातिहा न पढ़ने वालों को मरदूद कभी नहीं क़रार दिया। (मुजद्दिदे आज़म:1333/2)

(1).....मिर्ज़ा साहब आठ तरावीह के क़ाइल थे।

(सीरतुल महदी हिस्सा दोम:13)

(1).....जुराबों पर मसह के क़ायल थे।

(सीरतुल महदी हिस्सा दोम:26)

(1).....जमा बयनस्सलातैन के क़ायल थे।

(नहजुल मुसल्ली:165/1)

और ज़िक्रे हबीब पे० 111 मुवल्लिफा मुहम्मद सादिक़ साहब में है तब हुज़ूर ने अदालत से नमाज़ पढ़ने की इजाज़त चाही और बाहर आकर बरामदे में हर दो नमाज़ें जमा करके पढ़ीं, और मलफूज़ाते अहमदीया पे० 200

जिल्द 1 में जमा बयनस्सलातैन का ज़िक्र है।

(1)·····अकले ज़ब यानी गोह खाने के भी क़ायल थे।

(सीरतुल महदी हिस्सा दोमः122)

(1)·····हाथ सीने पर बांधते थे।

(ज़िक्रे हबीबः24, नहजुल मुसल्लीः74/1, यानी फतावा अहमदीया)

(1)·····हज़रत मोलवी अब्दुल करीम साहब मरहूम हमेशा नमाज़ में बिस्मिल्लाह बिल जह्र पढ़ते थे और आखिरी रकात में बाद रूकू खड़े होकर बआवाज़ बुलन्द दुआएं (कुनूत) करते थे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और दीगर बुजुरगाने दीन ने सालहा साल हज़रत मोलवी अब्दुल करीम साहब रह० की इक़्तिदा में नमाज़ें पढ़ीं।

(ज़िक्रे हबीबः24)

(1)·····हज़रत मोलवी अब्दुल करीम साहब मरहूम अपनी क़िरात में हमेशा बिस्मिल्लाह सूरह फातिहा से पहले बिल जह्र पढ़ते थे और फजर और मग़रिब और इशा की आखिरी रकात में बाद रूकू उमूमन बुलन्द आवाज़ से बाज़ दुआएं पढ़ा करते थे। (ज़िक्रे हबीबः23)

(1)·····उर्फ में जिसको सफर कहते हैं ख्वाह वह दो तीन कोस ही हो उस में क़स्र और सफर के मसाईल पर अमल करे। (मलफूज़ाते अहमदीयाः199/1)

(1)·····ये बिदअत है हदीस शरीफ में किसी जगह इस का ज़िक्र नहीं आया कि नमाज़ से सलाम फेरने के बाद दुआ की जाये। (ज़िक्रे हबीबः302)

क़ारिईने किराम! ये जुमला वह मसाईल हैं जिन पर ग़ैर मुक़ल्लिदीन हज़रात का अमल है और यही मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादयानी के मामूलात थे।

हकीम नूरूद्दीन भी ग़ैर मुक़ल्लिद था।

यही मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादयानी का खलीफा-ए-अव्वल हकीम नूरूद्दीन भी ग़ैर मुक़ल्लिद था, चुनान्चे मुसन्निफ तारीखे अहमदीयत लिखते हैं कि हरमैन शरीफैन से वापसी पर नूरूद्दीन ने वहाबियत इख्तियार की और तर्के तक़लीद पर वाज़ किये, और अद्मे जवाज़ तक़लीद पर किताबें तस्नीफ कीं, बुहैरह में हैजाने अज़ीम बपा हो गया। (तारीखे अहमदीयतः६९/४, बहवाला तर्के तक़लीद के भयानक नताइज, मौलाना बशीर अहमद क़ादरी) (अल-कलामुल मुफीदः187)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

ज़रूरी वज़ाहत

نَحْمَدُہٗ وَنُصَلِّی عَلٰی رَسُوْلِہِ الْکَرِیْمِ. اَمَّا بَعْدُ!

वह अहले हदीस हज़रात जो अपनी इल्मी तहक़ीक़ की बुन्याद पर अमानत व दयानत के साथ हदीस शरीफ पर अमल करते हैं, और किसी मखसूस इमाम की तक़लीद नहीं करते, मगर हज़रात अइम्मा रहिमा हुमुल्लाहु तआला का और उन के मुक़ल्लिदीन का पूरा ऐहतराम करते हैं, और उन को हक़ पर समझते हैं, उनकी तन्क़ीस नहीं करते, ऐसे अहले हदीस हज़रात का हम पूरा ऐहतराम करते हैं, और उनसे हमारा कोई इख्तिलाफ नहीं।

अल्बत्ता ग़ैर मुक़ल्लिदी का वह तब्क़ा जो अपने आप को अहले हदीस कहलाता है। और हज़रात अइम्मा रहिमा हुमुल्लाह तआला बिलखुसूस हज़रत इमाम अबू हनीफा रह० की शान में बेअदबी व गुस्ताखी करता है, और सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन को भी बिदअती क़रार देता है, मसलन तरावीह की बीस रकात को हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की जारी करदा बिदअत और जुमा की अज़ाने अव्वल को हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु की ईजाद करदा बिदअत क़रार देता है, तो गोया ये दोनों हज़रात भी बिदअत ईजाद करने वाले हुए, और वह हज़रात सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन जिन्होंने इस को इख्तियार किया वह सब भी नऊज़ु बिल्लाह बिदअती हुए।

तक़लीद को शिर्क़ क़रार देकर तमाम मुक़ल्लिदीन हज़रात को मुश्रिक और जहन्नमी क़रार देता है, और अवाम के सामने कहा जाता है कि हन्फियों की नमाज़ नहीं होती, इस लिए वह जहन्नमी हैं, हिन्दुस्तानी पाकिस्तानी इन ग़ैर मुक़ल्लिदीन ने अरब जाकर अपना असर व रूसूख जमाकर अपने आपको सल्फी ज़ाहिर कर के अरब उलमा, अइम्मा और शुयूख को उलमा-ए-देवबन्द से बदगुमान करने की कोशिश की और अपने नापाक अज़ाईम और फासिद दुन्यवी अग़राज़ और माली मन्फअत के हुसूल की खातिर उलमा-ए-देवबन्द की तरफ ग़लत अक़ाईद और उन बिदआत और खुराफात की निस्बत की जिन से वह बेज़ार ही नहीं बल्कि इन ग़लत अक़ाईद और बिदआत की बीख कुनी करते रहे हैं, और उलमा-ए-देवबन्द की ज़िन्दगी के मक़ासिद में से अशाअते दीन के साथ साथ ग़लत अक़ाईद व बिदआत की तरदीद व बीख कुनी अज़ीम मक़सद है, उनके रद में किताबें लिखी हैं, और उन की तरदीद के लिए बड़ी कुरबानियाँ दी हैं।

और उनकी मसाई से अलहम्दु लिल्लाह लाखों लोगों की इस्लाह हुई है, और हो रही है, इस ग़लत इन्तिसाब और प्रोपैगन्डा की वजह से "अल-देवबन्दीया" "अल-तबलीगीया" वग़ैरह किताबें उलमा-ए-देवबन्द के खिलाफ लिखी गई हैं।

ग़ैर मुक़ल्लिदीन का ये तब्क़ा ही हमारा मुखातब है और इख्तिलाफ बयनल मुस्लिमीन का सबब बना हुआ है, यही तब्क़ा अंग्रेज़ का खुद काश्ता पौदा है, और अंग्रेज़ के मन्शा के मुताबिक़ मुसलमानों में इफ्तिराक़ व इन्तिशार फैला रहा है, और इसी को दीन की अज़ीम खिदमत बल्कि जिहादे अज़ीम समझे हुए है।

इस तब्क़े का अपने आप को सल्फी कहना और अपने आप को अहले हदीस कहना सरासर धोका है, इस तब्क़े को

हदीस से कुछ सरोकार नहीं, दोचार हदीसें याद करके हदीस हदीस की रट लगाते हैं, और पूरी ज़िन्दगी को हदीस से कुछ वास्ता नहीं। सूरत, शक्ल, लिबास, इबादात, मुआमलात, मुआशरत, कुछ भी हदीस शरीफ के मुताबिक़ नहीं, न इस्लामी अखलाक़ से कोई वास्ता।

अपने मस्लक के खिलाफ कैसी ही सही हदीस मौजूद हो उस पर अमल नहीं करेंगे, जैसे दो हाथ से मुसाफहा करना, सही हदीस से साबित है, बुखारी शरीफ में मौजूद है, हज़रत इमाम बुखारी रह० ने इस हदीस से दो हाथ से मुसाफहा करना साबित किया है, और दीगर मुहद्दिसीन का अमल भी ज़िक्र किया है।

मगर ये लोग कभी इस पर अमल नहीं करेंगे, ये हदीस की मुखालिफत और हदीस से इनाद नहीं तो और क्या है?

एक मजलिस की तीन तलाक़ का वाक़े होना बुखारी शरीफ में मौजूद है, मगर बराबर उसके खिलाफ फतवा देंगे।

इसी तरह दूसरी चीज़ों का भी हाल है, फिर अपने आप को अहले हदीस कहना कहाँ तक सही हो सकता है?

ये फिरक़ा हदीस की दोस्ती के नाम पर हदीस दुश्मनी का काम अन्जाम दे रहा है, ये इस ज़माने का अज़ीम फित्ना है।

फिक़्ह

जो कुरआन व हदीस ही से मुस्तन्बत और उसी का खुलासा है बल्कि इत्र है, उसकी मुखालिफत करना क्या कुरआन व हदीस की मुखालिफत नहीं?

फिक़्ह हन्फी में तमाम अहादीस को जमा करने की कोशिश की जाती है कि कोई हदीस भी अमल से न रह जाए, और ज़ईफ से ज़ईफ हदीस पर भी अमल की कोशिश की जाती है, इसकी

मुखालिफत करना क्या हदीस से दुश्मनी नहीं? जिस के दिल में हदीस की कुछ भी क़द्र व मुहब्बत हो क्या वह फिक़्ह बिलखुसूस फिक़्ह हन्फी की मुखालिफत कर सकता है? हरगिज़ नहीं।

जाहिल नासमझ बे पढ़े लिखे नौजवान लड़के जिन को कुरआने करीम व हदीस शरीफ का कुछ इल्म नहीं, किसी मुस्तनद दर्सगाह में रह कर बाक़ायदा इल्मे दीन की तहसीन नहीं की, सिर्फ उर्दू के दो चार रिसाले उनका मुन्तहा-ए-इल्म है, हज़रात उलमा, हज़रात मुहद्दिसीन व फुक़्हा, जिबाले इल्म, खुद्दामे दीन, हज़रात अइम्मा रहिमा हुमुल्लाहु तआला और उस से भी बढ़ कर हज़रात सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन की शान में गुस्ताखियाँ करते हैं। فالی الله المشتکی والله المستعان

अल्लाह तआला शानहू दीन का सही फहम और दीन की खिदमत का सही जज़्बा और कुरआन व हदीस की सही खिदमत का ज़ौक़े सलीम अता फरमाए, और कज रवी, कज फहमी से पूरी पूरी हिफाज़त फरमाए। उम्मत में इन्तिशार फैलाने के बजाय उम्मत में इत्तिहाद और दावत व तबलीग़ पर जान खपाने की तौफीक़ अता फरमाए। आमीन!

اَللّٰهُمَّ اَرِنَا الْحَقَّ حَقًّا وَارْزُقْنَا اتِّبَاعَهُ وَاَرِنَا الْبَاطِلَ بَاطِلاً وَارْزُقْنَا اجْتِنَابَهُ
رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا اِنَّکَ اَنْتَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ وَتُبْ عَلَیْنَا اِنَّکَ اَنْتَ
التَّوَّابُ الرَّحِیْمُ. بِحُرْمَةِ حَبِیْبِکَ سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
وَصَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی علیه و عَلٰی اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ
اَجْمَعِیْنَ اِلٰی یَوْمِ الدِّیْنِ. آمِیْن

मुहम्मद फारूक़ गुफिरा लहू

28 रमज़ानुल मुबारक बरोज़ दो शन्बा सन् 1424 हि०